

उद्बोधन

भजन-गज़ल-प्रवाह

-शिवोम् तीर्थ

उद्धोधन

स्वामी शिवोम् तीर्थ



प्रकाशक

श्री नारायण कुटी संन्यास आश्रम,

देवास (म.प्र.) ४५५ ००१

पुस्तकें निम्न स्थानों से प्राप्त की जा सकती हैं -

- श्री नारायण कुटी संन्यास आश्रम, देवास (म.प्र.)
- स्वामी शिवोम् तीर्थ आश्रम मुकजी नगर,
रायसेन (म. प्र.) के सौजन्य से प्रकाशित
- स्वामी श्री विष्णु तीर्थ साधना सेवा न्या
ओल्ड पलासिया, जोबट कोठी, इन्दौर
- स्वामी शिवोम् तीर्थ कुण्डलिनी योग सेन्टर
दुर्गा मंदिर, जिलाधीश परिसर, छिन्दवाडा (म. प्र.)
- स्वामी शिवोम् तीर्थ महायोग आश्रम
खारीघाट (ग्वारी घाट) जबलपुर (म.प्र.)
- देवात्म शक्ति सोसाइटी
७४, नवाली गाँव, पोस्ट दहिसर
(व्हाया मुंब्रा) मुंब्रा पनवेल मार्ग, जिला ठाणे (महाराष्ट्र)
- योग श्री पीठ आश्रम शिवानंद नगर, मुनि की रेती ऋषिकेश (उ. प्र.)
- स्वामी विष्णुतीर्थ ज्ञान साधन आश्रम गन्नौर (हरियाणा)
- Swami Shivom Tirth Asharam

1238RT. 97

Sparrow Bush N. Y. 12780, U.S.A.

- नीलकंठ ग्राफिक

८१, आनन्द पूरा, नावोल्टी चौराहा, देवास (म.प्र.) : ७८३५६

- मृगनयनी प्रिंटिंग प्रेस

८६ महाराणी लक्ष्मी बाई मार्ग देवास : ७४२७१

मूल्य – रु.20/-

श्री गुरुवे: नमः

भूमिका

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद श्री श्री १००८ स्वामी शिवोम तीर्थ जी महाराज द्वारा विरचित भजन संग्रह जिसे स्वयं महाराज जी ने ही " उद्धोधन" नाम से अभिहित किया है आपके हाथों में मंगल कामना सहित सौंपते हुए हार्दिक आनन्द का अनुभव हो रहा है।

श्री महाराज के इस भजन संग्रह में स्वात्मानुभूति परक २२४ भजन संग्रहीत हैं; इनका विभाजन निम्न प्रकार किया गया है।

१. मीरा गीत	कुल ६० भजन (मीरा भक्ति दर्शन पर आधारित)
२. आनन्द	२४ भजन
३. विनय वन्दना	१५ भजन
४. विरह	४६ भजन
५. सिखावन	७६ भजन

इन भजनों को विभिन्न राग-रागिनियों में बांधा गया है, जिससे श्री महाराज की भगवान के प्रति अगाध निष्ठा, सरसता, आध्यात्मिक रागात्मक भावना तथा अन्तर विश्लेषण की मधुर वृत्तियों का दिग्दर्शन सहज ही हो जाता है। कुछ प्रमुख राग निम्न प्रकार है :- कल्याण, जोगिया, गौड़ सारंग, भीम पलाश, सिंध भैरवी देसी, मिश्र सारंग, मिश्र शिवरंजनी, बिलावल दरबारी, कांगड़ा, यमन, खमाच, मधुमन्ति मिश्र काफी, धानी, माखा, पीलू, अहीर, भैरव, केदार, कामोद, भूप, जय जयवन्ति आदि।

इन भजनों को आद्योपान्त पढ़ने तथा उन पर गहराई से विचार करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ये भजन, जिन्हें कि श्री महाराज ने कुण्डलनी पराशक्ति की गहरी अनुभूति से आप्लावित कर भौतिक वातावरण से पूर्णतः निस्प्रह आत्मानन्द के स्वर लहरियों से मुखरित कर हमें वरदान के रूप में दिया है, ये इतने आनन्द परक तथा रसात्मक हैं कि इन्हें गाते ही मन एक दम एकाग्र होकर चित्त की समग्र चंचलता तथा इन्द्रियों का बहिर्गमन एक साथ अवरुद्ध हो जाता है तथा मन आनंदित हो उन लहरियों में लहराने लगता है जिसे हम ध्यानावस्था की अवस्था कह सकते हैं। इन भजनों को सुनकर जीवात्मा विभिन्न प्रकार के आन्तरिक अनुभूतियों का स्वयं में दर्शन कर प्रफुल्लित हो जाती है।

भक्ति परक विभिन्न ग्रंथों से यह ग्रंथ अनूठा ही कहा जायेगा क्योंकि इसमें आत्मशुद्धि एवं आत्मकल्याण तथा आलौकिक आनन्द की ऐसी त्रिवेणी बह रही है

जिसमें अवगाहन कर आत्मशुद्धि, जो परिपक्व भक्ति की प्रथम सीढ़ी है, सहज ही हो जाती है। भक्ति का तात्पर्य है अज्ञान अंधकार से पार जाना एवं आत्म शुद्धि। भक्ति भी ऐसी जिसमें किसी प्रकार की कामना न हो, जो निरंतर नित्य अबाध गति से बहती रहती है ऐसी भक्ति से ही हृदय में आनन्द स्वरूप परमात्मा की उपलब्धि होती है। भगवान की लीला कथाओं के प्रति यदि अनुराग न हो तो वह निरर्थक ही श्रम कहा जायेगा। भक्ति, धर्म एवं ज्ञान तीनों का प्रतिफल मोक्ष है न कि अर्थ प्राप्ति। अर्थ केवल धर्म के लिए है भोग विलास अर्थ का फल कभी नहीं माना गया। भोग विलास का फल इन्द्रियों को तृप्त करना नहीं, उसका प्रयोजन है केवल जीवन निर्वाह। संतति की निरंतरता। जीवन का फल तो तत्वजिज्ञासा है और आवागमन से निरुद्धता। इस मानव शरीर को पाकर जिसने स्वयं को तत्वजिज्ञासा में नहीं लगाया उसका इस संसार में जीवन धारण करना निरर्थक हैं गोस्वामी जी ने ठीक ही कहा है -

“इहि तनु कर फल विषय न भाई”

इन भजनों में भी जीवन के इसी तत्व को बार-बार हमारे समक्ष रखकर श्री महाराज जी ने भक्ति एवं धर्म का सरल मार्ग हमारे समक्ष प्रशस्त किया है। जिस प्रकार गीता ज्ञान का अथाह समुद्र है जिसमें ज्ञान का अक्षय भण्डार भरा है उसी प्रकार यह भजन संग्रह ज्ञान, भक्ति और साधना का अगाध समुद्र है। इसमें अनन्त भावों, विचार, रत्नों और विरक्ति का अपार भण्डार भरा पड़ा है। जो जिज्ञासु इस भजन सागर में जितनी गहरी डुबकी लगायेगा उसे उतने ही नित्य नूतन, विलक्षण अमूल्य रत्नों की उपलब्धि होती रहेगी।

कहा गया है कि भक्ति का अवसान ज्ञान में होता है और ज्ञान का समाधि में तथा निर्विकल्प समाधि में सभी कुछ लय होकर मोक्ष का श्रेष्ठ द्वार खुल जाता है, अतः यह निर्विवाद सिद्ध है कि जब तक भगवान नाम स्मरण, कीर्तन, लीला, गान, जिन्हें भक्ति के अन्तर्गत ही माना गया है, न हो तब तक आत्मशोधन नहीं होता और न ही चित्त स्थिर होकर एकाग्रता ग्रहण करता है। बाल्मीक जी ने भी श्रीराम की लीलाओं का वर्णन कर रामायण में इसी मत का प्रतिपादन किया है।

भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में भक्ति का विशेष महत्व प्रतिपादित करते कहा है -

योगिनामपि सर्वेषां मद्गते नान्तरात्मना ॥

श्रद्धावान भजते यो मां समे युक्त तमो मतः ॥ (6/47)

इसी प्रकार योगियों को भक्ति का उपदेश देते हुए कहते हैं :

अनन्यचेताः सततं योमां स्मृति नित्यशः ।

तस्याहंसुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥ (8/14)

इस प्रकार हम देखते हैं कि वे ही योगी श्रेष्ठ हैं जो नित्य अनन्य भाव से भगवान का नाम स्मरण करते रहते हैं और उन्हें ही भगवान की भक्ति प्राप्त होती है। भक्ति की प्राप्ति सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है। श्रीमद् भागवत के ग्यारहवें स्कंद के चौदहवें अध्याय में उद्धव जी को भक्ति का उपदेश करते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं ।

निरपेक्षं मुनिं शान्तं निर्वैरं समदर्शनम् ।

अनुब्रजाम्य अहं नित्य पूजयेतऽङ्गिरेणुभिः । (11/14/16)

भक्ति वह रस है जिसे यदि शुद्ध प्रेम रस कहा जाये तो अत्युक्ति नहीं होगी । वास्तव में -

“प्रेम ही भक्ति है त्याग ही आराधना

तन्मयता ही अनुभूति है विरह ही साधना ” ॥

नारद जी ने भी अपने भक्ति सूत्र में प्रेमा भक्ति को ही श्रेष्ठ माना है, “सा भक्ति, प्रेमरूपा” ।

भक्ति भावना से जब हमारी पराशक्ति जागृत होकर उच्चस्तरीय मार्गों पर ले चलने के लिये प्रवृत्त होती है तो उस समय विभिन्न प्रकार की आन्तरिक एवं बाह्य क्रियायें प्रस्फुटित होती हैं श्रीमद् भागवत में भी इनका उल्लेख निम्न श्लोक द्वारा किया गया है -

**वाग्गद्गदा दृष्वते यस्य चित्तं
रूढत्यमीक्षणं हसति क्वाचिच्च
निर्लज्ज उद्गायति नृत्यते च
मद्भक्ति युक्तो भुवनं पुनाति ॥**

इस प्रकार जब अर्न्तभक्ति जागृत होती है तब भक्त का हृदय इतना द्रविभूत हो जाता है कि वह कभी हंसता है, कभी रोता है, कभी नाचता है, कभी गाता है और अपनी इन विभिन्न क्रियाओं के द्वारा वह सारे संसार को पवित्र कर देता है। इन भजनों में भी श्रीमद् भागवत के इन्ही भावों का अनुलेपन इस प्रकार किया गया है कि इन्हें गाते - गाते जिज्ञासु की यही दशा हो जाती है।

मैंने महाराज जी को इन भजनों को इकतारे पर तन्मयतापूर्वक गाते हुये सुना है। उसकी मधुर ध्वनि जैसे ही कर्ण रन्ध्रों में प्रवेश करती है वैसे ही इतनी तन्मयता आ जाती है कि जिज्ञासु अपने आस पास के वातावरण को भूलकर एक विचित्र अनिर्वचनीय स्थिति में एकाएक पहुंच जाता है।

शास्त्रों में कर्म और ज्ञान के अतिरिक्त जो उपासना और साधना का प्रकरण आया है, वह साधना इन्हीं दो निष्ठाओं के अन्तर्गत है। जब व्यक्ति स्वयं को परमात्मा से अभिन्न मानकर उपासना या साधना करता है, तब वह सांख्य निष्ठा के अन्तर्गत मानी जाती है और जब भेद दृष्टि से साधना की जाती है तब वह योग निष्ठा के अन्तर्गत मानी जाती है।

महाराज जी के भजनों की व्यापि सांख्य निष्ठा की साधना से इतनी अभिभूत है कि उन्हें सुनकर बुद्धि और ज्ञान दोनों अर्न्तभूत होकर हमें अपने इष्ट से एकीभूत कर उस परमानन्द की अनुभूति करा देते हैं जो वर्षों साधना करने पर भी योगियों तक को सुलभ नहीं हो पाती।

इन भजनो में मीरा दर्शन पर आधृत भजन इसी कोटि में आते हैं। इनमें मीरा की सी तडप, एकाग्रता, विरहालाप, प्रीतम के साथ एकाकार होने की छटपटाहट के साथ-साथ अनन्यता भी कूट-कूटकर भरी है। इन भजनों में श्री महाराज के अर्न्तमन की पुकार, आत्मा-परमात्मा का मिलन, उनकी साधना मानों साकार हो उठी है। ये भजन इतने सरल एवं सुगम हैं कि इन्हें आसानी से विभिन्न रागों में न केवल गाया जा सकता है बल्कि अंतरात्मा में इनकी तरलता की अनुभूति भी की जा सकती है। इनके भाव जिनमें विरह वेदना, प्रियतम दर्शन की अकुलाहट है वह केवल अनुभूति का विषय है न कि शब्दों का विलास। सूरदास के शब्दों में उसे इस प्रकार कह सकते हैं-

अविगत गति कछु कहत न आवे ।
ज्यों गुंगे मीठे फल को रस अन्तर्गत ही भावे
परम स्वाद सबहिं सु निरन्तर अमित तोष उपजावे
मन वानी को अगम अगोचर सो जाने जो पावे ॥

इस आनन्द रस का पान वही कर सकता है जिसे उसका आराध्य स्वयं ही उसे करा दे । तुलसीदास जी के शब्दों में

सोई जानए जिहि देहु जनाई ।

जानत तुम्हें तुमहि द्रुयि जाही ॥

इस प्रकार मीरा की भक्ति एकाग्रता एवं आत्मदर्शन सभी कुछ इन भजनों में हमें अनायास ही मिल जाता है । श्री महाराज द्वारा रचित ये भजन मीरा के इह लौकिक एवं पारलौकिक दर्शन की सुगम एवं उच्चकोटि की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं । मीरा के दार्शनिक तत्व को समझने के लिए महाराजश्री ने अपने भजन से पूर्व मीरा की उस पंक्ति को भी दर्शाया है जिस पर उनके दार्शनिक तत्वों का निरूपण किया गया है। इनमें इतनी तन्मयता है जितनी कृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनके विरह में राधा में व्याप्त हो गयी थी । इस कारण राधा में एवं मीरा में भी द्वैत भावना का लोप हो गया है। कहा भी है

तन्मयता ही आज बन गई प्यारी राधा ।

विरह बना आराध्य द्वैत क्या कैसी बाधा ॥

यह तन्मयता ही ऐसी है कि जहां द्वैत है और न कोई कष्ट - जीवात्मा का परब्रम्हा में एकाकार होने पर ही यह स्थिति संभव है। इन भजनों में महाराजश्री ने स्वयं को नारी में ही रखना अधिक श्रेयस्कर माना है । उनकी दृष्टि में पुरुष (परब्रम्ह) केवल एक ही है, शेष सब नारियाँ हैं । यह संपूर्ण सृष्टि परमात्मा की आत्मा का ही प्रसार है । जीवात्मा नारी का ही प्रतीक है । कबीर, मीरा, प्रवृत्त भक्तों ने भी स्वयं को नारी ही माना है । मीरा ने जब वृन्दावन में विट्ठल जी से मिलने की इच्छा व्यक्त की तो उन्होंने कहला भेजा कि वह किसी नारी से नहीं मिलते । इस पर मीरा ने एक पत्र द्वारा लिखकर भेजा कि संपूर्ण विश्व में तो पुरुष केवल परमात्मा है, यह दूसरा पुरुष (परमात्मा) कहां से पैदा हो गया । इन पंक्तियों को पढ़ते ही उनको अपनी गलती का एहसास हो गया और वे स्वयं उनसे मिलने चले आए । कबीर कहते हैं-

राम मेरे पियु मैं राम की बहुरिया
मीरा ने तो स्पष्ट ही घोषणा कर दी,
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई
श्री महाराज ने भी मीरा और कबीर की भांति स्वयं को प्रेम
दीवानी मानते हुये कहा है कि

क्या मैं भी मीरा की भांति प्रेम दीवानी हो पाऊँगी ।

भर जायेगा दर्द से हृदय प्रेम विरह में खो पाऊँगी ॥

जब मन कृष्ण रंग में रंग जाता है तब संसार के सभी रंग फीके पड़ते,
पूर्णतः विलीन हो जाते, संसार के विषय छूट जाते हैं, सामने रह जाता है केवल
इष्ट । श्री महाराज की इन पंक्तियों में यही भाव व्यक्त किया गया है ।

मीरा लागा रंग प्रभु का जग के रंग सभी ही छूटे

वृत्ति एक हरि संग लागी जग के विषय सभी ही छूटे

यह इष्ट के साथ तन्मयता तथा अनन्यता का भाव है, जो हमें मायायुक्त भौतिक
आवरण से अलग कर सीधा परमेश्वर की ओर ले जाने का पथ प्रदर्शन करता है ।

इन भजनों में भगवान श्रीकृष्ण की मुरली का ब्रजमंडल पर प्रभाव,
गोपियों का विरह, सगुण भक्ति, प्रभु के प्रति अनुराग, संसार की असारता आदि
का विशद विवेचन किया गया है । साथ ही श्री महाराज ने कहा है कि यह मनुष्य
शरीर हमें अपना स्वभाव सुधारने के लिये मिला है, तात्पर्य यह है कि

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः

मनः षष्ठानि इन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ।

अर्थात् भगवान कहते हैं यह जीवात्मा मेरा ही अंश है और मन सहित इन्द्रियां
प्रकृति में निहित हैं। तात्पर्य यह है मेरा अंश जीवात्मा मेरे में स्थित है और प्रकृति
का अंश “ मनः षष्ठानि इन्द्रियाणि ” समस्त प्रकृति में स्थित है । श्री महाराज जी
का सीधा तात्पर्य यह है कि है तो यह परमात्मा का अंश पर इसने पकड़ा है
विजातीय प्रकृति की परिस्थितियों को । यही बंधन का कारण है यदि यह आत्मा
विजातीय प्रकृति की वस्तुओं को त्याग दे तो आज ही मुक्त है । मुक्त उसी से हो
सकते हैं जो चीज हमारी नहीं है।

इन भजनों में सत्संग के प्रभाव की जो आनंदमयी व्याख्या की गयी है वह साधना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। साधना शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है परन्तु वास्तविक साधन तो उसे ही समझना चाहिए जो परमात्मा की प्राप्ति कराने वाला हो।

इसके लिए श्री महाराज ने आदि से लेकर अंत तक प्रेम की ही सत्ता को सर्वश्रेष्ठ माना है। भव ताप से संतप्त प्राणी भगवत प्रेम की पावन मंदाकिनी में निमज्जन करके ही पूर्ण शान्ति प्राप्त करता है। यही वो परम रस है जिसे पीकर मनुष्य सिद्ध अमर और तृप्त हो जाता है। जिस प्रेम के प्राप्त होने पर मनुष्य न तो किसी वस्तु की इच्छा करता है न शोक करता है न द्वेष करता है न किसी भी वस्तु आसक्त होता है और न विषय भोगों की प्राप्ति में उसे आनंद ही होता है। नारद भक्ति सूत्र भी यही मत प्रतिपादित करता है

यल्लब्ध्वा पुमान् सिद्धो भवति

अमृतो भवति, तृप्तो भवति। ना.भ.सू. - ४

तथा

यत्प्राप्तं न किञ्चित् वाञ्छति

न शोचति, न द्वेष्टि न रमते नोत्साही भवति। ना.भ.सू. - ५

प्रेम साधन भी है और साध्य भी। परमात्मा की ही भाँति प्रेम का स्वरूप भी अनिर्वचनीय है। गुंगे के स्वाद की तरह यह वाणी का विषय नहीं होता इसलिये प्रेम का स्वरूप अलौकिक बताया गया है क्योंकि वह लोक से सदा विलक्षण है, मानस में भी कहा है

साधनं सिद्धिं राम पगं नेह।- तुलसी

तथा नारद जी ने भी

अनिर्वचनीयं प्रेम स्वरूपं मूकास्वादनवत्।

- ना. भ. सू. - ५१-५२

हेतु या कामना ही प्रेम का दूषण है। निर्हेतुक अथवा निष्काम प्रेम में गंध नहीं होती इसलिए वह शुद्ध है। अपने अभिन्न प्रियतम परमात्मा श्रीकृष्ण के अलावा और कोई इसका लक्ष्य नहीं इसलिये वह अनन्यतम है। आनन्द शीर्षक भजनों के अन्तर्गत इसी प्रकार के प्रेम का हमें दिग्दर्शन कराया गया है और साथ ही कुण्डलनी शक्ति की विभिन्न क्रियाओं का स्वाभाविक वर्णन किया गया है।

विनय वंदना में अनहद नाद संसार में माया की प्रबलता, माँ जगदम्बा की स्तुति, शंकर -विनय आदि के पद अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विरह गीतों में विरह वेदना, इष्ट से अपने नेत्रों में ही बसने की प्रार्थना, भ्रम के कारण मन की विकलता, रुठे हुये प्रियतम को मनाना और भगवान को अपनी विपत्ति सुनाना आदि ऐसे भाव हैं, जिन्हें सुनकर हृदय आन्नदमग्न हो जाता है। सिखावन के पदों में मन को चेतावनी देते हुए श्री महाराज कहते हैं कि मन ही भगवान के भजन में बाधक है।

यथा:

मन चंचल हैं मति है खोटी कैसे सिमिरन होवे

यह अधैर्य प्राणी सांसारिक भोगों में फसां हुआ इधर-उधर भागता है अतः वे हमें सचेत करते हुये कहते हैं

मनवा धीर धरत क्यों नाहीं

चंचल होकर जग में भटके देखत अंतर नाही

उन्होंने कर्म को भी मनुष्य की साधना में बाधक माना है साथ ही उन्होंने यह भी प्रतिपादित किया है कि कर्म को भोगे बिना संसार से छुटकारा नहीं मिल सकता

जीव पड़ा कर्मन के माहीं

बिना भोगे छुटकारा नाहीं

मिलत भी मुक्ति नाही

श्री महाराज आगे यह सलाह भी देते हैं कि भगवान से कुछ छिपाना भी मूर्खता है क्योंकि

मन में छुपा जो कुछ भी, भगवान जानता है

है जीव को पता न मन की ही मानता है

जीव संसार या प्रकृति के बंधन में होने के कारण सांसारिक विषयों में ही, जो अनित्य हैं, जड़ हैं, सब कुछ मानकर चलने का आदि हो गया है और चैतन्य परमात्मा को भूल गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह " उद्धोधन " भजन एक ऐसा सुंदर बगीचा है जिसमें भांति - भांति के रंगों के सुगंधित पुष्प खिले हुये हैं। हर भजन भव भूमि पर उगा हुआ आध्यात्मिकता के रंग से रंजित, प्रेम की सुगंध लिये अपने आप में अनूठा आकर्षक है एवं अपने गर्भ में साधन तथा मोक्ष की गरिमा छिपाये हुये है। श्री महाराज ने हमको कृतार्थ करने के लिये ही मानों यह सब कुछ हमें दिया है। यह

एक सच्चे योगी का श्रेष्ठतम वरदान है। ये भजन हमारे आत्मज्ञान के लिए प्रकाश पुञ्ज लिये हुये हमारे समक्ष प्रस्तुत हैं। सुख और दुख जो कुछ है वह सब हमारे अंदर है बाहर कुछ भी नहीं है। हमारी जैसी दृष्टि होगी वैसी सृष्टि होगी। योग वशिष्ठ में कहा है

या दृष्टिः सा सृष्टिः :

अर्थात् जैसा जगत् हम देखते हैं वैसे ही जगत् की अनुभूति हमें होती है। जब हम सात्विक राजसिक और तामसिक तीनों सुखों से उपर उठेंगे तभी हमें शांति मिलेगी तभी पूर्णसुख भी होगा। योगी स्वयं की सुख की कामना से नहीं वरन् दूसरों के उपकार के लिए ही अपना जीवन समर्पित करता है -

यथा-

योगी लोकोपकाराय भोगान् भुङ्क्ते कांक्षया ।

अनुग्रहं जनान् सर्वान्, क्रीडन् पृथिवीतले ।

हमें आशा ही नहीं दृढ़ विश्वास है कि सभी साधक गण मन, बुद्धि, चित्त की शुद्धता के लिए एवं अपने अहंकार (मैं) को क्षय करने के लिये इन भजनों को पढ़कर आत्मानुभूति का अनुभव करेंगे और जड़त्व को धीरे - धीरे विलीन करते हुये चैतन्य में प्रवेश करने का अनुपम आनन्द प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। इसी आशा से

प्रो. एम. के. मिश्र

४६५/१५ शिवोम नगर

रायसेन

अनुक्रमणिका

मीरा गीत

क्रमांक	रचना	पृष्ठ क्र.
१.	इन नयनन का काय करूं मैं	१
२.	अब ना लाज कोई मर्यादा	१
३.	मीरा लागा रंग प्रभु का	२
४.	काहे अटक जगत की मोहे	२
५.	वैद सावरिया कब आएगा	३
६.	क्या मैं भी मीरा कि भान्ति	३
७.	कब तक चाले चाल कुचाल..	४
८.	मीरा को प्रभु चाकर राखा	४
९.	मीरा गोपी कृष्ण दिवानी	५
१०.	जब तक दर्शन ना कर पाऊँ ...	५
११.	मीरा चाली पिया को खोजन	६
१२.	सावरे के रंग में रंग गई मीरा	६
१३.	हिरदय जब ही कृष्णहि दीना	७
१४.	प्रेम बाण नयनन आई लगा	७
१५.	मीरा नमन करे गोपिन को	८
१६.	जोगिया से प्रीत करे न कोई ..	८
१७.	पाती लिखूं प्रभु हौं कैसे...	९
१८.	जा. मन पीरा प्रेम हो लागी	९
१९.	क्यों बिसर गया तू राम को	१०
२०.	साजन दिलवर देख ज़रा तू	१०
२१.	छोड़ न जइयों बालमा	११
२२.	एक भरोसो पकड़यो यारों	११
२३.	मीरा की यह सिख ले मनवा...	१२
२४.	चरण कंवल अविनासी	१२
२५.	कहां मिलत है, कहां बसत है	१३

२६. गोविन्द गोविन्द गावत मीरा	१३
२७. चरण कमल नैनन उर धारुं ...	१४
२८. श्याम तुम कैसे भए कठोरा ...	१४
२६. श्याम करौ उपकारा	१५
३० राम खुमारी मीरा लागी	१५
३१. ऐसे भक्ति कैसे होय	१६
३२. गंगा चालों, जमना चालों	१६
३३. कोई कहे कछु, दे तू कहने	१७
३४. हर लों हर लो, मनवा मोरा	१७
३५. संग रहे पी हरदम मोरे	१८
३६. गुरू ने, राम रतन मों दीनो ..	१८
३७. आय बसो नन्दलाल	१९
३८. पाओं में घुगरुं बांध के	१९
३६. आओं आओं नन्द के लाला...	२०
४०. मीरा चाली गिरधर के घर ..	२०
४१. मीरा करी गुहार प्रभु जी	२१
४२. कृष्ण गोपाला नन्द के लाला	२१
४३. सन्मुख कद की ठाड़ी तुमरे ..	२२
४४. जोऊं राह पिया का निसदिन	२२
४५. मीरा के नयनन प्रभु आयों....	२३
४६. रही जगावत मीरा ललना	२३
४७. मीरा दासी करत विनय प्रभु	२४
४८. मैं रह गई एक अकेली	२४
४६. सुनत सुनत मैं भई बावरी	२५
५०. ब्रज मण्डल अचरज अतिभारी	२५
५१. मीरा मीरा गा रे मनवा	२६
५२. जैसे कृष्ण छोड गए गोकुल..	२६
५३. देश में ऐसे रहना काहे	२७
५४. सद्गुरु किरपा अजब निराली	२७

५५. मनवा मेरा बोल उठे कब	२८
५६. गुरु किरपा रैदासा कीनी	२८
५७. जग के रोके रुकत नहीं मैं	२९
५८. सत संगत मीरा ने पाई	२९
५६. गाय गाय गुण कृष्ण हरि के	३०
६०. लोक या परलोक कुछ भी	३०

आनन्द

६१. इस मुरली में हैं क्या जादू ..	३१
६२. मन लीन भया हरि सिमरन	३१
६३. मन नाचत हैं, मन गावत है	३२
६४. मैं तो गोपिन संग नाचूंगी	३२
६५. राम रस कोई पीवे मतवाला	३३
६६. मैं बनी पुजारिन प्रियतम की	३३
६७. नदिया उलट गई अन्तर में	३४
६८. अगन लगी अन्तर में ऐसी	३४
६६. हरि ही केवल सुख का दाता	३५
७०. हरि कृपा है मुझ पर ऐसी	३५
७१. सर्व साक्षी, सर्व नियामक	३६
७२. हरि ने पतितन को अपनायो	३६
७३. मेरा श्याम ने मन हर लीनों	३७
७४. मैं तों नाच रही मतवारी...	३७
७५. म्हारी काया भीगत जात ...	३८
७६. कारी बदरिया बरस रही है...	३८
७७. कवच चार पहने है मैंने	३९
७८. जो साजन आया अक्खियों में	३९
७६. छोड़ चले दुख सारे मो कों ...	४०
८०. जिस लिए हम थे तड़पते	४०
८१. मैं तो कृष्ण नाम गुण गाऊं	४१
८२. मनवा पीय की सेज समाया	४१

८३. मोरी प्रीत लगी प्रभु कमलन में	४२
८४. मैं तो चाकर श्याम सुन्दर का ..	४२
८५. जय जय जय जयकृष्ण कन्हारि ..	४३
८६. हुआ गुंजारित अनहद शब्दा आज	४३
८७. साईं भेद तेरा तू ही जानत	४४
८८. जितना छोड़त माया को मैं	४४
८९. हम आए तेरे द्वारे ..	४५
९०. घर तेरा न दिस्से मैं	४५
९१. हे प्रभु तुम जानतें हो	४६
९२. मैं रहा आकाश में ...	४६
९३. जब से छोड़ा घर है अपना	४७

विनय वंदना

४. अन्त वासना जैसी मन में..	४७
६५. शंकर, तुम ही बनाओ मेरी बात	४८
६६. क्या कहें इस दिल का अपने .	४८
६७. मां अम्बे तुम जागो....	४९
६८. हे शिव शंकर औढरदानी	५०
६९. करत हौं शिवशम्भु का गान...	५०

विरह

१००. भंवरा क्यों छेड़त हो मोहे ..	५१
१०१. चमक चमक बिजली	५१
१०२. प्रेम की पीड़ा, जाग उठो	५२
१०३. आए बसा शिवोम् जगत मे	५२
१०४. पिया गए परदेश	५३
१०५. साजन नैनन माही, विराजो...	५३
१०६. बात कसे या रहो उदासी	५४
१०७. भ्रम छाया मेरे मन ऐसा	५४
१०८. रोते रोते जीवन बीता	५५
१०९. मन का चैन गया है मेरा	५५
११०. चाहूं कहत कहा न जाए ...	५६

१११. मूल गए क्यों कसमें प्रीतम	५६
११२. मेरी आंखों में मेरे दिल में..	५७
११३. विनय करी न जाए मो सो	५७
११४. उड़ जा रे, तू उड़ जा कागा	५८
११५- कैसे आ पाऊं मैं तुम पह	५८
११६. आहट सुनत जरा भी जब मैं ..	५९
११७. भूल गयी थी दिनन सुहाने	५९
११८ काय करूं? प्रियतम नहीं	६०
११६. अब लौं मोर पिया नहीं आए..	६०
१२०. बंधी है नाव किनारे	६१
१२१. कायं कायं करत क्यों कागा	६१
१२२. जब हिरदय कोई आन बसे	६२
१२३. तार है टूटी, वीणा मेरी	६३
१२४. मधुर सुहाने सुन्दर दिन ...	६३
१२५. भूल गए जो मोहे सैयां	६४
१२६. प्राण पिया तुम क्यों नहीं	६४
१२७. वेग सुनो साहिबा	६५
१२८. जो सुख मिलत बिरह मे ...	६५
१२६ रही देखत राह प्रभात...	६६
१३०. रूठ गए क्यों प्रीतम मो सों	६६
१३१. नयनन नींद कहां से आवे...	६७
१३२. जगत में ऐसो कोई नहीं	६७
१३३. सावन आया, बरसे पानी	६८
१३४. जीवन बीत चला है अब तो ..	६८
१३५. जिन पी मिला सखी..	६९
१३६. प्रभुजी छोड़ कहीं न जाना	६९
१३७. बिसर गए क्यों मोहे..	७०
१३८. आंख मिचौनी क्यों खेलत..	७०
१३९. बंधन तोड़ जगत के सारे	७१

१४०. कब मिलसी मेरा प्रभु आए	७१
१४१. प्रभुजी ! जियड़ा कैसे लागा	७२
१४२. उपवन में जब कोयल बोले...	७२
१४३. बात सुनत न कोई मोरी	७३
१४४. सुख की आशा मन में लेकर	७३
१४५. रात कटत है तारे गिन गिन..	७४
१४६. उमड़ बदरिया नैनन आई	७४
१४७. रो रो बिताऊं रतियां .	७५
१४८. झरी लगी अंसुवन की नयनां	७५

सिखावन

१४६. मैं मनाता रह गया	७६
१५०. अब काय करूं कित जाऊं	७६
१५१. मनवा क्यों नहीं छोड़त पीछा	७७
१५२. भ्रमित भ्रमित जग में भरमाया	७७
१५३. राम सिमर तू मूरख मनवा	७८
१५४. ज्ञानी पावत निकट हरि को	७८
१५५. अन्त वेल जो सुमरे हर	७९
१५६. मन चंचल है, मति है खोटी	७९
१५७. जब भी भीर पड़ी है मो पर..	८०
१५८. अब क्या सोच करे मन	८०
१५६. शब्द अमी अस्नान करो	८१
१६०. मुख सो कहे तू राम नाम है ...	८१
१६१. नौ दरवाजें खोल के बैठा	८२
१६२. मनवा धीर धरत क्यों नहीं	८२
१६३. जीव पड़ा करमन के माहीं	८३
१६४. मन चंचलता त्यागे साधों	८३
१६५. विप्र प्रभु का भक्त है....	८४
१६६. चाहत प्रभु भला जग सारा...	८४
१६७. प्रभु भगती जीवन में नहीं	८५

१६८ साधन होत है जीवन में ही	८५
१६६. निन्दक । भला करे भगवान	८६
१७०. मन में छुपा जो कुछ भी...	८६
१७१. गाडियाँ ही गाडियाँ है	८७
१७२. जा की मरी वासना अन्तर .	८७
१७३. नंगा होत नहीं क्यों भाई	८८
१७४ गंग द्वार पर आकर मनवा...	८८
१७५. जिसकी जली वासनाएं ..	८९
१७६. काहे करत दिखावा रे	८९
१७७. मनवा सुन तू मोरी बात	९०
१७८. रैन बिहानी सोते सोते	९०
१७९. पाया देह भजन न कीना	९१
१८०. भाग भाग मैं भागत हारी	९१
१८१. खोजत फिरा शिवोम् ..	९२
१८२ कर तो मै कुछ भी न पाऊं	९२
१८३. राम भजन कर भोले मनवा	९३
१८४. लागत लागत हैं रंग लागत	९३
१८५. झुठम झुठ सकल संसारा	९४
१८६. जब तक जिये, सदा दुख भोगा.	९४
१८७. भूली फिरे जगत के माहीं	९५
१८८. प्रेम प्रकट जा हिरदय नाहीं	९५
१८९. सजनी पिया मिलन का तेरे	९६
१९०. प्रभु देखत जगत तमाशा	९६
१९१. सूरज उगता धूप निकलती	९७
१९२. आशा करत जगत से फिर...	९७
१९३. अभिमान में फूला फिरे	९८
१९४. सब जग सोय रहया माया में	९८
१९५. सुमिरन नहीं जो कीना तूने	९९
१९६. मनवा अब तू क्यों पछताए	९९

१६७. अंहकार और जगत पिपासा	१००
१६८. जगत भोग में लाग रहा तू	१००
१६९. मनवा जगत में उड़ता जाए	१०१
२००. आदमी तो न बना मैं	१०१
२०१. होत दीवाली अन्तर माहीं	१०२
२०२. दिल का जाला साफ हो ..	१०२
२०३. देखि देखि भावना बड़प्पन	१०३
२०४. प्रभु ही सारा जगत बना है	१०३
२०५. नाचत गावत मन बहलावत	१०४
२०६. काहे माल गले में डाले	१०४
२०७. यह तो भगती नहीं कहावे	१०५
२०८. राम नाम पल भर जो छुटे .	१०५
२०९. विषयन हेतु जन्म गवाया	१०६
२१०. जिन्दगी बेकार में	१०६
२११. मिलन नहीं प्रीत बिना होई.	१०७
२१२. जीव भी मानत हार है नाहीं	१०७
२१३. तीरथ है सब अन्तर माहीं ...	१०८
२१४. मैं कहाँ जाऊं किधर को	१०८
२१५. मुक्त होन की रीत बताऊं.	१०९
२१६. चढया प्रेम दा रंग है...	१०९
२१७. कहां भटकता फिर रहा	११०
२१८. मैं चलते चलते चलते	१११
२१९. साकी ने बनाया कैसा है...	११२
२२०. सम्भलना तो दूर है	११२
२२१. किनारे किनारे चला जा	११३
२२२. उमगो भावनाओ में कभी	११४
२२३. मन की भोरी, भ्रमित हुई मैं...	११५
२२४. निकलत बात है मुंह से नाहीं	११५

उद्बोधन

(1)

आधार - नैणा लोभी रे, बहुरि सके नहिँ आइ

(मीरागीत - राग मधुवन्ती ताल - धुमाली)

इन नयनन का काय करूँ मैं, दर्शन बाझों जो ललचाए ।
खोजत फिरते, डोलत फिरते, मनवा भी पाछे ही जाए ॥
जमना तट पह, कुंजगली में, रहता मन नित ही बौराए ।
कैसे पाऊं कृष्ण कन्हाई, मीरा श्यामहिँ खोजत जाए ॥
सक्खियन पुछे, गोपिन पूछे, कितको, श्याम किधर को जाए ।
नहीं मिलन, न सुनत हूँ मुरली, मनवा शंकाओं उरझाए ॥
अब तो खोजत खोजत थाकी, धीरज टूट शिथिलता पाए ।
काय करूँ, कित पूछूँ जाए, मनवा जात रहा अकुलाए ॥
तीर्थ शिवोम् कृष्ण गोपाला, आ मिल, आ मिल ।
मीरा दासी पायं पड़त है, बीत उमरिया विरथा जाए ॥

(2)

आधार - मैं अपने सैयां संग साची

(मीरागीत -राग - दरबारी ताल- केहरवा)

अब न लाज कोई मर्यादा, मीरा साची, पी संग साची ।
परगट प्रेम भया जग माहीं, मीरा नाची, पी संग नाची ॥
प्रेम प्रेम कर जगत पुकारे, प्रेम न जानत जग में कोई ।
मीरा पाया भेद प्रेम का, मीरा रांची पी संग रांची ॥
कटे दरिदर, कट गई माया, दूर हुआ मन का अंध्यारा ।
मन आनन्द भया आगाधा, मीरा हांसी, पी संग हांसी ॥
छूटा जगत, जगत व्यौहारा, लेन देन भी सब ही छूटा ।
मीरा है मीरा का सजना, फांसी मीरा पी संग फांसी ॥
तीर्थ शिवोम् पिया घर आई, संग पिया, पी सेज समाई ।
सिमटत जाऊं संग पिया के, मीरा साची पी संग साची ॥

(3)

आधार- मीरा लागो रंग हरि अटक परी

(मीरागीत - राग खमाज ताल - धुमाली)

मीरा लागो रंग प्रभु का, जग के रंग सभी ही छूटे ।
वृत्ति एक हरि संग लागी, जग के विषय सभी ही टूटे ॥
जग के सब घट गौण हुए हैं, एक हरि ही रहा बिराजे ।
क्या है लेना घट जो टूटे, जग के मटके सब ही फूटे ॥
अब तो कोई करे वन्दना, चाहे निन्दा करो हमारी ।
हमरा नेह हरि संग लागो, उखड़े जग के सब ही खूटे ॥
सन्त जना, जिस मारग चाल्या, सोई मारग जासी ।
सोई मारग साचा मारग, मारग और सभी ही झूटे ॥
तीर्थ शिवोम् है छूटी हिंसा, छूटा संग्रह धन का ।
न भय कोई किसी का मोहे, आणंद प्रेम का ही अब लूटे ॥

(4)

आधार - मैरो मन लागो हरि सूं, अब न रहूंगी अटकी

(मीरा गीत - राग भीमपलास ताल - दादर)

काहे अटक जगत की मोहे, मन में आय बसा नन्द लाला ।
सद्गुरु ज्ञान पिटारी खोली, नेह जगायो कृष्ण गोपाला ॥
श्याम बुलावत रहा बजावत, मुरली आय जमन के तीरा ।
मारी डारी जग की तृष्णा, परगट अन्तर श्याम कृपाला ॥
जारे संशय सब ही भ्रम के, माया छाया मन सों भागी ।
दूर भया अंधियारा सब ही, भया आनन्द प्रकट उजियाला ॥
भाग जगा, संतन संग बैठी, चेतन मिला प्रसाद अनूठा ।
चरणीं कृष्ण लगा मन ऐसा, जपती हरदम नाम की माला ॥
तीर्थ शिवोम् भया मन ऐसा, कृष्ण ही दीखत जग के माहीं ।
राग द्वेष नहीं अपना दूजा, गोरा रहा, रहा नहीं काला ॥

(5)

मीरागीत - राग - भैरवी ताल - खेमटा

वैद संवरिया कब आएगा, कब से रही पुकार खड़ी ।
मीरा की सुध लेत नहीं क्यों, कब से रही दुआर अड़ी ॥
रागी मनवा, रोगी काया, रोग में ही जीवन बीता ।
अब तो आओ कृष्ण कन्हैया, मीरा भयी लचार बड़ी ॥
अटक न जाए मनवा जग में, यही विनय तेरे चरणीं ।
अब तो बेड़ा पार करो प्रभु, जाय बीतत घड़ी घड़ी ॥
तीर्थ शिवोम् हे गिरघर लाला, बीत न जाए विरथा ही ।
चरण शरण प्रभु मोहे दीजो, द्वारे तुमरे आय पड़ी ॥

(6)

मीरागीत - राग - देस ताल - केहरवा

क्या मैं भी मीरा की भान्ति, प्रेम दीवानी हो पाऊंगी ।
भर जाएगा दर्द से हिरदय, प्रेम विरह में खो पाऊंगी ॥
मीरा मो पह कृपा करे जो, तो ही प्रेम दीवानी होऊं ।
तो ही उन्मुख शाम के होऊं, हिरदय अलख जगा पाऊंगी ॥
लोगन लागे साधन भजना, मेरा साधन प्रभु कृपा है ।
हो इतना अनुराग मेरे मन, शाम की कृपा पा जाऊंगी ॥
तीर्थ शिवोम् दीवानी मीरा, मोरे हिरदय आय बिराजो ।
तुम आई तो शाम भी आया, सेज शाम की पा जाऊंगी ॥

(7)

मीरागीत - राग - देस ताल - त्रिताल

कब तक चाले चाल कुचाल।
मनवा तोहे समझ न आई, समय बड़ा विकराल ॥
कभी इधर की, कभी उधर की, रहे बनावत बातों।
एक घड़ी भी तू ने पगले, भजा न कृष्ण गोपाल ॥
रहता रोवत, रहता सोचत, चंचल बना भटकता।
वृथा गवावे क्यों तू जीवन, एक ही दीनदयाल ॥
जग में गया, तो कारन बंधन, फिर न छूट सके तू।
रहे पिसत चक्की कर्मन की, यह जग जाल जंजाल ॥
तीर्थ शिवोम् हे मुख मनवा, कब लौं मैं समझाऊं।
पल पल छिन छिन बीत रही है, चल तू घर गोपाल ॥

(8)

मीरागीत - राग - मिश्र काफी ताल - घुमा

मीरा को प्रभु चाकर राखा, मैं भी शरण तिहारी।
बाग लगाऊं, सेज बिछाऊं, टेर सुनो गिरधारी ॥
जो प्रभु चाकर राखे तुमने, मन आनन्द मनावें।
मो दुखिया पर कृपा नहीं क्यों, फिरती मारी मारी ॥
मनवा डोलत, घूमत भटकत, दर्स तेरा पाने को।
तुम छिप बैठे कुंज गलिन में, दीखत नही मुरारी ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, मीरा के गिरधारी।
मनवा लोचत टहल करन को, कब आएगी बारी ॥

(9)

मीरागीत - राग - पृथ्वीप ताल - केहरवा

मीरा गोपी कृष्ण दीवानी, आन मिलो बनवारी ।
बन में खोजत, मन में खोजत, छोड़ गए क्यों मोहे मुरारी ॥
राज महल, सगले सुख साधन, एक तेरे हित त्यागे ।
एक तुम्हीं से लौ लगी है, एक तुम्हीं मेरे सुखकारी ॥
बालपना सुख गोपिन दीना, राधा ललिता रास रचायो ।
मैं तो फिरती तुमहीं देखत, कहा गए तुम कुंजबिहारी ॥
हिरदय प्यास तेरी ही लागी, नैनन भूख तेरी ही ।
आओ साजन मिटे पिपासा, मैं तो इक तेरी ही चेरी ॥
तीर्थ शिवोम् है गिरधर लाला, डगर डगर खोजत हूं ।
कैसे पाऊं, कहाँ मिलोगे, नगरी मेरी भयी अंधेरी ॥

(10)

मीरागीत - राग - विलासखानी तोड़ी ताल - केहरवा

जब तक दर्शन न कर पाऊं, मैं तो रोती ही रहूंगी ।
रोने में भी ध्यान तेरा ही, मन तड़पाती ही रहूंगी ॥,
तुमको क्या है मेरे साजन, रोए कोई तड़पा किए ।
मैं भूला तुमको न पाऊं, अक्खिया बरसाती रहूंगी ॥
छोड़ कर मीरा सभी कुछ, तेरे ही दर आ गई ।
तुम मिलो या न मिलो पर, खटखटाती ही रहूंगी ॥
तीर्थ ऐ शिव ओम् मो पर, कर कृपा मेरे प्रभु ।
कर पकड़ दामन तेरा ही, मैं हिलाती ही रहूंगी ॥

(11)

मीरागीत - राग - गोरखकल्याण ताल - खेमट

मीरा चाली पिया को खोजन, अपना आप भुलाय बैठी ।
पी का रंग, पिया संग रहनी, पी के संग ही लेटी बैठी ॥
कृष्ण ही कृष्ण दिखे संसारा, कृष्ण रूप सब जीव-जन्तु ।
ऐसी मस्त भयी दीवानी, कृष्ण रूप ही घर कर बैठी ॥
किसको खोजे, किसको भाले, जहाँ देखत वहीं कृष्ण ही दीखे ।
अपना आपा कृष्ण मिलाया, राधा, रूप- कृष्ण हुई बैठी ॥
मीरा नाचत, मीरा गावत, मीरा बस इक तार बजावत ।
हरि गुण गाय, हरि मनाय, धावत जाय दुआरे बैठी ॥
तीर्थ शिवोम् कृष्ण गोपाला, मीरा के तुम नन्द के लाला ।
आओ गलियन, फोड़ो मटकी, माखन रही बिलोय बैठी ॥

(12)

आधार - मैं तो सावरे के रंग राची

(मीरागीत - राग - धानी ताल भजनी ठेका)
सांवरे के रंग में रंग गई मीरा ।
रंग चढ़ा है ऐसा मो पर, मनवा भया अधीरा ॥
अब तो रंग - रंगा सब दीखत, मन तन भया रंगीला ।
रंगा - रंग मन भाव अनेकों, प्रीतम गहर गंभीरा ॥
हार शिंगार, बांध पग घुंघरू, लोक लाज सब त्यागी ।
नाचत नाचत गावत मीरा, मन आनन्द अपारा ॥
राग - द्वेष, मन की सब शंका, भागी अन्तर्तम सों ।
मन में छाया रंग पिया का, मान तान तज पीरा ॥
तीर्थ शिवोम् है नाचत मीरा, संग पिया गोपाला ।
गिरधर नागर आय विराजा, मगन प्रेम मन मीरा ॥

(13)

आधार - जब से मोहिं नन्द नन्दन, दृष्टि पड़यो माई

(मीरागीत - राग - सिन्धु भैरवी ताल- केहरवा)

हिरदय जबहिं कृष्णहिं दीना, कृष्णहिं दीखत मोहे आई ।
खेलत, गावत, कृष्णहिं धावत, कृष्णहिं बसयो नयनन आई ॥
प्रेम बाण हिरदय आई लागा, छूटी गांठ भरम की ।
पाछे छूटा जगत पसारा, सतगुर दीनों अलख जगाई ॥
अब तो दीखत कृष्ण कन्हैया, कृष्ण ही जगत समाया ।
कृष्ण नाम ही उर में धारा, वास कृष्ण कीनो मन आई ॥
हिरदय माहीं, नयनन माहीं, अंग अंग में, तन के माहीं ।
सर्व समाया शाम बिहारी, न सूझत कछु बिन गोसाई ॥
तीर्थ शिवोम् पुकारे मीरा, छोड़ के नाहीं जाज्यो मोहे ।
तुम ही मोरे, तुम ही साजन, कण कण दीखत जग में आई ॥

(14)

आधार - आली रे मेरे नैणां बाण पड़ी

(मीरागीत - राग - यमन ताल- केहरवा)

प्रेम बाण नयनन आई लागा, बींध दियो हिरदय मोरा ।
मन में जागा प्रेम हरि का, उर नाहीं वश में मोरा ॥
कब की ठाड़ी भवना ऊपर, झुक झुक देखत राह पिया का ।
थाके नयन, हृदय अकुलाया, कब आवेगा प्रीयतम मोरा ॥
आओ सजना, आओ प्रीतम, मीरा मनवा तोहे दीना ।
अब तो तन मन सौंप चुकी हूं, क्यों नहीं आवत प्रीतम मोरा ॥
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहत हैं भई बावरी ।
नाचूं गाऊं गिरधर आगे, रास रचावत मनवा मोरा ॥
तीर्थ शिवोम् हे कृष्ण कन्हैया, आओ आओ अब तो आओ ।
हिरदय खोल दिखाऊं तोहे, कैसा कैसा हुई गया मोरा ॥

(15)

मीरागीत - राग- नन्द ताल - केहरवा

मीरा नमन करे गोपिन को, ब्रज अवतार धराया ।
कान्ह की मुरली मन हर लीनो, भेद विरह का पाया ॥
मीरा, राधा पंथहिं चाली, प्रेम हृदय प्रगटाया ।
जलत विरह में जीवन सारा, भक्तन राह दिखाया ॥
साचा प्रेम हृदय के माहीं, हिरदय जलत पतंगा ।
न कछु मांगत, न कछु आशा, मीरा जग दिखलाया ॥
कैसी लीला प्रेम तेरी है, हिरदय तड़पत, नाहीं अंसुअन ।
नयनन टपकत अन्तर माहीं, यह ही प्रेम कहाया ॥
तीर्थ शिवोम् कृष्ण की मीरा, गोपिन बाला ब्रज की ।
धन्य तुम्हारी भक्ति महिमा, भक्तन प्रेम बताया ॥

(16)

मीरागीत - राग - जीवनपुरी ताल - ध्रुमाल

जोगिया से प्रीत करे न कोई ।
प्रीत किए दुख ही दुख होय, सुख नहीं पावत कोई ॥
जोगी मीत न होय किसी का, निर्मोही मन मौजी ।
छका रहे मस्ती में हरदम, बात करत नाहीं कोई ॥
जग के माहीं, जग से न्यारा, अगम लोक का वासी ।
पता ठिकाना मिलत न कोई, पहुँच सकत न कोई ॥
मीरा प्रेम कियो साजन सों, मीरा साजन पायो ।
मीरा सम ही साचा प्रेमी, सकत पहुँच है कोई ॥
तीर्थ शिवोम् कृष्ण गोपाला, मन अनुराग जगे तेरा ।
मीरा बन तुमरो यश गाऊं, जगत विषय मन न कोई ॥

(17)

आधार - पतिया मैं कैसे लिखू, लिखिहि न जाइ

(मीरागीत - राग भूपाली तोड़ी ताल - धुमाली)

पाती लिखूं प्रभु हौं कैसे, मो सों लिखि न जाई ।

लिखना चाहूं, लिख न पाऊं, ध्यान मगन हुई जाई ॥

शक्ति तुमरी जागी अन्तर, रहत क्रिया करती वह हरदम ।

लिखना चाहूं, किरिया चाले, कंपत गात है जाई ॥

शक्ति रूप प्रभु सन्मुख मोरे, पाती लिखूं मैं काहे ।

जो कछु कहना, सन्मुख कहसूं, अन्तर्मन हरदम हर्षाई ॥

कहना चाहूं, कह सकूं न, प्रीतम रूठ न जाय ।

मन की मन मां राखे राखूं, चरण कमल चित्त लाई ॥

तीर्थ शिवोम् पड़ी है मीरा, चरनों माहीं, सन्मुख तेरे ।

दुविधा देयी मिटाय सब ही, बाकी रही न कछु कठिनाई ॥

(18)

आधार - लागे सोही जाणै, कठण लगन दी पीर

(मीरागीत - राग - मारूविहाग ताल - दीपचन्दी)

जा मन पीरा प्रेम हो लागी, सो ही जानत प्रेम विरह को ।

कठिन है मारग, कठिन है चलना, जग न जानत प्रेम विरह को ॥

जग तो ऐसा स्वारथ डूबा, विपद पड़े कोई निकट न आवे ।

सुख में साथी सब को बनता, कैसे जानत प्रेम विरह को ॥

प्रेम का घाव है अन्दर गहरा, बाहर कछु भी दीखत नाहीं ।

रोम रोम जब प्रेम समाया, तब ही जानत प्रेम विरह को ॥

मीरा के मन प्रेम समाया, मीरा जानत पीर विरह की ।

विरह प्रेम में हिरदय रोवत, मन ही जानत प्रेम विरह को ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभु गिरधारी, प्रेम विरह की वर्षा मो पर ।

मीरा भान्ति जलत रहे मन, मीरा जानत प्रेम विरह को ॥

(19)

आधार - म्हारो जनम मरन के साथी, थाने नहीं बिसरूं दिन राती

(मीरागीत - राग -गोरख कल्याण ताल – धुमाली)

क्यों बिसर गया तू राम को, तेरा जनम मरण का साथी ।
मीरा दासी राम सजन की, रहती भजन करत दिन राती ॥
राम को देख्यां बिन हे मूरख, काहे सुख की सोय रह्या तू ।
उठ उठ उठ उठ तू राम जपन कर, जलत न काहे तेरी छाती ॥
मीरा चढ़ चढ़ पंथ निहारे, रोय रोय कटत है रतियां ।
रहती तड़पत प्रेम की मारी, रहत सुनावत रामहिं बाती ॥
जो हैं प्रेमी प्रभु राम के, राम दर्श बिन चैन न पावत ।
हरदम सिमरन, हर दम सेवा, पल भी विरथा नाहीं जाती ॥
तीर्थ शिवोम् है मूरख मनवा, मीरा पंथ नहीं क्यों पकडत ।
प्रेम प्रभु से, सिमरन राम को, किया नहीं तो फटत है छाती ॥

(20)

आधार-तनक हरि चितवौजी मोरी ओर

(मीरागीत – राग- अड़ाना ताल – केहरवा)

साजन दिलवर देख जरा तू, हमरी और तो देख जरा तू ।
मैं तो रहत निहारत तोहे, इक पल दृष्टि फेर जरा तू ॥
हिरदय किया कठोर क्यों अपना, रूठे रूठे क्यों तुम रहते ।
मैं तो रहत मनावत तोहे, मान जा साजन, देख जरा तू ॥
एक ही मन में आस लिए हूं, नजर तेरी जो प्रेम भरी इक ।
कहां मिलेगा तो सम प्रीतम, तू सा तू ही देख जरा तू ॥
तुमको कमी नही है कोई, लाख करोड़ों चाहने वाले ।
मेरे जो कुछ एक तुम्हीं हो, ठहर जा बालम देख जरा तू ॥
तीर्थ शिवोम् अरजी चरणीं, मीरा दासी करत विनय यह ।
आय वेग करो जी किरपा, झांकत तुमहिं देख जरा तू ॥

(21)

आधार - जोगी मत जा, मत जा, मत जा पाई परु मैं चेरी तेरी

(मीरागीत - राग अहिर भैरव ताल -दादरा)

छोड़ न जइयो बालमा, पांय पड़त हूं चेरी तेरी ।
मन दीनों है तव ही चरणी, छाड़ देयी सब मेरी तेरी ॥
कठिन बहुत भक्ति को मारग, पग पग माया घेरत मोहे ।
पंथ बताय दीजो मोहे, सूझत न कछु जग ने घेरी ॥
हिरदय जलत, जलत है मनवा, जलत विकार सभी ही ।
अपने अंग लगा जा साजन, मैं हूं केवल भस्महिं ढेरी ॥
तीर्थ शिवोम् गुजारे मीरा, अरजी यह चरणों के माहीं ।
जोत में जोत मिला जा सजना, हों तो बस एक रह गई तेरी ॥

(22)

आधार हो जी म्हांराज छोड़ मत जाज्यो

(मीरागीत - राग मिश्रकाफी ताल - केहरवा)

एक भरोसो पकड़यो थारो, छोड़ के जाज्यो नाहीं ।
मैं निर्बल, बल को न मुझमें, साधन जोग भी नाहीं ॥
मेरो साधन एक तुम्ही हो, रख्या तू करणारे ।
गुण न कोई, ढब न कोई, एक प्रीत ही है मन माहीं ॥
हूं तो थारी, केवल थारी, मन तन बुद्धि दीनी ।
तुम ही करो, सम्भालो प्रीतम, हों समर्थ को नाही ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, तुम बिन दूजा और न कोई ।
मीरा की प्रभु लाज बचाओ, अरज यही है तुमरे पाहीं ॥

(23)

आधार - राम नाम रस पीजे मनुआ, राम नाम रस पीजे

(मीरागीत - राग मिश्रखमाज ताल - खेमटा)

मीरा की यही सीख ले मनवा, राम नाम रस तू पीजे ।
तू राम नाम रस अमृत धारा, मन आनन्दित कीजे ॥
काहे करत कुसंग रहा तू, जीवन विरथा खोय रहा ।
हरि चर्चा सुण लीजे मनवा, मन विकार तेरा छीजे ॥
काम क्रोध मद लोभ मे डूबा, चंचल बना भटकता तू ।
रहे भगावत तोहे जग में, इन्हे बहाय तू दीजे ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, रंग प्रभु में रंग जा तू ।
तीर्थ शिवोम् प्रभु की शरणीं, मन अपने को तू दीजे ॥

(24)

आधार - भज मन चरण कमल अविनासी

(मीरा गीत राग- शुद्धकल्याण ताल - त्रिताल)

चरण कंवल अविनासी ।
जो कुछ जग बाहर आभासित, विनस सभी कुछ जासी ॥
मैं मैं करता जग लागा तू, जग में ही भरमाना ।
जग में सार नहीं है कोई, एक प्रभु अविनासी ॥
मूंड मुंडाय तिलक लगाए, रूप पाखण्ड बनाए ।
मन में प्रेम हरि न तेरे, क्यों पाय अविनासी ॥
मीरा मनवा हरिहिं दीना, छोड़ीं कुल मर्यादा ।
मन में प्रेम प्रभु का धारा, पाय गई अविनासी ॥
तीर्थ शिवोम् विनय कर जोरे, शरण प्रभु मो लीजो ।
श्याम तिहारी दासी मीरा, पद पाऊं अविनासी ॥

(25)

आधार - मैं जाण्यों नाही प्रभु को मिलन, कैसे होइ री

(मीरागीत - राग चारुकेशी ताल- केहरवा)

कहां मिलत हैं, कहां बसत है, मैं न जानू भेद तिहारा ।
खोजत उमर विहाई विरथा, पर न पाया भेद तिहारा ॥
हिरदय में है वासा तेरा, सब कह कह उपदेश सुणायें ।
पर क्यों अनुभव होत मुझे न, कुछ न समझा भेद तिहारा ॥
संयम वरतूं बन वैरागिन, ढूंढत गली गली तुमको ।
अता पता कछु मिल्यो नाही, मिलत नही कछु भेद तिहारा ॥
विरह हिरदय मोर सतावे, जग में तो मन लागत नाहीं ।
अन्दर बाहर कहीं न दीखत, पाऊं कहां मैं भेद तिहारा ॥
तीर्थ शिवोम् हरि अविनाशी, करो कृपा मीरा पह आय ।
मन में धारूं, बाहर खोजूं, अनबूझा पर भेद तिहारा ॥

(26)

आधार - मीरा मगन भई, हरि के गुण गाय

(मीरागीत राग - शिवरंजनी ताल – दादरा)

गोविन्द गोविन्द गावत मीरा, भई आनन्दित मन के माहीं ।
मैं भी मीरा के संग चाली, करती ध्यान हरि मन माहीं ॥
हरि संवरिया मधुर सलोना, कण कण वास करे जो ।
ता ही के गुण गात रहीं मैं, सुमरिन करती मन के माहीं ॥
साजन राखा दीन जनो का, देत सभी वह विघ्न हटाय ।
तन मन अर्पन कीना वा को, आय बसा हरि मन के माहीं ॥
क्या गाऊं, क्या नहीं गाऊं, सभी गुणन गोविन्द हरि के ।
जो गा पाऊं, सो कह जाऊं, लेत समझ वह मन के माहीं ॥
तीर्थ शिवोम् करे गुणगाना, प्रभु हरि का, संत जनन का ।
करो कृपा, हूं शरण तिहारी, राखि लेऊ मोहे मन के माहीं ॥

(27)

आधार - नयनन वनज बसाऊरी, जो मैं साहिब पाऊं

(मीरागीत राग कलावती ताल केहरवा)

चरण कमल नैनन उर धारूं, जो मैं साजन अपना पाऊं ।
डर लागे, पी चला न जावे, ता ते पलक नहीं मैं नाऊं ॥
ध्यान लगा त्रिकुटी में मोरा, प्रीतम रहत जहां विराजे ।
दर्शन पा हर्षाई मीरा, झांकी नित्य लगाउं वां पे ॥
जहां चांद न सूरज चमके, सुन्न ही सुन्न समाया रहवे ।
सुख की सेज बिछाए राखूं, संग पिया के मैं लिपटाऊं ॥
नहीं जग न ही दुख जग के, देश वह एक बड़ा निराला ।
मैं और पी ही, विघ्न न कोई, मन अपने आनन्द मनाऊं ।
तीर्थ शिवोम् कन्हाई कृष्णा, तुमरे बिन मन नाही लागे ।
पल भर रह सकूं न तुम बिन, हरदम कृष्ण कृष्ण ही ध्याऊं ॥

(28)

आधार - हो गए स्याम दूइज के चन्दा

(मीरागीत - राग - मिश्रकाफी ताल दीपचन्दी)

श्याम तुम कैसे भए कठोरा ।
दीखत नाहीं, देखत नाहीं, नाहीं करत निहोरा ॥
मीरा खोजत बन बन तोहे, भए दूज के चन्दा ।
लुकत छिपत क्यों करत मोर संग, मन जोड़ा मैंने संग तोरा ॥
ऐसा बांधा प्रेम डोर सों, छूट न पाएं, कुछ भी करके ।
अंग अंग में, रोम रोम में, प्रेम ही प्रेम समाया तोरा ॥
काम नहीं कछु, लाज नहीं कछु, तेरे बिन मैं बनी दीवानी ॥
मनवा लागत नाहीं तुम बिन, हाल बेहाल हुआ है मोरा ॥
तीर्थ शिवोम् है गिरधर नागर, करो कृपा मीरा पह आए ।
दीखत दूजा जग में नाहीं, ध्यान धरूं निसदिन मैं तोरा ॥

(29)

मीरागीत - राग भैरवी ताल - केहरवा

श्याम करौ उपकारा ।

अन्तर गगन बजत मुरली धुन, पाऊं अपरम्पारा ॥

सार - असार कछु न जानूं, तू ही केवल एक किनारा ।

तू ही प्रीतम सखा है मेरा, मिथ्या यह संसारा ॥

लागा बाण विरह का आए, बींध दिया हिरदय को ।

अब तो जलत अगन के माहीं, छूटा सकल पसारा ॥

मीरा दासी कृष्ण गोपाला, गिरधर नागर सैयां ।

आय मिलो हिरदय सुख होए, पाऊं तत्व अपारा ॥

तीर्थ शिवोम् मेरे बनवारी, शीतल करो अगन को ।

सुलगत अन्तर, जलती जाऊं, पाऊं तुम्हें सहारा ॥

(30)

आधार - लागी मोहे राम खुमारी हा

(मीरागीत - राग गोरख कल्याण ताल - केहरवा)

राम खुमारी मीरा लागी, उतरत नाहीं, उतरत नाहीं ।

चढ़ी रहे दिन रैन निरन्तर, उतरत नाहीं, उतरत नाहीं ॥

रिमझिम रिमझिम मेघा बरसे, बरसत जाए, ठहरत नाहीं ।

तन मन सारी सब ही भीगे, उतरत नाहीं, उतरत नाहीं ॥

चम चम बिजली चमके अन्तर, गरज उठा बादरवा ।

फिर भी बरसत बरसत जाएं, उतरत नाहीं, उतरत नाहीं ॥

तीर्थ शिवोम् प्रभु गिरधारी, यह मोहे तुमने क्या कीना ।

सब घट दिया दिखाय आतम, उतरत नाहीं, उतरत नाहीं ॥

(31)

आधार - यह विधि भक्ति कैसे होय

(मीरागीत राग यमन ताल - केहरवा)

ऐसे भक्ति कैसे होय ।

मनवा चंचल तोर बनो है, राम मिलावा कैसे होय ॥

रूप सवारे, तिलक लगावे, मलि मलि तन को धोवे ।

अन्तर मैल न छूटी अजहूं, प्रेम टिकावा कैसे होय ॥

काम क्रोध मद लोभ में डूबा, कर्म सभी चंडाला ।

मनवा भीगा जगत वासना, मिलन गुपाला कैसे होय ॥

मीरा प्रेम गुपाला पाया, तृष्णा जग की सब ही छूटी ।

हर पल रहे रामहिं डूबी, फिर पछतावा कैसे होय ॥

तीर्थ शिवोम् गुजारूं अरजी, कृष्ण गुपाला चरणों माही ।

लेयो बचाए चंचल मन सों, छुटकारा कैसे होय ॥

(32)

आधार - चलो मन गंगा जमना तीर

(मीरागीत - राग - जैजैवन्ती ताल- दादरा)

गंगा चालो, जमना चालो, चालो विरहन मीरा ।

जहां जाय मनवा हो निर्मल, गंग जमन ऐसा तीरा ॥

जा घट अन्तर गगना परगट, जा मुरली धुन बाजे ।

जा सुनि सुनि मनवा उई लागे, होवत घना अधीरा ॥

मीरा के संग मैं भी चालूं, मधुर बजावत कान्हा ।

सुनि सुनि मुरली मस्त बनूं मैं, चरणी कान्ह सरीरा ॥

आतम चमके, गगना गरजे, नाचत कृष्ण मुरारी ।

सुख भोगू अन्तर का मैं भी, चरण कमल पे सीरा ॥

तीर्थ शिवोम् तीर है सुन्दर, मीरा कृष्ण निहारे ।

भयी आनन्दित संग पिया के, मन में पावत धीरा ॥

(33)

आधार - कोई कछु भी कहे मन लागा
(मीरागीत - राग मारू विहाग ताल - धुमाली)

कोई कहे कछु, दे तू कहने, मेरो मन लागा गोपाल ।
मन जो लागा, ऐसा लागा, छूटत नाहीं नन्द के लाल ॥
था सोया यह मनवा कद से, भयी कृपा तब जागा ।
अब तो रैण दिवस गोपाला, मन में आवत नहीं मलाल ॥
जग छूटा सगला परिवारा, नेह लगा प्रीतम सों ।
मन तन भीगा प्रेम प्रभु में, होऊं मैं काहे बदहाल ॥
तीर्थ शिवोम् है गिरधर नागर, तेरो ध्यानहिं हरदम ।
जागा जागा भाग हमारा, सूझत कछु न बिन गोपाल ॥

(34)

आधार - माई मेरो मोहन मन हरयो
(मीरागीत राग तिलक कामोद ताल - केहरवा)

हर लो, हर लो, मनवा मोरा, कृष्ण गोपाला घर में आए।
वर लो, वर लो, नन्द के लाला, मन मोरा तुम पह आ जाए ॥
कैसा टोना, कैसा जादू, प्रीतम ने मो संग करयो ।
पानी भरना भूल गई मैं, घर में भी साजन दर्शाए ॥
कित मैं जाऊं, कहूं किसे क्या, हाल बना जो अपने मन का ।
प्राण पुरुष सों लागा मनवा, प्रीतम ही प्रीतम कह पाए ॥
जब लौं लोक लाज थी मन मां, कारज कोई भी न सरयो ।
डाल दिया जब सब व्यौहारा, तन मन में प्रीतम छा जाए ॥
तीर्थ शिवोम् भयी मैं दासी, चरनन तेरे की मैं लाला ।
सब जग देख्या, पायो तुमको, मनवा लीन तुम्हीं हो जाए ॥

(35)

आधार - गोहने गुपाल फिरूं, ऐसी आवत मन में

(मीरागीत - राग - देवगिरी बिलावल ताल केहरवा)

संग रहे पी हर दम मोरे, साथ रहूं मैं प्रीतम के ।
ऐसी मन में आए रही है, सूझत न बिन प्रीतम के ॥
बेबस भयी, होत न कुछ भी, देखत मुख ही साजन का ।
सुनत रहूं मुरली अन्तर में, भाए न बिन प्रीतम के ॥
प्रीतम ही हिरदय में छाया, प्रीतम ही जग रहा व्यापे ।
प्रीतम का ही सकल पसारा, दूजा न, बिन प्रीतम के ॥
जोगी मुनि जपी तपसी सब, खोजत खोजत तुमको हारे ।
न ही मिलता, नाहीं दीखत, कृपा मिले बिन प्रीतम के ॥
तीर्थ शिवोम् हूं भयी बावरी, मीरा दासी चरणों में ।
संग न छोड़ो कब हूं अब तो, सकत न रह बिन प्रीतम के ॥

(36)

आधार - मैंनें राम रतन धन पायो

(मीरागीत राग जन सम्मोहनी ताल केहरवा)

गुरु ने, राम रतन मो दीनो ।
ऐसी कृपा करि सतगुरु, जनम कृतार्थ कीनो ॥
चेतन नाम, चेतना अन्तर, चेतन किरिया दीनो ।
दृष्टि चेतन भयी है मोरी, चेतन मो करि दीनो ॥
चेतन धन गुरु दीना ऐसा, न खूटे न बिनसे ।
दिन दिन बढ़त सवायो धनवा, दूर दरिदर कीनो ॥
चेतन नाम सदा ही सत है, असत जगत संसारा ।
धन्य हुई गुरु किरपा पाई, जनम सफल करि दीनो ॥
तीर्थ शिवोम् पुकारे मीरा, है गुरु सत्य सरूपा ।
सत्य रूप, किरपा है तेरी, सत्य मोहे करि दीनो ॥

(37)

आधार - बसो मोरे नयनन में नन्दलाल
(मीरागीत राग - भैरवी ताल- केहरवा)

आय बसो नन्दलाल, हमारे नयनन माहीं ।
मैं पलके लेऊं गिराय, कि फिर मैं खोलत नाहीं ॥
काहे मैं फिर जग को देखूँ, जा नयनन मा तुमहिँ समाये ।
लेऊं मैं अगाध आनन्दा, कि फिर दुख पावत नाहीं ॥
नयनन राहीं हिरदय उतरो, अन्तर में कर वासा ।
संग पिया के रंग जाऊंगी, कि फिर रंग उतरत नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् हे कुंज बिहारी, सोऊं सेज तिहारी ।
तुम मेरे में, मैं तुम माहीं, कि दूरी दीखत नाहीं ॥

(38)

आधार - मैं गिरधर के संग नाचूंगी

(मीरागीत - राग - मालकोंस ताल भजनी ठेका)

पाओं में घुगरू बांध के, गिरधर आगे नाचूंगी ।
ठुमकत थिरकत पाओं मेरे, संभल संभल करि राखूंगी ॥
नाचत नाचत जीय भरत न, नाचत नाचत जाऊं ।
सजना मोरा भी संग नाचे, रस आनन्द को चाखूंगी ॥
लोक लाज कुल की मर्यादा, बाधक नाचन माहीं ।
या सब त्याग पिया को अपने, हिरदय माहीं राखूंगी ॥
प्रेम का बाण लगा उर मीरा, चढ़ा नशा नाचन का ।
अब तो नाचन जीवन मोरा, घूंगरू बांधे राखूंगी ॥
तीर्थ शिवोम् पिया की सेजे, पिया मिलन सुख पाऊं ।
न दूजा देखन को आए, रंग हरि के राचूंगी ॥

(39)

आधार - मेरे तो गिरधर गोपाल

(मीरागीत - राग - मिश्रपीलू ताल - केहरवा)

आओ आओ नन्द के लाला, आओ गिरधर गोपाला ।
मोरे प्रीतम, मोरे सजना, भाल तिलक, काजल काला ॥
मीरा के प्रभु एक तुमी हो, दूजा कोई न संगी ।
नाता एक तुम्हीं से राखा, मोर मुकुट बंसी वाला ।
करे, कहे कोई कुछ बातां, कुछ भी ध्यान धरूं न ।
संतन संग रहूं नित बैठी, मन में रहता उजयाला ॥
अंसुअन जल से कीनी खेती, बेल भयी अनुरागा ।
बेल भयी घनयारी अब तो, बना हृदय है मतवाला ॥
तीर्थ शिवोम् हे कृष्ण कन्हार्ई, करत हो काहे देरी ।
आओ वेग, राह नित देखूं, पाऊं दर्शन नन्द लाला ॥

(40)

आधार - मैं तो गिरधर के घर जाऊं

(मीरागीत - राग - भूप ताल - धुमाली)

मीरा चाली गिरधर के घर, मैं कद उस के जा पाऊंगी।
साचो साजन म्हारो गिरधर, देखत रूप लुभा पाऊंगी ॥
पीव समाया हिरदय माहीं, पीव ही पीव पुकारूं ।
कदसी पिया मिले मो आए, दर्शन मैं कद कर पाऊंगी ॥
वा के संग रहूं दिन रैणा, ये ही आवत मन मां ।
क्या है लेना जग से मोहे, अपना पिण्ड छुड़ा पाऊंगी ॥
जैसा राखे साईं मोरा, तूझ उसी हालत मां ।
मेरा उणका नित्य का नाता, प्रीत पुरानी पा जाऊंगी ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु गिरधारी, गिरधर नागर सैयां ।
सुध मोरी क्यों लेत नहीं हो, चरण शरण मैं पा जाऊंगी ॥

(41)

मीरागीत - राग यमन ताल - ध्रुमाली

मीरा करी गुहार प्रभु जी, सुनी दयाल आय तुम अरजी ।
मैं भी रही पुकारत तोहे, काढ लेयो तो थारी मरजी ॥
म्हारा म्हारा जग में कीना, म्हारा हुआ न कुछ भी ।
सगे एक तुम शाम सुन्दर हो, जा को कोई नहीं है गरजी ॥
तीरथ घूमी ठाकुर दुआरे, करी बहु परिकम्मया ।
हाथ कछु न आया म्हारे, अब हूं करत अचरजजी ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो प्रभु मोरे, अरजी तुमरे आगे ।
जैसा चाहो राखो मोहे, पड़ी है चरणी म्हारी अरजी ॥

(42)

मीरागीत - राग बिलावल ताल - केहरवा

कृष्ण गोपाला नन्द के लाला, रूप तिहारो अधम उधारण ।
निर्गुण सगुणा सांई मारो, रूप धरा वा ने जग तारण ॥
मीरा आई दुआरे तुमरे, हरि तुम आए धाए ।
मैं भी खट खट करत रही कर, कष्ट हमारो करो निवारण ॥
करुणा सागर, तुम अधहारी, पापी मो से बड़ो न कोए ।
एक नजर हो ओर मेरी भी, तुम हो अन्तर असुरन मारण ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, मीरा पंथ चलाओ मोहे ।
मीरा रहनी, मीरा करनी, प्रेम पंथ मुक्ति को कारण ॥

(43)

मीरागीत - राग - भैरवी ताल - दादरा

सन्मुख कद की ठाड़ी तुमरे, पलक उधाड़ो धन्श्याम ।
मीरा दासी पांय पड़त है, किरपा कराजो धन्श्याम ॥
ठोक बजा सारा जग देखया, जगत न दर्दी कोई ।
इक दर्दी मेरे तुम सजना, पार लगाजो घन्श्याम ॥
बीच समुन्दर नाव अड़ी है, कौन लंघावे मो को ।
तुम ही काढन हारे प्रीतम, पार कराजो घन्श्याम ॥
पल भर चैन पड़त न मोहे, गिन गिन तारे रतियां ।
विरह अगन जलाए जियड़ा, चैन कराजो घन्श्याम ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, हूं मैं शरण तिहारी ।
मन तन जीवन अर्पन तेरे, दर्स दिखाजो घन्श्याम ॥

(44)

मीरागीत - राग - धानी ताल - केहरवा

जोऊं राह पिया का निसदिन, मीरा दासी तड़प रही ।
जब लौं पी दर्शन न नयनन, विरह कलेजे धड़क रही ॥
आओ प्रीतम आओ सजना, राह तकत मैं हारी ।
अंग अंग अनुराग भरो है, बिजली अन्तर कड़क रही ॥
रोवत हिरदय, सूजे नयना, कल न पड़त पल भर भी ।
उठ उठ देखत पंथ तिहारा, पीरा हिरदय धड़क रही ॥
खोजत कुंज गली में तुमहिं, सूनी गलियां, सूना हिरदय ।
मीरा को प्रभु दर्शन दीजो, तुम बिन छाती फड़क रही ॥
तीर्थ शिवोम् हे नन्द के लाला, मीरा दासी चरणों में ।
बार बार आ द्वारे तुमरे, तुमरे पैयां पड़त रही ॥

(45)

मीरागीत - राग - शिवरंजनी ताल - केहरवा

मीरा के नयनन प्रभु आयो, नयन हमारे आवत क्यों न ।
नयनन म्हारे राह तकत है, नयनन माहीं समावत क्यों न ॥
मोहनी मूरत हृदय लिये हूं, याद तमारी हरदम रहती ।
आओ दर्स दिखाओ साजन, तरस हमारे खावत क्यों न ॥
धारण उर वैजन्ति माला, अधर सुधा रस टपक रहियो है ।
अमीं पिपासा मोहे लागी, हिरदय तृप्त करावत क्यों न ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु गिरधारी, भक्त वक्षल गोपाल हरिहर ।
कानन गूंजत नूपुर शब्दा, आए मधुर सुनावत क्यों न ॥

(46)

मीरागीत - राग- अहिर भैरव ताल दादरा

रही जगावत मीरा ललना, जागो मोरे प्यारे ।
जागो जागो जागो जागो, जागो कृष्ण मुरारे ॥
रही जगावत मीरा तोहे, अब लौं सोवत काहे ।
डूब रही मैं तम अंधारे, पार करो गिरधारे ॥
तुम सोए, सारा जग सोया, तुम जागे जग जागा ।
तुम जागे मन शीतल होया, करो कृपा बनवारे ॥
तीर्थ शिवोम् गया अंध्यारा, वेला जागन आई ।
काहे सोवत, क्यों न जागत, मीरा करत पुकारे ॥

(47)

मीरागीत - राग - मिश्रकाफी ताल - केहरवा

मीरा दासी करत विनय प्रभु, नैणा आगे रहियो जी ।
दर्शन लाभ करूं नित सजना, हिरदय वासा करियो जी ॥
भव सागर दुख पात घनेरा, डूबत डूबत जाऊं मै ।
करि किरपा मोही बाहं गहोजी, आए पकड़ी कढ़ियो जी ॥
मैं दासी तुम स्वामी म्हारे, चरण शरण मोहे राखो ।
अवर न जग मां कोई म्हारे, नजर कृपा की करियो जी ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु गिरधारी, गिरधर नागर मीरा के ।
सदा लगाए राखो चरणीं, अलग मुझे मत करियो जी ॥

(48)

मीरागीत - राग काफी ताल - केहरवा

मैं रह गई एक अकेली, अब का संग खेलूं होली ।
पिया अनाथा कीनो मोहे, मैं ही गांठ न खोली ॥
जग छोड़ा सक्खियन सब छोड़ी, छोड़ा देश पराया ।
एक पिया ही खोजन निकली, गल लटकायी झोली ॥
रंग पिचकारी हाथ में पकड़ी, का पर रंग बिखेरूं ।
दीखत पिया कहीं न मोहे, न ही सुनत हूं बोली ॥
मीरा डोलत, बन बन खोजत, मिला पिया न मोहे ।
एक अकेली रह गई डोलत, पिया की पर मैं हो ली ॥
तीर्थ शिवोम् दीवानी मीरा, पिया बिना तरसाए ।
सारा जग तो होली खेलत, मैं काहे संग खेलूं होली ॥

(49)

आधार - भई हौं बावरी सुन के बासरी

(मीरागीत - राग - दरबारी कान्हडा ताल - केहरवा)

हरि बिन कछु न सुहाय माई ।
सुनत सुनत मैं भई बावरी, मुरली कृष्ण बिहारी की ।
गहरे उतरत मनवा जाए, सुनती धुन बनवारी की ॥
कृष्ण बिना न सोहे कछु भी, मन उन्मन हुई लागा ।
सुनत मुरलिया सुध बुध बिसरी, कुञ्ज बिहारी की ॥
अब तो ताही में मन लागा, भोग विषय कुछ दीखत नाही ।
चरण पकड़ लू, शरण गहूं मैं, श्याम मुरारि की ॥
नेम धर्म सगला ही बिसरा, मुरली कृष्ण सुनत रह जाऊं ।
अब तो मुरली धुन है, मैं हूं, पड़ी शरण गिरधारी की ॥
तीर्थ शिवोम् बजैया मुरली, काहे जगत नचाय रह्या तू ।
वैसे भी जग वश है तेरे, चरणी कृष्ण मुरारी की ॥

(50)

आधार - या ब्रज में कछु देख्यो री टोना

(मीरागीत - राग गारा ताल - केहरवा)

ब्रज मण्डल अचरज अति भारी, दुखी न दीखत नर कि नारी ।
भक्ति नाचत, ज्ञान प्रकाशा, मीरा देखत नयन उघारी ॥
भक्ति रस हर कोई डूबा, सुनत रहे कान्हा की मुरली ।
ताही में मन रमा रहत है, लाग रही सब ही की तारी ॥
राग न द्वेष क्रोध नहीं लोभा, मन है शीतल सबका ही ।
मगन आनन्द रहे हर कोई, होत न कोई किसी पर भारी ॥
ब्रज है कृष्ण कन्हैया का ब्रज, नित्य निरन्तर थिर वह रहता ।
न बिनसे, न ही परिवर्तित, रहत सदा ही जग से न्यारी ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु गिरधारी, कैसा प्रगटाया तूने ।
सत चेतन आनन्द स्वरूपा, जहां बसत गिरधर अघहारी ॥

(51)

मीरागीत - राग - पहदीप ताल - केहरवा

मीरा मीरा गा रे मनवा, मीरा दर्द दीवानी ।
मीरा मन गिरधरहिं दीना, गिरधर ही मन जानी ॥
जा मारग पी अपना पाया, चाली प्रेम गली वह ।
तू भी मीरा पंथहिं चाले, गिरधर ही मन ठानी ॥
मीरा विरहन, मीरा जोगन, मीरा अलख जगाया ।
मीरा पाछे चालो मनवा, पावे प्रेमहिं रवानी ॥
तीर्थ शिवोम् दीवानी मीरा, दर्द मेरे मन लागे ।
दर्द बिना मन चैन न पावे, ये ही राह पछानी ॥

(52)

मीरागीत - राग - बिलावल ताल - केहरवा

जैसे कृष्ण छोड़ गए गोकुल, ऐसे हरि सबन जीवों को ।
जैसे रोवत गोपिन ग्वाला, ऐसे व्यथा है सब जीवों को ॥
जैसे जीव का हो कल्याणा, वैसा करता हरि जगत से ।
मूरख मनवा यह न समझत, मानत त्यागत हरि जीवों को ॥
गोकुल छोड़ गए मथुरा को, दुष्टन का संहार करन को ।
ध्वस्त करें जो जग को सारे, देवत कष्ट जो सब जीवों को ॥
मीरा रानी प्रेम दीवानी, राखी निष्ठा पीव पति पर ।
ताही डोल न पाया मनवा, राह दिखाया सब जीवों को ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु हे कान्हा, जैसे मरजी वैसा कर तू ।
तुम को ध्यान सभी का प्रीतम, देवत सुख हो जीवों को ॥

(53)

आधार - नहीं भावै थारो देसलड़ा, रंग रूड़ो

(मीरागीत - राग - भूप ताल - केहरवा)

देश में ऐसे रहना काहे, जहां बसत सब कूड़ो ।
जा का हिरदय खोल के देख्या, सब कूड़ो ही कूड़ो ॥
संसारी का देश अनूठो, साध बसत न कोई एको ।
कूड़ी दुनि कूड़ी माया, दृश्य पदारथ कूड़ो ॥
छोड़ चलो यह कूड़ी दुनिया, स्वारथ सगला डूबा ।
जग में अपनो कुछ भी नहीं, भागत पाछे कूड़ो ॥
मीरा त्याग दयी यह दुनिया, त्यागा सभी व्यौहारा ।
कृष्ण गोपाला प्रीतम साचा, और दिखे सब कूड़ो ॥
तीर्थ शिवोम् हे गिरधर नागर, मीरा दासी तुमरी ।
देश तुम्हारे वासा कीनो, वर पायो छे पूरो ॥

(54)

आधार - री मेरे पार निकल गया सदगुरु मार्या तीर

(मीरागीत - राग - अड़ाना ताल - भजनी ठेका)

सद्गुरु किरपा अजब निराली, मार्या विरह बान मुझे ।
बीध दिया अन्तर में हिरदय, हुआ अनुग्रह आज मुझे ॥
मैं लागी थी जग के माहीं, नहीं खबर कुछ भी अपनी ।
अब तो रंग चढ़ा है गहरा, क्या रंग दीनो आज मुझे ॥
अब तो खुले कपाट हैं अन्तर, याद पिया भूलत माहीं ।
हरदम, हरपल नयनन माहीं, दीखत पी ही आज मुझे ॥
बंधन ऐसो प्रेम का पड़ि गयो, छूटत नहीं छुटाय वह ।
बढ़ता जाय, कसता जाये, लियो फसाय आज मुझे ॥
तीर्थ शिवोम् शरण में मीरा, गिरधर नागर सैयां की ।
अब तो अगन विरह की लागी, दियो जलाय आज मुझे ॥

(55)

मीरागीत राग- जौनपुरी ताल - भजनी ठेका

मनवा मेरा बोल उठे कब, मेरे तो गिरधर गोपाल ।
मीरा भाँति चहक उठूं मैं, मेरे तो इक नन्द के लाल ॥
मस्त बनी मन ही मैं मन में, याद नहीं कुछ जग जंजाल ।
ब्रज ही लागे मनवा मेरा, देखत रहूं कृष्ण गोपाल ॥
छोड़ मान मयार्दा सब ही, चालूंगी कब प्रेम की चाल ।
नाचत गाऊं श्याम विरह में, मन में हो केवल गोपाल ॥
तीर्थ शिवोम् समय कब होगा, जब पी मुझ पर हो किरपाल ।
राह तकत हूं उस वेला की, नाच उठूं मैं संग गोपाल ॥

(56)

मीरागीत - राग - चारुकेशी ताल - भजनी ठेका

गुरु किरपा रैदासा कीनी ।
हरि गुण गावत छन छन घुंगरू, परम अनुग्रह कीना ॥
गुण गावन इक तारा दीनो, मीरा कियो निहाला ।
चेतन धन, चेतन हरि नामा, चेतन ही मन कीना ॥
चेतन किरिया, चेतन नादा, चेतन जग कर दीना ।
चेतन दृष्टि, चेतन वृत्ति, सर्व ही चेतन कीना ॥
सद्गुरु देव प्रकट अन्तर में, अन्तर ज्ञान प्रकाशा ।
बिन चेतन कछु नाहीं दीखत, अन्तर अनुभव दीना ॥
तीर्थ शिवोम् हे गिरधर नागर, मीरा संग नाचत है ।
चेतन मीरा, श्यामा चेतन, अनुप अनुग्रह कीना ॥

(57)

आधार - बरजी मैं काहूँ की नाही रहूँ

(मीरागीत राग - शिवरंजनी ताल - कव्वाली ठेका)

जग के रोके रूकत नहीं मैं, देस पिया के जासी ।
पिया मिले से मनवा खोलूँ, मन की बात मैं कहसां ॥
संत जनां संग संगत करि करि, मन की निर्मलता पाई ।
साजि संवर के, भाव हृदय धर, पीव के दर्शन पासां ॥
संग पिया के, सेज पिया की, आणंद मनवा हरदम ।
जगत बखेड़े भूलि के मन सों, सेज पिया संग रहसां ॥
तन मन दीना, सीस भी दीना, दीना कुल मर्यादा ।
अब तो शाम पिया संग राचूँ, मुख सो पिया करेसां ॥
तीर्थ शिवोम् कन्हैया मीरा, द्वारे तुमरे आय रही है ।
हिरदय खोल पिया की सेज, मन आनन्द रहीसां ॥

(58)

आधार - आज म्हारां साधु जननो संग रे, राणा म्हारां भाग भल्यां

(मीरागीत राग - जैजैवन्ती ताल - केहरवा)

संत संगत मीरा ने पाई, भाग हमारा जागा ।
जग बंधन में पड़ी हुई थी, दुर्गुण सब ही भागा ॥
साध संग ऐसी है औषध, रोग शोक मिट जावे ।
दुर्जन संगत विष का सेवन, कुपथ कुयोग है जागा ॥
संत जनां जहां करत वास हैं, तीरथ मुक्तिधाम बने वह ।
मल मल न्हावें भक्त जना मिल, अन्तर्यागि है जागा ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा प्रभु की जो, संतन हिरदय वासा ।
गिरधर नागर पाऊं शरण मैं, प्रेम हृदय अनुरागा ॥

(59)

आधार - राणजी म्हें तो गोविन्द का गुण गास्यां

(मीरागीत राग काफी ताल – केहरवा)

गाय गाय गुण कृष्ण हरि के, जनम कृतारथ मैं करसां ।
जग का भय किस बात का मोहे, नाम गोविन्द ही मै जपसां ॥
हरि मन्दिर में, जमना तट पर, श्यामहिं रास रचाय रह्या ।
दर्शन पासां, मुरली सुनसां, शीतल हिरदय मै करसां ॥
हरि मन्दिर में नाचत मीरा, बांध के घुगरुं पाओं मां ।
मै भी नाचूं, दर्सन पाऊं, हरि हरि हरि नित मैं करसां ॥
सदगुरु किरपा कीनी मो पर, नाम जहाज पह लियो बैठाय ।
गिरधर नागर राखा मोरा, भव सागर थी मैं तरसां ॥
तीर्थ शिवोम् नहीं मैं जाऊं, मिथ्या जग की संगत में ।
पंथ प्रेम ही चालूं मैं नित, नेह प्रभु से मैं करसां ॥

(60)

आधार - जब से मोहि नंदनंदन, दृष्टि पड़यो माई

(मीरागीत - राग यमन ताल -रूपक)

लोक या परलोक कुछ भी, न सुहाता है मुझे ।
एक बस घन्श्याम ही, जो कि है भाता मन मुझे ॥
जब से देखा है नजारा, कुछ की कुछ मैं हो गई ।
उस तरफ को ही है मन, मेरा जो ले जाता मुझे ॥
क्या कहूं घन्श्याम की, जुल्फों की मैं, सूरत की मैं ।
मन तो उन पर ही फिदा, जो कि लुभाता है मुझे ॥
अब तो मन में चैन न है, है तड़पता मिलन को ।
हिज्र के मारे मरी मैं, जो जलाता है मुझे ॥
तीर्थ ऐ शिव ओम् मीरा, अब सहा न जाय है ।
क्या करूं, पा जाऊं उसको, रहत तड़पाता मुझे ॥

(61)

आनन्द - राग - देस ताल - केहरवा

इस मुरली में है क्या जादू, जो हिरदय मेरा रंग दीना ।
में सुध बुध सारी भूल गई, मुरली ने बावरी कर दीना ॥
मुरली की तान निराली है, है जग का यह विस्तार करे ।
फिर जगत समाता इसमें है, यह कौतुक इसने कर दीना ॥
मन खिचता जाए उसी तरफ, सुनना इस तान को चाहे वह ।
मन लीन हुआ इस तान में है, है मुग्ध यह इसने कर दीना ॥
अन्तर की किरिया रूक जाती, मन बुद्धि गर्व विलीन हुए ।
दृश्य यह सारा टूट गया, यह मुरली ने क्या कर दीना ॥
मन में आनन्द है भर जाता, है मस्ती छाई नयनन में ।
आवेश है तन में भरा हुआ, मुझको है प्रेम से भर दीना ॥
शिवओम् यह मुरली रस भीना, बरसाती रस सर्वत्र फिरे ।
है तान मधुर है मुरली की, अपने वश में है कर लीना ॥

(62)

आनन्द राग - किरवानी ताल - केहरवा

मन लीन भया हरि सिमरन में ।
है भाव विचार नहीं अन्तर में, मन जाय न विषयन में ॥
अब सुख मिलत है अन्तर माहीं, बाहर दुख ही दुख है ।
सुख भण्डार खुला है अन्दर, मन लागा हरि सिमरन में ॥
सिमरन ही सुख, सिमरन चेतन, सिमरन ही सौंदर्य बना ।
सिमरन बिन भावे न कुछ भी, काम बना हरि सिमरन में ॥
भोग विषय छुटकारा पाया, आशा तृष्णा त्यागी ।
मनवा तो सिमरन में लागा, मस्त बना हरि सिमरन में ॥
तीर्थ शिवोम् है अमृत सिमरन, जनम मरन सब छूटे ।
सिमरन पार करे जीवों को, छूटा बंधन सिमरन में ॥

(63)

आनन्द - राग - काफी ताल - दादरा

मन नाचत है, मन गावत है, मन जग में नहीं भ्रमावत है ।
प्रभु प्रेम में ऐसा मस्त हुआ, जग का कुछ याद न आवत है ॥
मन मनहिं लागा मन माहीं, मनहिं प्रभु प्यारा देखत है ।
कोई परवाह नहीं जग की, मनहिं आनन्द मनावत है ॥
मन है मन माहीं समझ गया, कि जग में कोई सार नहीं ।
फिर क्यों उलझे मन भोगों में, विषयों में नाहीं जावत है ॥
अब मन है प्रियतम पास रहे, मन प्रियतम के संग एक हुआ ।
है मन में प्रियतम ही प्रियतम, मन और कहीं न जावत है ॥
मन रहा प्रभु के रंग रंगा, है नहीं उतारे उतरत है ।
मन देखत रहा नजारों को, मन मन में ही सुख पावत है ॥
है तीर्थ शिवोम् मेरा मनवा, अब मनवा वह मनवा नाहीं ।
अब प्रेम बसा मन माहीं है, बस प्रीत की बात ही आवत है ॥

(64)

आनन्द - राग - बागेश्री ताल - भजनी ठेका

मैं तो गोपिन संग नाचूंगी ।
प्रेम दीवानी बन कर मीरा, मोहन संग नाचूंगी ॥
कहां छुपे हो कृष्ण कन्हाई, सामने क्यों नहीं आते ।
मो से तुमको लाज लगत है, तुमरे संग नाचूंगी ॥
खोजत फिरती मैं तुम ही को, निपट तुम्हीं निर्मोही ।
मैं तो दासी हूं चरणों की, तुमरे संग नाचूंगी ॥
तुमरे लिए जगत सब छोड़ा, पर तुम नहीं आवत हो ।
मुझसे कोई भूल हुई क्या, तुमरे संग नाचूंगी ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा कर मो पर, दूर न मुझको राखो ।
मैं तुमरे संग नाचन चाहूं, तुमरे संग नाचूंगी ॥

(65)

आनन्द -राग भूप ताल - धुमाली

राम रस कोई पीवे मतवाला ।
गगन मंडल में अमृत बरसे, राम तो दीन दयाला ॥
उमड़ धुमड़ कर मेघा बरसे, भीगा तन मन सारा ।
अन्तर में आनन्द भरा है, भर-भर पीवे प्याला ॥
जब तक सिर को ऊंचा राखे, तब लगी यह रस नाहीं ।
नीचा सिर, तो बहे अमि रस, अन्तर होत उजाला ॥
मोल-तोल कछु देखत नाहीं, त्यागे सकल विषय को ।
आशा तृष्णा छोड़ जगत की, तो पावे घर वाला ॥
जोगी ज्ञानी ध्यानी सब ही, या रस को ललचावें ।
गुरु कृपा बिन मिलत है नाहीं, मिले तो मिलत गुपाला ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे सद्गुरु, रस अमृत बरसा दो ।
छका रहे मन हरदम रस में, हो आनन्द निराला ॥

(66)

आनन्द- राग - तिलंग ताल - केहरवा

मैं बनी पुजारिन प्रियतम की, साजन का दर मन्दिर मेरा ।
मेरे मन प्रेम समाया है, और पुलकित है अन्दर मेरा ॥
है रोम रोम में साजन ही, जग में सर्वत्र वही दीखे ।
जग का है रूप बदल डाला, आनन्द भरा अन्दर मेरा ॥
आशा तृष्णा का नाम नहीं, है शोक मोह भी रहे नहीं ।
मन निर्मल दर्पण का भाँति, भ्रम रहित हुआ अन्दर मेरा ॥
जब किरपा सद्गुरु की पाई, तब दिव्य हुआ अनुभव मुझको ।
मां शक्ति परगट मन माहीं, धो डाला सब अन्दर मेरा ॥
शक्ति का रूप निराला है, है करे अलौकिक किरिया वह ।
भव बन्धन मुक्त किया मुझको, आवरण हटा अन्दर मेरा ॥
शिवओम् हुआ किरतारथ मैं, सीमाएं सब ही टूट गई ।
सुख पायो सेज पिया का मैं, उन्मुक्त हुआ अन्दर मेरा ॥

(67)

आनन्द -राग भैरवी ताल – केहरवा

नदिया उलट गई अन्तर में ।
हुई तरंगित आतम मुख हो, करत खेल अन्तर में ॥
बाहर का जल सूख गया है, अन्तर रस है भीगा ।
जगत वासना बाहर छूटी, अमृत है अन्तर में ॥
लिए बहाए जाती नदियां, सब कुछ साथ ही अपने ।
मनवा तो अब शुद्ध बना है, अनंद भया अन्तर में ॥
अजब नजारे देत है नदियां, सुन्दर मधुर सलोने ।
होत तरंगित विविध क्रिया में, क्रियाशील अन्तर में ॥
नदिया मिलती सागर में जब, लीन उसी में होती ।
आतम ही न्यारा है सागर, लीन उसी अन्तर में ॥
तीर्थ शिवोम् यह चेतन नदिया, आतम में जब मिलती ।
जगत विलीन, एक आतम में, घटित यही अन्तर में ॥

(68)

आनन्द -राग - केदार ताल - दादरा

अगन लगी अन्तर में ऐसी, झुलस गया मन सारा ।
जला सकल अभिमान का परदा, रह गया अपरम्परा ॥
जली वासना तृष्णा सब ही, मेरा - तेरा छूटा ।
अब तो मन आनन्द मनाए, टूटा भ्रम है सारा ॥
अनत अकाल अजन्मा प्रियतम, अन्तर में ही पाया ।
छूटा श्रम पुरुषारथ भागा, कोई न पारावारा ॥
सद्गुरु देव कृपा मो कीनी, अन्तर राम मिलाया ।
अन्तर ही सब लोक दिखाए, अन्तर सब विस्तारा ॥
आतम में ही सकल समाया, आतम ही जग साजा ।
आतम में ही जगत समाए, खेल उसी का सारा ॥
तीर्थ शिवोम् शिला पर बैठा, जो डोले न बदले ।
जग तो बनता रहे बदलता, आतम रहे नयारा ॥

(69)

आनन्द -राग श्री कल्याण ताल – केहरवा

हरि ही केवल सुख का दाता ।
कोई विरला सिमरन करता, जो है मुक्ति पाता ॥
संत सदा प्रेमी सिमरन के, सदा ही राम प्यारे ।
काल ग्रास वह नहीं बनत है, जीवन सुख में जाता ॥
सदा रहत है मस्त बने वह, आशा तृष्णा नाही ।
मन में प्रेम प्रभु का हरदम, कोई डिगा न पाता ॥
पाप अनेकों होत भस्म हैं, कृपा दृष्टि तुमरी से ।
सोवत जागत भजन होत है, जो है सुख का दाता ॥
गुरुदेव ही हरि मिलाए, गुरुदेव बतलाता ।
गुरुदेव ही ऐसा साथी, कही न आता जाता ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, राम से मोहे मिला दो ।
राम नाम है जीवन मेरा, राम ही सुख का दाता ॥

(70)

आनन्द - राग - बिलावल ताल - केहरवा

हरि कृपा है मुझ पर ऐसी, दुविधा दूर भई ।
मान तान सब मर्म भुलाया, तृष्णा दूर गई ॥
संत संगत में मनवा लागा, विषय न मोहे भावे ।
माया ममता टूट गई है, मन विश्राम लई ॥
जो जन लागे जगत विषय में, दुख है पाता घनेरा ।
पाप ताप मन की अभिलाषा, नित ही होत नई ॥
मोरा मन तो प्रभु रंग राता, शोक मोह न मोहे ।
छका रहूं नित सुख के माही, दृष्टि पलट गई ॥
तीर्थ शिवोम् सुख में ऐसा, आनन्दित मन मोरा ।
मेरा तेरा छूट गया है, अन्तर्मुखी भई ॥

(71)

आनन्द- राग भूप ताल - दीपचन्दी

सर्व साक्षी, सर्व नियामक, है मेरा भगवन्ता ।
घट घट व्यापक, सर्व प्रकाशक, ऐसा है बलवन्ता ॥
कण कण में शक्ति है उसकी, सर्व क्रिया भी ताही ।
मन और बुद्धि मे भी व्यापक, वह ही सर्व करन्ता ॥
कृपा गुरु की मुझ पर होई, समय वियोग का बीता ।
मेरा प्रियतम प्राप्त हुआ है, पाया मैं भगवन्ता ॥
प्रियतम के संग नाचूं गाऊं, अनुभव करती किरिया ।
मन में करता लीला न्यारी, वह ही क्रिया करन्ता ॥
धन्य है प्रियतम किरिया उसकी, धन्य हुई जिस पाया ।
धन्य नाम है प्रभु अलौकिक, लीला जगत नियन्ता ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, किरपा मुझ पह राखो ।
जुड़ी रहूं चरणों के माही, पांऊ रूप अनन्ता ॥

(72)

आनन्द राग - जीवनपुरी - ताल - भजनी ठेका

हरि ने पतितन को अपनायो ।
अपने सम पावन कर लीनों, मन का कष्ट मिटायो ॥
दूर भया अन्तर अन्ध्यारा, प्रभु प्रेम परकाशित ।
रहत मगन आनंद निरन्तर, बंधन दिए छुड़ायो ॥
नमन करो सारा जग उनको, पूछे जाति न कोई ।
जग का पूज्य बनाया उनको, आसन पर बिठलायो ॥
प्रभु मेरे तुम दीनदयाला, करत हो दया अनूठी ।
पापी नीच कुचालन को भी, अपने सम पुजवायो ॥
मधुर मनोहर नाम तिहारो, पार करे जीवो को ।
अक्षय पद है देत जीव को, माया पार करायो ॥
तीर्थ शिवोम् नीच अज्ञानी, पड़ा तुम्हारे चरणों ।
जैसा कैसा शरण तिहारी, लेयो मोहे अपनायो । ॥

(73)

आनन्द - राग - शुद्ध सारंग ताल - केहरवा

मेरा श्याम ने मन हर लीनो ।
नटखट ऐसा कृष्ण कन्हैया, अपना मो कर लीनो ॥
अब तो कृष्ण कृष्ण ही सूझत, मनवा कहीं न जाए ।
मैं मतवारी कृष्ण प्रेम की, प्रेम में ही रंग दीनो ॥
वंशी बजावत, नाच नचावत, कौतुक मधुर करे वह ।
ग्वाल बाल संग रास रचावे, मो पह जादू कीनों ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो बनवारी, मैं तो हो गई तेरी ।
तेरे प्रेम हुई बावरी, सुध सब बिसरा दीनों ॥

(74)

आनन्द- राग- मिश्र काफी ताल - भजनी ठेका

मैं तो नाच रही मतवारी ।
पाओं थिरकें अंगवा फडके, जगत वासना डारी ॥
मुंह से बोल अलौकिक निकलत, मन में प्रेम समाया ।
हिरदय भाव भरा भक्ति का, अंग अंग मतवारी ॥
चारों दिशा रंगीली दीखत, राग द्वेष नहीं कोई ।
मनवा मस्त बनो है ऐसा, हूं मैं भई मतवारी ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो बनवारी, पी का रंग चढ़ा रे ।
झूम झूम मन खिलता जाए, तुम ही दिखो मुरारी ॥

(75)

आनन्द- राग खमाज ताल - भजनी ठेका

म्हारी काया भीगत जात, मेघड़ा झुक आयो ।
म्हारा पुलकित जात शरीर, मानवा सुख पायो ॥
वर्षा आली धुन मतवाली, किरिया अनुपम जागी ।
मोहे बैठत नाही जात, मानवा उठि धायो ॥
बाजे गाजे बाजन लागे, महक उठी फुलवाड़ी ।
रिम झिम हो बरसात, मानवा रंग लायो ॥
काम क्रोध मद मद लोभ गयो है, प्रेम आनन्द है जागा ।
मै कहि सकत न बात, मानवा पी पायो ॥
तीर्थ शिवोम् हूं भयी बावरी, रंग दे मोहे रंग दे ।
जावत बीतत रात, मानवा घर आयो ॥

(76)

आनन्द - राग - मिश्र पीलू ताल - धुमाली

कारी बदरिया बरस रही है, रिमझिम रिमझिम रिमझिम ।
बरसत वह बरसत ही जाए, रिमझिम रिमझिम रिमझिम ॥
अंगना भीगा अन्दर बाहर, घर सारा ही भीगा ।
मनवा भीगा, हिरदय भीगा, रिमझिम रिमझिम रिमझिम ॥
प्रियतम भी भीगा ही दीखत, भीगा मुख अलकें सब ।
मैं भी भीगी संग पिया के, रिमझिम रिमझिम रिमझिम ॥
ऐसा बरसा बादर अंगना, रहा न सूखा कुछ भी ।
ऊंच नीच संगला ही भीगा, रिमझिम रिमझिम रिमझिम ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, कैसी किरपा कीनी ।
जीवन मोरा बदल दियो है, रिमझिम रिमझिम रिमझिम ॥

(77)

आनन्द - राग - तिलक कामोद ताल - केहरवा

कवच चार पहने है मैंने, डर मोहे किस बात का है ।
जग प्रपंच में उलझन नाहीं, संशय फिर किस बात का है ॥
प्रथम कवच बैराग जगत का, आसक्ति है तनिक नहीं ।
बंधन से छुटकारा पाया, देना फिर किस बात का है ॥
स्वर्ग भोग की आस भी त्यागी, देखा सुना सभी छोड़ा ।
इह लोक परलोक हैं छूटे, फिर खिंचाव किस बात का है ॥
प्रभु भिन्न है जब तक मो से, है मेरा आदर्श बना ।
राम अभिन्न किया जब अनुभव, फिर पाना किस बात का है ॥
यह सब त्यागे सो तो त्यागे, त्याग को भी अब त्याग दिया ।
त्याग का बंधन भी अब नाहीं, बंधन फिर किस बात का है ॥
तीर्थ शिवोम् कवच यह चारों, रक्षा मेरी हैं करते ।
जब हूं रक्षित इन चारों से, डरने की फिर बात है क्या ॥

(78)

राग - चारुकेशी ताल - दादरा

जो साजन आया अक्खियों में, तो दिल में है सरुर आया ।
कलेजे ठण्ड आई है, कि चेहरे पर है नूर आया ॥
दिखे जो दूर था रहता, समाया अब है आखों में ।
न परदा कोई है बाकी, कि वह हाजिर हजूर आया ॥
नहीं था सामने जब तक, रही जग में ही उलझी मैं ।
कि दिल यह पाक ही न था, रहा मन में फितूर आया ॥
रही मैं भटकती फिरती, कि साजन मुझको मिल जाए ।
मगर दिल था नहीं लायक, कि ह्रदम था कसूर आया ॥
यह तीरथ ही तो है शिवओम्, जो समझा मुझे काबिल ।
नही तो मैं कहाँ और वह कहाँ, अब घर में नूर आया ॥

(79)

आनन्द- राग घानी ताल - केहरवा

छोड़ चले दुख सारे मो को, मैं हरि सुमिरन कीना ।
बार बार प्रभु ध्यान लगाऊं, मन हरि चरनन कीना ॥
जो जन शरण गहे संतन की, पावे द्वार हरि का ।
भटकन अटकन छूट गयो है, नाम प्रभु का लीना ॥
सद्गुरुदेव कृपा की मो पर, पाया पंथ प्रभु का ।
मन आनन्द परम पद पाया, कारज सरल है कीना ॥
प्रभु भजन ही कारज मेरा, दूजा काम न कोई ।
मन निश्चल अनुराग समाया, परम अनुग्रह कीना ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, मन आनन्द विराजे ।
आशा तृष्णा ममता भागी, दुविधा सब हर लीना ॥

(80)

आनन्द - राग - मिश्र मदमाद सांरग - ताल - दादरा

जिसलिए हम थे तड़पते, हम वही हैं हम वही ।
अब लिया पहचान हमने, हम वही हम वही ॥
जो है फैला जग में सारे, चांद हो सूरज जमीं ।
है वही हमरे भी अन्दर, हम वही हैं हम वही ॥
जब न समझे थे उसे हम, थे भटकते जगत में ।
पा लिया है हमने उसको, हम वही हैं हम वही ॥
जान जाओगे उसे जब, तुम भी अपने सामने ।
गौण हो जाएगी दुनियां, हम वही हैं हम वही ॥
तीर्थ हे शिवोम् मैं, अब तलक भूला रहा ।
अब हुआ परिचय जो उसका, हम वही हैं हम वही ॥

(81)

आनन्द- राग - गौड़ सारंग ताल - त्रिताल

मैं तो कृष्ण नाम गुण गाऊं ।
कृष्ण ही केवल ध्यान करूं मैं, कृष्ण को ही अपनाऊं ॥
कृष्ण बसत है अंग अंग में, कृष्ण ही हृदय समाया ।
कृष्ण शक्ति से मन संचालित, कृष्ण को ही मैं ध्याऊं ॥
छोड़ जगत की आशा सब ही, कृष्ण की आशा राखूं ।
कृष्ण ही अब सर्वस्व बना है, आशा मार भगाऊं ॥
कृष्ण ही मेरे सुख का सागर, मुरली मधुर बजाए ।
सुनत रहूं मैं नित्य निरन्तर, ता में ही सुख पाऊं ॥
रास रचाए अन्तर्मन में, गाए और गवाए ।
लीला उसकी अजब निराली, ता पर बलि बलि जाऊं ॥
तीर्थ शिवोम् हे कृष्ण कन्हैया, अन्तर आनन्द दीजो ।
छकी रहूं नित प्रेम के माही, तुमरे ही गुण गाऊं ॥

(82)

आनन्द - राग - मारवा ताल केहरवा

मनवा पीय की सेज समाया ।
पीय बिना कुछ न मन भावे, पीय मेरे मन भाया ॥
पीय विचारूं, मन में धारूं, पीय ही जीवन मेरा ।
पीय ही लीन रहूं मैं हरदम, पिय मन माहीं सजाया ॥
पी की सेज अलौकिक सुख है, जग बंधन छुड़वाए ।
पिय में रहूं समाई नित ही, मन आनन्द है छाया ॥
हरदम प्रियतम सन्मुख मोरे, हिरदय माहीं विराजे ।
प्रियतम मुझमें, मैं प्रियतम में, प्रियतम सकल समाया ॥
तीर्थ शिवोम् है प्रियतम मेरा, गहर गम्भीर अनन्ता ।
पिय गुण मुझमें हों परकाशित, हिरदय प्रेम समाया ॥

(83)

आनन्द - राग - देसी ताल - धुमाली

मोरी प्रीत लगी प्रभु कमलन में ।
प्रभु प्रियतम ही यह सब कीना, हिरदय है हरि चरनन में ॥
विषय प्रवाह जगत उपजाया, मन में रहत निरन्तर ।
प्रेम मेरा न डूबन देता, प्रेम भया हरि चरनन में ॥
हिंसक पशु चोर जग कैसा, जगत भयानक दीखे ।
रक्षा मोर करत मोरा प्रियतम, ध्यान रहे हरि चरनन में ॥
जग विषयों से क्या है लेना, मन चंचल कर देते ।
नेह लगायो प्रियतम से मैं, मोह हुआ हरि चरनन में ॥
मधुर मनोहर चरन हैं सुन्दर, मन मोहक अति भारी ।
मैं तो प्रेम मगन चरनन में, चरनन में हरि चरनन में ॥
तीर्थ शिवोम् हुई मतवाली, चरनन मोहे सुहावे ।
चरनन को हिरदय में धारूँ भक्ति भाव हरि चरनन में ॥

(84)

आनन्द राग - वरवा ताल - केहरवा

मैं तो चाकर श्याम सुन्दर का ।
भजन काम है मो को दीना, निर्मल मन मन्दिर का ॥
गान करूँ और नाम जपूँ मैं, प्रेम हृदय में जागा ।
मन अभिमान तो चूर हुआ है, भ्रम टूटा अन्दर का ॥
इच्छाएं सब पूर्ण हुई, आपत काम हुआ मैं ।
लगा रहूँ हरि सिमरन माहीं, जो बाहर अन्दर का ॥
तीर्थ शिवोम् मगन है ऐसा, श्याम तुम्हारी जय हो ।
कृपा करो मुझ पर भी प्रियतम, कटे मैल अन्दर का ॥

(85)

वन्दना - राग मिश्र पीलू ताल - केहरवा

जय जय जय जय, कृष्ण कन्हई ।
गोपिन कैसा प्रेम दिखाया, वाह रे, वाह रे, कृष्ण कन्हई ॥
गोपिन कोमल माखन लाई, निर्मल मन का, शुद्ध हृदय का ।
प्रेम आनन्द से भोग लगाओ, खारे खारे कृष्ण कन्हई ॥
मुरली रहो बजावत तुम तो, मधुर रसीली सुन्दर मुरली ।
गोपिन मन हर लेत है मुरली, मुरली बजा रे कृष्ण कन्हई ॥
आई गोपिन द्वारे तेरे, सुन कर मुरली तान मधुर वह ।
सुध बुध सारी दे बिसराई, दर्श दिखा रे कृष्ण कन्हई ॥
तीर्थ शिवोम् विनय तुम चरणीं, हमको भूल नहीं तुम जाजो ।
माखन खावत, बजात मुरली, पार करो रे कृष्ण कन्हई ॥

(86)

वन्दना- राग - अहिर भैरव ताल - केहरवा

हुआ गुंजारित अनहद शब्दा आजे ।
हो सचेत सुन लीजो वाणी, आय रही धुर से आवाजे ॥
सुनत यह सुखकर नाद मुनि जो, होत कर्म भ्रम नाशा ।
सत्य लोक होता वासा, ऊठत देश समाजे ॥
प्रेम मगन हो सुन्दर नादा, सुनो एकचित लाए ।
अनंद आरती मन में होवत, साज सभी ही साजे ॥
राम पधारे घर में तोरे, उदय सुभाग है तेरा ।
अन्तर गगन लगा दरबारा, आसन राम विराजे ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुवर की, जीवन का फल पाया ।
धन्य धन्य हैं भाग हमारे, सभी सवारे काजे ॥

(87)

वन्दना राग - सारंग ताल - त्रिताल

साईं भेद तेरा तू ही है जानत ।
जीव करत अभिमान है मिथ्या, अनुभव कुछ भी नहीं आवत ॥
करम भरम में जीवा अटका, करत जगत नादानी वह ।
बड़ो है मानत बुद्धिशाली, पर जानत न कुछ भी जानत ॥
साईं तेरा लोक अगामी, नाम तेरा है एक अनामी ।
जगत रहे, जग से अलगाना, जीव जगत को अपना मानत ॥
तू अवतार धरे जग माहीं, दीनन पार करन को ही ।
सो तिर जावे नदिया गहरी, हिरदय से जो तुमको मानत ॥
तीर्थ शिवोम् हे सद्गुरुदेवा, दर्शन साईं मुझे करा दो ।
तू ही साईं जगत विधाता, तू ही जग से पार निकालत ॥

(88)

वन्दना- राग - केदार ताल - केहरवा

जितना छोड़त माया को मैं, पर माया नहीं छूटे ।
लेत लपेटे फिर फिर मोहे, क्योंकर माया छूटे ॥
जहां जहां दीखे जगत फैला, माया किया आच्छादित ।
आत्म ज्ञान तहां नहीं माया, ताही माया छूटे ॥
माया बांधे जीव मोह में, बनी डराये मृत्यु ।
माया घरत पताल अकाशा, नहीं माया छूटे ॥
तीर्थ शिवोम् है एको मारग, पार करन माया का ।
जो जन सद्गुरु पावे किरपा, तब ही माया छूटे ॥

(89)

विनय - राग - दरबारी ताल - केहरवा

हम आए तेरे द्वारे, प्रभु राखो लाज हमारी ।
हम पड़े हैं शरण तुम्हारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥
दीन हीन हम बालक तेरे, तुमको रहे पुकार प्रभु ।
हम पर पड़ी है विपदा भारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥
जगत बड़ा ही दुखदायी है, कष्ट अनेकों देता है वह ।
है बना वह अत्याचारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥
कैसे छूटे इस माया से, मारग कोई सूझ न पाता ।
तुम सुन लो टेरे हमारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥
कोई न तेरे बिना हमारा, कष्ट हरे जो दुखद हमारा ।
दीनों की कर रखवारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥
तीर्थ शिवोम् हमारे प्रभुजी, हम हो दुखी पुकारे तुमको ।
कर नैया पार हमारी, बनवारी कृष्ण मुरारी ॥

(90)

विनय - पंजाबी राग - धानी ताल - केहरवा

घर तेरा न दिस्से मैंनूँ, कित्थों जा लोडा मैं तैनूँ ।
तेरे बिन मेरे ओ प्रीतम, पता किसे दा वी ना मैंनूँ ॥
जग दे कन कन विच तू वसदैं, पर है दिसदा भूल नहीं तू ।
सभना दा आधार है तू ही, सिरफ पता एनां है मैंनूँ ॥
तू ही संगी, तू ही साथी, सारे जगदा बनया है तू ।
जेहड़ा, मुल्ल है तैनूँ जांदा, नरक दा पाना समझो ओहनूँ ॥
गहरे हन जो छाले मन विच, पापां ते करमां- बुरियां दे ।
तू ही इक हटाए ओहनां, दर तेरे ही जाना मैंनूँ ॥
तीर्थ शिवोम् परीतम मेरे, लभ सका ते मैं न तैनूँ ।
किरपा कर के दर्शन देयो, अर्ज गुजारां एवा तैनूँ ॥

(91)

विनय - राग दरबारी कानड़ा ताल - भजनी ठेका

हे प्रभु तुम जानते हो, मन में मेरे क्या भरा।
पाप ताप विकार सब ही, मन में मेरे है भरा ॥
हूं घमण्डी नीच पापी, सब ही अवगुण हूँ लिए।
कैसे हो निस्तार मेरा, जगत बंधन में परा ॥
यह समझ कर शरण आया, पाप काटन हार हो।
मुझ सा पापी दूसरा न, पाप ही नित है करा ॥
हे प्रभु मुझको संभारो, दर तेरे पर हूं पड़ा।
जो शरण तेरी हुआ सो, पाप करने से डरा ॥
तीर्थ हे शिवोम् प्रभुवर, दूर न कर दीजिए।
जग में दूजा कौन है, जिस भक्त - हित ही है करा ॥

(92)

विनय- राग- देस ताल- रूपक

में रहा आकाश में, पाताल में ही भटकता।
पर नहीं आया जमीं पर, मन में है यह खटकता ॥
या तो बीती ही में मनवा, सोचता कल की रहे।
आज की उस को खबर न, फिर प्रभु क्यों बख्शता ॥
है समय मैंने गवाया, कल की चिन्ता ही किए।
जब नजर आया कहीं धन, कुछ भी कर मैं भटकता ॥
जब किसी ने भी डराया, दुम दबा लेता वहां।
और जो डरता मेरे से, तब रहा मैं कड़कता ॥
राम को पर प्रेम मन से, कर मैं पाया ही नहीं।
फिर हृदय शीतल हो कैसे, नूर क्यों कर बरसता ॥
तीर्थ हे शिवोम् मोहे, कर कृपा मेरे प्रभु।
जगत में यूँ ही पड़ा हूँ, मैं रहूँ न भटकता ॥

(93)

विनय- राग मदमाद ताल - केहरवा

जब से छोड़ा घर है अपना, मिला नहीं आराम है ।
चंचल होकर दुखी है मनवा, लगा रहे बेकाम है ॥
आतम राम मेरा घर अपना, आया जग के माहीं मैं ।
काम क्रोध से मन भर लीना, रहा न वह निष्काम है ॥
भूला खुद को अपने घर को, मस्त हुआ विषयों में मैं ।
होश तभी, जब ठोकर खाई, नहीं पाया विश्राम है ॥
भटक भटक सारा जग ढूंढा, ठौर कहीं भी न पाई ।
जग में ठौर मिले भी कैसे, जग में नहीं मुकाम है ॥
कहां जाऊँ घर को मैं खोजूँ, अन्तर खोजत हूँ नाहीं ।
बाहर होवे, तो घर पाऊँ, रहा फिरत बेकाम हूँ ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रभुजी, मैं अनजान महापापी ।
कैसे लौटूँ घर मैं अपने, घर तो आतम राम है ॥

(94)

विनय - राग - कामोद ताल - दादरा

अन्त वासना जैसी मन में, तैसे ही घर जावे ।
तैसा सुख - दुख पावे ता घर, तैसे कर्म कमावे ॥
तन ही घर है मनवा जा में, करता वास फिरे है ।
इक घर छोड़ दूज अपनावे, लिप्त वहीं हुई जावे ॥
जैसे जैसे कर्म करे है, तैसी आशा उपजे ।
जीव न सोचे, आतम सुख को, नहीं हरि गुण गावे ॥
भगती साची अन्तर उपजे, मोड़े चिन्तन मन का ।
जग में नहीं वासना बाकी, इन्द्रिन अन्तर जावे ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, साची भगती दीजो ।
कर्म करूँ, पर रहूँ अकर्मा, मन हरि चरनन जावे ॥

(95)

विनय - राग - नन्द केदार ताल - त्रिताल

शंकर, तुम ही बनाओ मोरी बात ।
हैं तो बुद्धिहीन अजाना, जगत करत आघात ॥
जगत सतावत जगत रुलावत, रहत सदा ही मोहे ।
जान अनाथ अभागा मोहे, देत लात पर लात ॥
मो को बल केवल है तेरा, तुमरी कृपा अहैतुक ।
कृपा दृष्टि हो तुमरी मो पर, बलिहारी हैं जात ॥
तुमरे बिन न जग में कोई, हितकारा दातारा ।
कब तक रहूं जगत में खाता, घात घात पर घात ॥
तीर्थ शिवोम् हे भोले शंकर, तुम तो प्रलयंकारी ।
माया रजनी जाये विहानी, जीवन उदय प्रभात ॥

(96)

विनय - राग - बिलावल ताल -रूपक

क्या कहें इस दिल का अपने, जिस में विरहा कैद है ।
न करे कुछ औषधि और, न ही कुछ भी वैद है ॥
क्या कहें अपनों को दिल की, न गिला गैरों से ही ।
न किसी का दोष कुछ, किसमत में अपनी ऐब है ॥
खुश रहो जैसे भी तुम हो, खुश रहो बस खुश रहो ।
खुश नसीबी है यही, ये ही आवाज़े - गैब है ॥
यह जहां दीखे बज़ाहिर है दुखों का घर बना ।
हम जुदा हैं यार से, पर यार दिल में कैद है ॥
तीर्थ ऐ शिव ओम् अब तू, सन्न रख दिल आपने ।
यार आ ही जाएगा, लैला को जैसे कैस है ॥

विनय - राग यमन ताल - केहरवा

मां जगदम्बे तुम जागो, हे कल्याणी तुम जागो ।
 दुख मेरा दूर करो मां, दुखहारिणी अम्बे जागो ॥
 अब तो त्यागो मां निद्रा तुम, युगों युगों से सोई ।
 कब से हूं रहा जगाय, दुखहारिणी अम्बे जागो ॥
 तुम ही हो काली, दुर्गा हो, कुण्डलिनी भी तुम ही हो मां ।
 कर्ता हो हर्ता भरता हो, दुखहारिणी अम्बे जागो ॥
 मन हुआ मलीन है मेरा, हैं कर्म अति ही निन्दित ।
 वृत्ति भी चंचल मेरी, दुखहारिणी अम्बे जागो ॥
 विषयों में रमा हुआ हूं, भोगों में धंसा हुआ हूं ।
 मारग न कोई सूझे, दुखहारिणी अम्बे जागो ॥
 तुम दुर्गा रूप संभारो, अन्तर असुरों को मारो ।
 दुख देत अति ही भारी, दुखहारिणी अम्बे जागो ॥
 तुम रूप भयानक धारो, अन्तर शत्रु संहारो ।
 अब मैं हूं शरण तिहारी, दुखहारिणी अम्बे जागो ॥
 मेरी ताकत न कोई, पुरुषार्थ हीन हूं बैठा ।
 कैस संभालूं इनको, दुखहारिणी अम्बे जागो ॥
 शिवओम् पड़ा चरणों में, बस तेरा एक सहारा ।
 जागो अब जागो जागो, दुखहारिणी अम्बे जागो ॥

(98)

विनय - राग - हिन्डोल ताल - त्रिताल

हे शिव शंकर औढरदानी ।
जा पर बरसे तुमरी किरपा, भय नही कोई हानी ॥
सारे जग के गुरुदेव तुम, योग ज्ञान उपजाए ।
जन राखे विश्वास अगाधा, होत महाविज्ञानी ॥
अघनाशक, भवनाशक तुम हो, जग कल्याण करत हो ।
शरण पड़े की लाज संभारो, भक्तन हित वरदानी ॥
करत रमन कैलाशा ऊपर, मगन सदा अन्तर में ।
उमा विराजे वाम् पक्ष में, जात न अघ अज्ञानी ॥
तीर्थ शिवोम् दया के सागर, हूं मैं शरणी आया ।
करो कृपा दुख दारिद जाए, दुविधा मिटे पुरानी ॥

(99)

विनय - राग यमन ताल - केहरवा

करता हौं शिव शम्भु का गान ।
जा समान न दाता जग में, करुणा दया निधान ॥
जग को तारन कारन स्वामी तत्पर रहो सदा तुम ।
जग जंजाल, पड़ा हूं शरणी, तारो जान अजान ॥
कृपा दृष्टि हो जा जन तुमरी, कल्मिश नाशे भागे ।
माया सिमटत जात है अन्तर, पावे जग अवसान ॥
ध्यान नहीं आपुन को कुछ भी, रहत जगत हित लागा ।
तुम सा ओढरदानी को न, करत जगत कल्याण ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु हे स्वामी, हूं तो नीच कुकर्मी ।
शरण तिहारी आन गिरा हूं पाऊं चिर वरदान ॥

(100)

विरह - राग मिश्र पहाड़ी ताल - भजनी ठेका

भंवरा क्यों छेड़त हो मोहे ।
मैं पहले ही दुख मे जलती, विहर अगन है मोहे ॥
जो तुम बनो सहायक मेरे, श्याम सुनाओ जाय ।
हर पल जलूं विरह में तेरे, चैन नहीं छिन मोहे ॥
श्याम संदेशा जो भी देवे, आए मुझे सुनाजो ।
मैं देखूंगी राह तिहारा, आश लगी मन मोहे ॥
कौन जनम को बैरी श्यामा जा सो नेह लगायो ।
अब तो भुगत रही विरह मैं, रहत सतावत मोहे ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे भंवरा देरी नही लगाजो ।
देखत राह, बीत न जाए, कल है पड़त न मोहे ॥

(101)

विरह - राग - सूर मल्हार ताल - केहरवा

चमक चमक बिजली चमकारा, अविरल वर्षा आवे ।
कोयल मोर पपीहा बोले, पी की याद सतावे ॥
बरसे वर्षा, बरसे नयनां, तड़पत हिरदय मोरा ।
पी बिन सूना सूना लागे, पर पी तरस न आवे ॥
भयी बावरी, मन न लागे, चैन नही पल पाऊँ ।
राम नाम ही एक सहारा, मन ताही में जावे ॥
हे प्रभु मोरे, सुन लो मोरी, विनय करू तो आगे ।
दर्शन दीजो कृष्ण कन्हैयाई, पीर कलेजा खावे ॥
तीर्थ शिवोम् हे गिरधर लाला, आओ कुंज गली में ।
तुम बिन सूखा व्रज है सारा, जन जन रहा बुलावे ॥

(102)

विरह - राग - भैरवी ताल - केहरवा

प्रेम की पीड़ा, जाग उठो तुम, मन शीतलता पाए ।
जितनी कसक समाए मन में, उतना ही सुख छाए ॥
पीड़ा प्रेम, मिलन का साधन, प्रगटाए मिलवाए ।
मनवा निर्मल शुद्ध करत है, माया दूर भगाए ॥
पीड़ा किरपा, जो जन पावत, छूटे जग संसारा ।
पीड़ा ही प्रभु होत प्रगट है, पीड़ा पंथ दिखाए ॥
पीड़ा सम को साधन नाहीं, सब साधन प्रगटाए ।
पीड़ा बिन सब साधन विरथा, पीड़ा जतन कराए ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, पीड़ा मोहे दीजो ।
मानव जीवन, प्रेम की पीड़ा, मारग सरल बनाए ॥

(103)

विरह - राग - वृन्दावनी सारंग ताल - केहरवा

आए बसा शिवोम् जगत में छोड़ के देस तुम्हारा ।
याद तुम्हारी मन दुखयाए, तुमरा करत विचारा ॥
जग ने पकड़ा, जग न छोड़े, न छोड़ूं मैं जग को ।
बात समझ यह आवत नाहीं, कैसे हो निपटारा ॥
इक पासे मन जगहिं जाए, दूजे याद सताए ।
जग में उलझूं, तुमको ध्याऊं, यह ही करत विचारा ॥
यह ही सोचत उमर विहाई, मैं कुछ कर न पाया ।
अब तो जीवन बीत चला है, नाहीं मिला किनारा ॥
तीर्थ शिवोम् दयालु रघुवर, काय करूं कित जाऊं ।
समझत नाहीं, सूझत नाहीं, पड़ा हूं बीच मझारा ॥

(104)

विरह - राग - पहाड़ी ताल - केहरवा

पिया गये परदेश, खड़ी मैं राह निहारूं ।
न कोई संदेश, पड़ी मैं यही विचारूं ॥
अटके कहां पिया जाय कर, सुध न लेत हमारी ।
मैं तो हरदम पी पी करती, पी को रहत पुकारूं ॥
कह गये आवन आये नहीं, मन से मुझे भुलाया ।
मनवा तो पी बिन न लागे, ले ले नाम गुहारूं ॥
जग विषयन तो काटे, खाएं बिच्छु डंक लगाएं ।
तड़पत रह जाऊं भोगों से, पी पर सब कुछ वारूं ॥
कोई संत मिलाए प्रियतम, राह जो उसका जाने ।
वा संतन के वारी जाऊं, हिरदय वा को धारूं ॥
तीर्थ शिवोम् सजन बिन मोहे, पल भर चैन न आवे ।
रोवत कलपत नीर बहावत, प्रियतम पंथ निहारूं ॥

(105)

विरह - राग माल कौंस ताल - त्रिताल

साजन नैनन माहीं, विराजो ।
पलक पलक मैं पंथ निहारूं, पीड़ा हृदय हटाजो ॥
घिर घिर आई कारी बदरीया, रूप अनेक बनावे ।
सब रूपन में रूप पियाहिं, आपन रूप दिखाजो ॥
हिरदय पीड़ा संभल न पाती, वैद तुम्हीं हो मेरे ।
नाम औषधि पान करूं हूं, दुविधा मुक्त कराजो ॥
तीर्थ शिवोम् रंगीले साजन, अपना रंग चढाओ ।
मैं तो जग बदरंग भयी हूं, चरणी शरणी लाजो ॥

(106)

विरह - राग - मिश्र काफी ताल - केहरवा

बात करो या रहो उदासी, मैं तो हो गई तेरी ।
प्रेम का पंथ यही है साजन, मैं चरणों की चेरी ॥
प्रेमी प्रेम करत ही जावत, कैसा रूख प्रीतम का ।
वह न देखत, वह न सोचत, आश तेरी ही मेरी ॥
प्रेमी देत सकल प्रीतम को, जो कुछ पास हो उसके ।
मन भी, तन भी, जो कुछ मांगे, सभी चरण में ढेरी ॥
आश करे कुछ न प्रीतम सों, प्रीतम के हित लागे ।
प्रीतम सुख ही उसका सुख है, आश न कोई मेरी ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, तुमरी होय चुकी हूँ ।
जैसा राखो, जैसा वरतो, मैं हूँ सदा ही तेरी ॥

(107)

विरह - राग - मालाश्री ताल - केहरवा

भ्रम छाया मेरे मन ऐसा, निकलत नाहीं निकलत नाहीं ।
सदा सदा अन्तर में बैठा, निकलत नाहीं निकलत नाहीं ॥
मुझे घुमाए, जगत फसाए, माया रहत मुझे फुसलाए ।
मैं भी लगी जगत के पाछे, निकलत नाहीं निकलत नाहीं ॥
घर में राखूं, तन में राखूं, मन अपने को जग में राखूं ।
राम चरन ही नाहीं राखूं, निकलत नाहीं निकलत नाहीं ॥
मन को छोड़ कहां को जाऊं, मन भी साथ जहां मैं जाऊं ।
भ्रम को कैसे दूर भगाऊं, निकलत नाहीं निकलत नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, भ्रम जम गयो है अन्तर मोरे ।
लगने देत राह न तोरे, निकलत नाहीं निकलत नाहीं ॥

(108)

विरह - राग - जन सम्मोहिनी ताल - केहरवा

रोते रोते जीवन बीता, अब भी जात रहे रोए ।
गया ज़माना बदल है किन्तु, हम तो जात रहे रोए ॥
नगर मकान दुकान हैं बदले, बदली वायु धरन अकाश ।
देश काल सीमाएं बदलीं, पर हम जात रहे रोए ॥
प्यारा प्रीतम पर न बदला, रहा रूलाए जात अभी ।
शायद मजा इसी में इसको, हम भी जात रहे रोए ॥
हमको लागी मन में ऐसी, बिन प्रीतम आराम नहीं ।
कुछ भी और नहीं कर पाएं, केवल जात रहे रोए ॥
मनवा रोए, अक्खियां रोएं, रोम रोम हमरा रोए ।
प्रेमहिं धड़क कलेजा जाए, हम भी जात रहे रोए ॥
तीर्थ शिवोम् रहूं मैं रोता, रोना मीठा लागे है ।
कोई पत्थर दिल न रोए, हम तो जात रहे रोए ॥

(109)

विरह - राग जयजयवन्ती ताल - भजनी ठेका

मन का चैन गया है मेरा, पी बिन सेज है सूनी ।
दीखत जग में सकल अंधेरा, अक्खियां सूनी सूनी ॥
तड़पत हिरदय, कल न आवे, खोजत फिरती सैंया ।
देख न पाती, पीय कहीं भी, जीवन छाई सूनी ॥
पिया मिले मन शीतल होए, पर पी मिलत है नाहीं ।
खोजूं कहां, कहां पर देखूं, बिन प्रीतम सब सूनी ॥
तीर्थ शिवोम् हे साजन मेरे, मैं हूं दर्द दीवानी ।
तुमरे बिन बेहाल बनी हूं, फिरत हूं सूनी सूनी ॥

(110)

विरह - राग - विभास ताल - केहरवा

चाहूँ कहत कहा न जाए, मन भ्रम रहा जगत भरमाए ।
जैसा होय सो दीखत नाहीं, मिथ्या रूप रहा दर्शाए ॥
सुख सागर अपने है अन्दर, बने भिखारी घूमत हम हैं ।
मन प्रकाश, पर हम अंधियारे, ता ते रहत, रहे घबराए ॥
जब लौं 'मैं' छाया मन अन्दर, तब लौं, तुम दीखत हो नाहीं ।
बिना विलीन भए यह मनवा, क्यों कर जीव, तुम्हें पाए ।
करत जीव है जतन अनेकों, बनने निर्मल, तुमको पाने ।
मन में बैठा गर्व है ऐसा, देत न मिलने, जीव न पाए ॥
जीव बना है गोरख धंदा, न वह सुलझे, न बन पाए ।
आवागमन फसा है मनवा, भ्रम ही रहता, उसे घुमाए ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, भ्रम न छोड़त पीछा मोरा ।
कैसे करूं, कहां कुछ पाऊं, भ्रम है, मन में रहा समाए ।

(111)

विरह - राग गौड़ सारंग ताल - भजनी ठेका

भूल गए कसमें क्यों प्रीतम, अब तो दर्स दिखाओ ।
ध्यान तुम्हारा ही नयनो में, क्यों मोहे तरसाओ ॥
चांद उगे, सूरज भी चमके, दीखत हो तुम नाहीं ।
रात दिवस निकलत ही जाएं, अब आवरण हटाओ ॥
छाया घना अंधेरा हिरदय, सूझत है कछु नाहीं ।
जीवन नैया डूबत जाएं, अब तो मुख दिखलाओ ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, विनय यही चरणों में ।
चला न जाए विरथा जीवन, मेघ कृपा बरसाओ ॥

(112)

विरह - राग - जनसम्मोहिनी ताल - केहरवा

मेरी आंखों में, मेरे दिल में समाजा, आ जा ।
आग दिल में जो लगी, उस को बुझा जा आ जा ॥
कसम तुमको है मेरी, कस्म मेरे प्यार की है ।
हिज्र तेरे में जलूं, राख की ढेरी, आ जा ॥
आखं तुम पर ही लगी, तेरी ही बस आस रहे ।
आस पूरी हो मेरी, दरस दिखा जा, आ जा ॥
अर्ज पल पल मैं करूं, तेरी ही इक याद रहे ।
अर्ज सुन भी लो मेरी, बिगड़ी बना जा, आ जा ॥
तीर्थ शिवो ओम् प्रभु, नज़रे इनायत मुझ पर ।
करम नाचीज़ पह हो, तेरा सहारा, आ जा ॥

(113)

विरह- राग सावरी तोड़ी ताल - केहरवा

विनय करी न जाए मो सों, नाहीं रह सकूं मैं ।
हृदय दिखाऊं कैसे तोहे, नाही कह सकूं मैं ॥
जग जंजाल दुखों का कारण पिण्ड न मोरा छोड़े ।
मोरा मन तोहे संग लागा, पर न कह सकूं मैं ।
जीवन बीता मारग जोहत, पर तुम नाहीं आए ।
बात करूं किस आगे जाकर, बात न कह सकूं मैं ॥
जो तुम मिलते, बात मैं करती, तोहे तरस न आवे ।
छिन छिन पल पल जात घटत है, मुख न कह सकूं मैं ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवंता, तेरी तू ही जाने ।
जो कुछ मोरे हिरदय माहीं, सो न कह सकूं मैं ॥

(114)

राग - भिन्न षड्ज ताल केहरवा

उड़ जा रे, तू उड़जा कागा, कां कां काहे करत है
विरह अगन जले मन मोरे, पी न बात करत है ॥
तू जानत है, तू देखत है, कैसे जलत निरन्तर ।
पर पी वंशी चैन बजावे, ध्यान वह नाही करत है ॥
न तू समझे न पी जाने, न कोई पूछन हारा ।
किसे कहूं मैं विरह मन का, बात न कोई करत है ॥
उड़जा, उड़जा उड़जा कागा, पीय हि बात बताजो ।
जल भुन राख हुई मैं जावत, किरपा क्यों न करत है ॥
तीर्थ शिवोम् उड़ो हे कागा, जाओ पिया घर मोरे ।
विरह दशा ही वरणन कीजो, पल पल याद करत है ॥

(115)

विरह - राग यमन ताल- रूपक

कैसे आ पाऊं मैं तुम पह, क्या बताऊं बालमा ।
रास्ता कोई न सूझे, कह न पाऊं बालमा ॥
जब भी आने का करूं हूं, मुश्कले घिर जाऊं हूँ ।
साथ ताकत छोड़ जाती, बिलबिलाऊं बालमा ॥
क्या खता मुझसे हुई जो, तुम मेरे से दूर हो ।
मैं रहूं हरदम ही रोती, कसमसाऊं बालमा ॥
कुछ तेरा पैगाम नाही, शकल दिखलाते नही ।
मैं जगत में ही पड़ी हूं, तड़पड़ाऊं बालमा ॥
तीर्थ ऐ शिवोम् मेरी, यह है हालत हो गई ।
रूह बिन पिंजर बनी हूं, फड़फड़ाऊं बालमा ।

(116)

विरह - राग - काफी ताल - धुमाली

आहट सुनत ज़रा भी जब मैं, लागे प्रियतम आया ।
आशा जाग उठे मन मेरे, फिर सावन बरसाया ॥
डूबत मनवा जाय उमर है, मन आनन्द समाया ।
तन में उतरत जाय रही थी, आशा दीप जलाया ॥
पिया मिलन का सुख उपजाए, मनहिं आशा जगाए ।
आशा पूरी होवत दीखत, समय अति मन भाया ॥
जब पी आवत नाही मोरा, बुझ है मनवा जाता ।
वही उदासी, वही निराशा, रहत वही अकुलाया ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु हे साजन, बाट तुम्हारी जोऊं ।
कब आओगे मोरे सैंया, मनहिं सोच समाया ॥

(117)

विरह - राग पीलू ताल - केहरवा

भूल गई थी दिनन सुहाने, याद अभी फिर आई ।
वन सुन्दर पर घटा है छाई, ले बरबादी आई ॥
समय था कितना मधुर सुनहरा, रहता मस्त था मनवा ।
अब मन पूछे मोहे यह है, परबत था या खाई ॥
याद ही केवल अब है बाकी, भूला समय जो बीता ।
मन मस्ती है गई कहां पर, जग बन विपदा आई ॥
कहां उंचाई पर मैं बैठी, दीखत दृश्य मनोहर ।
अब तो दीखत तम ही तम है, उतर कहां मैं आई ॥
तीर्थ शिवोम् कहां है दिन वह, ढूंडत मैं फिरती हूं ।
कृपा करो तो वापिस लौटें, बीते जो रघुराई ॥

(118)

विरह - राग - बिलास खानी तोड़ी ताल - केहरवा

काय करूँ ? प्रियतम नहीं मानत ।
पांय पड़त मनाय रही मैं, वह मन में नहीं आनत ॥
मैं तो कुटिल कुबुद्धि नारी, भूली पिया निरन्तर ।
अब तो मनवा पी सों लागा, नहीं दूसरा जानत ॥
साधन करूँ तपस्या भारी, पीया रीझे मोरा ।
अब लौं सफल मनोरथ नाहीं, जल ही रही मैं छानत ॥
कोई बताए मारग मो को, क्यों कर पिया मनाऊं ।
बिन पाए मन चैन न पाए, यही हृदय में ठानत ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, शरण पड़ी हूं तुमरे ।
देयो दिखाए पीया मो को, वह तो नाहीं मानत ॥

(119)

विरह - राग - जीवनपुरी ताल - केहरवा

अब लौं मोर पिया नहीं आए ।
वन में भटकूँ एक अकेली, मारग कौन दिखाए ॥
पथरीला कंटीला मारग, रस्ता एढ़ा टेढ़ा ।
सिर पर आई रात भयानक, समझ कछु नही आए ॥
छोड़ गए पी वन में मोहे, डर बैठा मन माहीं ।
कैसे निकलूं, कहां पह जाऊँ, जिया मोर घबराए ॥
अब हूं बैठी सोच रही मैं, काहे रही अकेली ।
जग के वन में भटक रही हूं, बिना सहारा पाए ॥
तीर्थ शिवोम् पिया जी मोरे, आओ रस्ता देखूं ।
तुम आए मनवा सुख पाए, दुख दुविधा कट जाए ॥

(120)

विरह राग - भीमपलास ताल केहरवा

बंधी है नाव किनारे ऐसी, खोली मुझसे जात नहीं ।
जतन करत पर खुलती नाहीं, गांठ तो खोली जात नहीं ॥
कैसे चाले नाव बंधी यह, कैसे हो मंजिल पूरी ।
जब लौ गांठ है खुलती नाहीं, नाव चलाई जात नहीं ॥
जब तक मनवा जग में उलझा, अन्तर जावत है नहीं ।
जब लौ साधन भजन भी नाहीं, प्रभु तो पाया जात नहीं ॥
जो तू चाहे राम को पाना, मन अन्दर को मोड़ जरा ।
तब ही ध्यान लगेगा तेरा, तब तक पाया जात नहीं ॥
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, जग में मन काहे दीना ।
जग को मन में रखकर अपने, अन्दर जाया जात नहीं ॥

(121)

विरह राग - भिन्नषड्ज ताल - त्रिताल

कांय कांय करत क्यों कागा, पीय संदेशा दीनों क्या ।
पीय विराजे उच्च महल में, याद हमारी कीनो क्या ॥
हम तो निसदिन पियहिं ध्यावे, नयन सदा धारा बहती ।
पी को ध्यान हमारो नाहीं, नाम हमारो लीनों क्या ॥
हमन दीवानी पीय प्रेम की, पीयहिं नाम जपत रहती ।
पर पीया को गरज न कोई, सिमरन हमरा कीनो क्या ॥
अब जाबो पियहिं कह दीजो, प्राण नही रख पावत हैं ।
तुमरे बिना नहीं रस जग में, तुम बिन जग में जीनो क्या ॥
तीर्थ शिवोम् है समझ गई हम, पीय संदेशा न दीनो ।
पी से आश यही थी हमको, सुख मन का हर लीनो क्या ॥

जब हिरदय कोई आन वसे, फिर चैन कहां आराम कहां ।
जब राम न दीखे है जग में, फिर चैन कहां आराम कहाँ ?
जब हरदम ऊठत बैठत भी, पीया ही सन्मुख रहत मेरे ।
प्रतिबिम्ब जगत में पी का ही, फिर चैन कहां आराम कहां ?
जब बादल घिर घिर आते हैं, और पी की याद दिलाते हैं।
बस मन में पी ही बना रहे, फिर चैन कहां आराम कहां ?
जब पुष्प सुगंधित देखत हूँ, हर ओर जगत मे सुन्दरता ।
मैं देखू पी की याद करूँ, फिर चैन कहां आराम कहां ?
है मन मतवाला पीय बिना, कुछ समझत न समझाय रही ।
जब मन ही पास नहीं अपने, फिर चैन कहां आराम कहां ?
हरदम बीतत आहें भरते, है आंखों में भी नींद नहीं ।
अब पीय ही मन पर छाए रहा, फिर चैन कहां आराम कहां ?
हे राम कृपा कर दो अब तो, इस दुखियारी का ध्यान करो ।
तुमरे बिन पल भर को भी न, है चैन कहां आराम
है तीर्थ शिवोम हृदय पीड़ा, तड़पत मन पिया मिलन ताई ।
आदर्श दिखाओ, आन मिलो, है चैन कहां आराम कहां ?

(123)

विरह – राग- कोमल रिषभ आसावरी ताल - धुमाली

तार है टूटी, वीणा मेरी, कैसे उसे बजाऊं ।
सुर तो सुर में रहा नहीं है, कैसे उसे मिलाऊं ॥
हुआ है मन भी मेरा बेसुर, कैसे गा पाऊं मैं ।
मन जब तक सुर में न होवे, कैसे सुर में गाऊं ॥
मन का टूटा तार जुड़े जब, सद्गुरु किरपा होवे ।
टूटा तार प्रकट सुर में तब, जीवन सरस बनाऊं ॥
मन का टूटा तार जगत में, विषय भोग में रमता ।
तार जुड़े जब सद्गुरु किरपा, मगन आनन्द रहाऊं ॥
विष्णु तीर्थ प्रभु तेरी किरपा, तार जुड़े मनवा का ।
जीवन तब ही मधुर मनोहर, सुर में उसे सजाऊं ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा सद्गुरु की, मन का तार जुड़े मेरा ।
तब आनंद ही व्यापे मन में, आत्म रूप हुई जाऊं ॥

(124)

विरह राग - तिलक कामोद ताल - केहरवा

मधुर सुहारे सुन्दर दिन वह, कहां गए वह कहां गए ।
पी संग सेज आनन्द मनाती, कहां गए पी कहां गए ॥
अब तो जग में आन फसी हूं, चारों ओर अंधेरा है ।
दर पी कहीं दिखाई न दे, कहां गए पी कहां गए ॥
रोवत तड़पत आहें भरती, निसदिन पी पी करत रही ।
पीव कहीं न दीखत मोहे, कहां गए पी कहां गए ॥
तीर्थ शिवोम् दुखी दुर्भागिन, पी से बिछुड़ी दुख पाया ।
पीव मिले तब ही सुख उपजे, कहां गए पी कहां गए ॥

(125)

विरह राग - विलासखानी तोड़ी ताल - त्रिताल

भूल गए जो मोहे सैंया, जीवन कैसे जी पाऊंगी ।
चहुं दिशाएं दुख के बादल, दुख यह कैसे सह पाऊंगी ॥
जनम जनम का साथ हमारा, छूट न पाया युगों युगों ।
अब क्यों टूटे ? क्या है कारन ? विरह कैसे सह पाऊंगी ॥
तुम तो जानत सब हो प्रभुजी, क्या है दशा मेरे मन की ।
प्रेम दीवानी साजन तेरी, प्रेमहिं अलख जगाऊंगी ॥
अंगना सूना बिन तेरे हो, यह न मुझे सुहावत जी ।
साफ बुहार के रखा मैंने, दीपक प्रेम लगाऊंगी ॥
प्रेम नगर में वासा मेरा, प्रेम ही खाना पीना जी ।
प्रेम ही ऊठन बैठन सोचन, प्रेम प्रभु के गुन गाऊंगी ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे सैंया, मैं तो चरण दीवानी हूं ।
जो तुम भूले दुखड़ा बरसा, जग में क्या सुख पाऊंगी ॥

(126)

विरह -राग - अहिरी तोड़ी ताल - धुमाली

प्राण पिया तुम क्यों नहीं आवत ।
प्रियतम दर्शन अजहूं न पाया, न ही पाती मो पर आवत ॥
युगों युगों बहु जीवन बीते, सुख दुख पाते पाते ।
रेन दिवस सब निकलत जावे, पर पी मो पर नहीं रिझावत ॥
जग भरमाए मन पतियाए, पड़ी हूं बीच अंधारे ।
पी न आवत दीखत मोहे, जग ही दीखत, जगत बुलावत ॥
तीर्थ शिवोम् है थाके नयनां, देखत रही अघाए ।
कब पी दर्शन होंगे मोहे, सूझ नहीं कछु मो को आवत ॥

(127)

विरह राग - माखा ताल - ध्रुमाली

वेग सुनो साहिबा, डूबत जात रही ।
कोई अपना नहीं, जल में जात रही ॥
काम क्रोध लहर, मोह पवन भारी ।
डोलत नाव मेरी, तुम्हें पुकार रही ॥
कपट पड़त भंवर, अटकी ताही रही ।
बांह देयो मोहे, करत विनय रही ॥
घटत पल पल मोरा, जाय जीवन बीता ।
आओ बचाओ मोहे, जतन करत रही ॥
तुमरा एक सहारा, एक तुमी रखवारे ।
बेड़ा पार करो जी, आँसू बहाय रही ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो, मै हूँ दुखियारी ।
पड़त पांव तेरे, किरपा मांग रही ॥

(128)

विरह - राग - चन्द कौंस ताल - त्रिताल

जो सुख मिलत विरह में तेरे, मिलन में वह तो नाहीं ।
रोवत रहे रात दिन नयनां, मिल के वह सुख नाहीं ॥
तड़पत सिसकत तुम्हें पुकारूं, याद तुम्हारी मन में ।
जो सुख मिलता याद तेरी में, मिलन में वह तो नाहीं ॥
तुम मत आना मेरे प्रभुजी, याद ही अपनी भेजो ।
याद में हरदम सुखी रहूं मैं, मिलन में वह तो नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् मैं रोऊ हरदम, तुझे कभी न भूलूं ।
रोवन में है सुख घनेरो, मिलन में वह तो नाहीं ॥

(129)

विरह - राग मारू विहाग ताल - धुमाली

रही देखत राह प्रभात, नीन्द नहीं आवे रात ।
ध्यान धरूं पी आवन का मैं, होवे कभी प्रभात ॥
रोम रोम पी रूप समाया, सोचत रहूं पिया ही ।
बार बार आहट मन जाए, रहूं पियहिं गात ॥
तड़पत हिरदय, मनवा फड़के, रहत खड़ी ही द्वारे ।
वेला कौन पी आवे मोरा, बीतत सारी रात ॥
सिमरन पिया करत हूं नित ही, जाय नाहीं दूजे ।
छिन छिन पीय ही छाया मन में, करत घात पर घात ॥
भूल गई मैं सुधबुध सारी, जग तो याद न आए ।
ऊठत पी ही, बैठत पी ही, करूं पियहिं बात ॥
तीर्थ शिवोम् लगी सो जाने, दूजे खेल हंसी यह ।
प्रीतम आया अब लौं नाही, बीत उमरिया जात ॥

(130)

विरह - राग - केदार ताल - केहरवा

रूठ गए क्यो प्रीतम मो सों, चूक हो गई है क्या मो सों ।
रही मनावत, रही रिझावत, मन मे रोष क्या है मो सों ॥
अम्बवा डाल कोयलिया बैठी, कू कू करत बुलावत तोहे ।
धड़क हृदय है मोरा जावत, दूर भये तुम हो क्यो मो सों ॥
गेंदा मोगर फूल खिले, दीखें सुन्दर, जगत लुभावत ।
ऐसे में भी बुझा बुझा मन, छूठा मारग क्यों है मो सों ॥
तीर्थ शिवोम् है खोजत नयनां, केवल तोहे प्रीतम तोहे ।
आओ दर्श दिखाओ मोहे, परदा कैसा प्रीतम मो सों ॥

(131)

विरह - राग - पट्ट दीप ताल - धुमाली

नयनन नींद कहां से आवे, जीय मोरा अकुलावे ।
मनवा तो है पी संग लागा, भाग वहीं पर जावे ॥
नयनन में तो पीव समाया, पीव ही जग में दीखे ।
नींद कहां नयनन में जावे, पीव ही बैठा पावे ॥
जग में देखूं पीव समाया, पीव ही रूप अनेकों ।
कण-कण व्यापक पीव मेरा है, क्यों मनवा भरमावे ॥
नयन न झपकूं, न मैं मूंदूं, आ के चला न जावे ।
दिन राती, जागत रह जाऊं, नींद ठगी रह जावे ॥
ऐसी दशा भई नयनन की, न सोये न जागे ।
लगे रहत है राह पह नयनां, कहीं पीव दिख जावे ॥
तीर्थ शिवोम् ऐ मेरे नयनां, प्रेम का यह ही फल है ।
मन न चैन, नींद न आवे, पीर कलेजा खावे ॥

(132)

विरह - राग - शुद्ध कल्याण ताल - केहरवा

जगत में ऐसो कोई नाहीं, जो समझ लेय दुख अपनो ।
जब तें मैं प्रीतम बिसराया, सुख तो हुई गयो सपनो ॥
साजन भूला, सुध बुध बिसरी, विषयन में मन लागा ।
अब जो समझ परी कछु मोहे, विरह ही तप तपनो ॥
साजन का सुख पाय रही थी, हरदम हृदय आनन्दित ।
बन बन डोलूं खोज पिया मैं, केवल नाम ही जपनों ॥
तीर्थ शिवोम् भयी दुखियारी, बिन पी मन न लागे ।
प्रभु बिना जीवन में रस न, प्रभु बिना सब खपनो ॥

(133)

विरह-राग- मिश्र खमाज ताल - ध्रुमाली

सावन आया, बरसे पानी, उपवन रंग रंगीले ।
मनवा तो मेरा मुरझाया, अब लौं पीय नहीं मिले ॥
कारी बदरिया आए आए, पी संदेश सुनाए ।
रहो निहारत मारग तुम तो, नयनन राखो गीले ॥
कब लौं पी मैं रस्ता देखौं, अक्खियां मोरी थाकी ।
आवन कहत रहे न आवत, नयन भी मोरे छीले ॥
रख सजनी तू पीय मिलन की, आशा मन में अपने ।
कभी तो भाव उठे पी मन में, तरफ तेरी वह हो ले ॥
तीर्थ शिवोम् मेरी मजबूरी, कर न सकत कछु भी ।
केवल पी को अर्ज गुजारूं, विनती मेरी सुन ले ॥

(134)

विरह - राग - देवरंजनी ताल - दीपचन्दी

जीवन बीत चला है अब तो, प्रीतम मिला मुझे न ।
भोग विषय ही रहा लुभाना, जीवन सफल मुझे न ॥
रुत जावत रुत आवत रहती, मनवा बदल न पाया ।
जैसे का वैसा ही हिरदय, आया चैन मुझे न ॥
चंचल बना भटकता फिरता, जगत वासना डूबा ।
अब न अवसर पास मेरे है, अन्तर ज्ञान मुझे न ॥
रहे बुलावत प्रीतम मोहे, आया पास न मेरे ।
दूर दूर से करत इशारे, प्राप्त मिलन मुझे न ॥
तीर्थ शिवोम् यह जीवन नैया, डूबत जाय रही है ।
मिले कोई जो पार उतारे, खेवनहार मुझे न ॥

(135)

विरह- राग - झिंझोटी ताल - केहरवा

जिन पी मिला सखी बड़भागी, सेज पिया की पाई ।
सुख अतीव मिलन का पाया, मन मुराद तिन पाई ॥
उछलत है आनन्दित मनवा, नही आनन्द समाए ।
दुख जगत के मार भगाए, पीड़ा सब की जाई ॥
छकी रहे मस्ती में हरदम, पी ही सन्मुख दीखे ।
नित्य विराजें संग पिया के, पी ने गले लगाई ॥
आस मिलन की पूरी होई, आस न कोई बाकी ।
अब तो पी संग रहत सदा ही, विरह अगन बुझाई ॥
तीर्थ शिवोम् रही मैं अब तक, आस ही आस लगाए ।
मिलसी कब पी मेरा आए, तपश हृदय की जाई ॥

(136)

विरह- राग- जय जयवंती ताल - दीपचन्दी

प्रभुजी छोड़ कहीं न जाना ।
नारी अबला, बल कछु नाही, तोहे ही सब माना ॥
तुम समर्थ हो मेरे प्रभुजी, मैं गुण हीन अजानी ।
तोहे छोड़ कहां मैं जाऊं, देखा जगत जमाना ॥
कृपा बनाए राखो मो पर, किरपा एक भरोसा ।
दुखिया शरणीं आन पड़ी है, मन से नहीं भुलाना ॥
हिय में राखूं, नयनन देखूं, तुमरे संग चलूं मैं ।
नाम जंपू, तुमरा यश गाऊं, मो से नहीं छुड़ाना ॥
तीर्थ शिवोम् विनय यह तो सों, ध्यान रहे नित मोरा ।
चरणी रहूं समायी हरदम, भटक कहीं न जाना ॥

(137)

विरह -राग - भिन्नषड्ज ताल - केहरवा

बिसर गए क्यों मोहे, प्रभुजी, बिसर गए क्यों मोहे ।
मैं तो दासी जनम जनम की, याद करूं नित तोहे ॥
तुम बिसराए, जग बिसराया, न कोई पूछनहारा ।
मुंह को मोड़ लेत हर कोई, बीती कहूं यह तोहे ॥
तुम तो दीन दयाला गिरधर, होत सहाई सबके ।
मो से फिर क्या भूल भई है, मो बिसराया काहे ॥
मो सम कौन दुखी है जग में, विषयन माहीं उलझी ।
आओ करो सहाय प्रभुजी, करत विनय हूं तोहे ॥
तीर्थ शिवोम् पड़त हूँ तोरे, बार बार चरणों में ।
आओ प्रभुजी मोहे उबारो, करत पुकार हूं तोहे ॥

(138)

विरह राग - सावरी तोड़ी ताल - भजनी ठेका

आंख मिचौनी क्यों खेलत हो, मुझ दुखियारी संग पिया ।
मैं तो बिन तेरे मुरझाई, खेल करत क्यों संग पिया ॥
ज्यों तारे हैं टिम टिम करते, दिखते छिपते तुम रहते ।
दर्श दिखात नहीं क्यों मोहे, रास रचात न संग पिया ॥
ठीक है मैं हूँ कुलटाचारी, जनमो जनम रही विसरे ।
पर अब तेरी प्रेम दिवानी, रहो निरन्तर संग पिया ॥
तुमको पर है तरस न आए, करत तमाशे साथ मेरे ।
मैं तो जलती अगन विरह में, आय विराजो संग पिया ॥
तीर्थ शिवोम् पड़त हूँ पैयां, खमां करो प्रभु खमां करो ।
जग तो सारा देख चुकी हूँ, तुम न छोड़ो संग पिया ॥

(139)

विरह राग - जोगिया ताल - कव्वाली ठेका

बंधन तोड़ जगत के सारे, आई तुमरे द्वारे ।
अब तो दर्शन देयो प्रभुजी, सुन लो कृष्ण मुरारे ॥
द्वारे घर, कीनो दासी ने, धूनी रहत रमाए ।
कभी पुकार सुनोगे प्रीतम, जावत रहत पुकारे ॥
नाम तेरा नित करूं हूं, तुमरा ध्यान धरूं हूं ।
यश तेरे का गान निरन्तर, छोड़ जगत विस्तारे ॥
अब तो सुनलो, अब तो सुन लो, करत पुकार दुखी मैं ।
चरण शरण का सुख मैं पाऊं, खोलो बन्द किवारे ॥
तीर्थ शिवोम् कृष्ण धनश्यामा, मो निराश मत कीजो ।
मैं तो जनम जनम से तुमरी, भटक फिरी जग सारे ॥

(140)

विरह- राग- मारू विहाग ताल- केहरवा

कब मिलसी मेरा प्रभु आए ।
दसों दिशाएं घूमत फिरती, मनवा चैन न पाए ॥
भूख न, प्यास, नींद नहीं आवत, बनी हूं मैं मतवाली ।
हूं हरदम राह तेरा ही देखूं, कल न हृदय रहाए ॥
जग दुखियारी, हूं मति मारी, मनवा कुटिल बड़ो है ।
तुमी बचावनहारा प्रभुजी, सुनो विनय तुम आए ॥
जानूं कुछ न मैं तो प्रियतम, अर्पण सकल है मेरा ।
मुझे बचाओ, मुझे संभारो, तड़पत हृदय रहाए ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे बनवारी, अब की बार हमारी ।
दयावन हो दर्शन दीजो, लीजो चरण लगाए ॥

(141)

विरह -राग -पीलू ताल - केहरवा

प्रभुजी ! जियड़ा कैसे लागे ।
तुम तो मोहे नहीं निहारत, मनवा तुमहिं भागे ॥
मन में तो तुम एक समाए, दुजा भाए नाहीं ।
तुमरे दर की आस है पकड़ी, ठौर- ठौर क्यों भागे ॥
राम दुहाई मेरे प्रियतम, तुम से नेह लगे है ।
एक ही साजन एक ही अपने, एको छोड़ क्यों भागे ॥
तुमहीं दीनदयाल प्रभुजी, तुम ही राखन हारे ।
मैं तो नारी दुख की मारी, तुमरे ही दर भागे ॥
अब तो सुन लो विपदा मोरी, विरहा तोर सताए ।
हरदम तुमरे ही मन लागा, अब तक नयन अभागे ॥
तीर्थ शिवोम् शरण में तोरी, छोड़ कहां मैं जाऊं ।
आश सभी तुम्हीं पह मोरी, और नहीं मन भागे ॥

(142)

विरह- राग - धानी ताल - केहरवा

उपवन में जब कोयल बोले, पी की याद सतावे ।
गरजन बादल का जब सुनती, धड़क कलेजा जावे ॥
जब से गया पिया परदेश, न पाती मो पर आई ।
देखूं हूं दिन रात, कहीं कुछ, वह लिख पावे ॥
हृदय कमल मुरझाय गया है, नयनन अविरल धारा ।
निसदिन पी ही याद करूं मैं, पी न दर्श दिखावे ॥
तीर्थ शिवोम् पिया हे प्यारे, कबलों द्वारे ठारूं ।
पांओ सूजे मनवा थाका, अंग अंग शिथिलावे ॥

(143)

विरह-राग - तोड़ी ताल - दीपचन्दी

बात सुनत न कोई मोरी, तू ही सुननेहारा ।
तू ही दाता, सकल विधाता, किरपा करने- हारा ॥
हूं मैं विपद पड़ा दुखियारा, मारग सूझत नाही ।
हाथ जोड़ हूं शरण तिहारी, कष्ट निवारन हारा ॥
जब संतन विपदा ने घेरा, आय करी रखवारी ।
मेरी बेर देर क्यों लाई, तू ही काढन हारा ॥
मैं तो अबल नीरीह अभागा, पापी नीच कुकर्मी ।
तुम तो दीन दयाला गिरधर, पार करावनहारा ॥
अब की टेर सुनो प्रभु आए, तीर्थ शिवोम् पुकारे ।
डूबत जात है गहरी नदिया, विपदा मेटन हारा ॥

(144)

विरह- राग - अड़ाना ताल - केहरवा

सुख की आशा मन मे लेकर, आई द्वारे तेरे ।
दुख भी बाहर खड़े द्वार के, साथ हो लिए मेरे ॥
सुख के साथ जुड़े दुख भारी, अनुभव होत न सुख का ।
ऐसा पड़ा यह दुख है पीछे, संग बना नित मेरे ॥
बाहर रहे द्वार के ही दुख, क्या मैं करूं उपाय ।
तुमरे पास अकेली आऊं, सुख ही संग हो मेरे ॥
तुम आनन्द स्वरूपा साजन, पास न आवत दुख ।
कैसे बने रहत हो निर्मल, भेद बताओ मेरे ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा ही तेरी, सुख उपजाय सकत है ।
जुगती एक यही मैं जानूं, और न आवत मेरे ॥

(145)

विरह - राग - सांरग ताल -केहरवा

रात कटत है तारे गिन गिन, याद पिया की आवे, छिन छिन ।
हिरदय मोर रहा अकुलावत, ध्यान धरूं पी का मैं निसदिन ॥
पीय समाया हिरदय माही, निकलत नहीं निकाले हिय सों ।
ऐसा पीव बसा अन्तर में, हृदय- पटल पर परगट निसदिन ॥
जैसे नदिया बहत निरन्तर, याद पिया न जाए मन सों ।
पल भर भूले नही हृदय सों, रहत बनी ही वह है निसदिन ॥
कभी याद का मैं सुख पाऊं, कभी याद में मैं अकुलाऊं ।
कभी याद में जलती जाऊं, रूप दिखावत याद है निसदिन ॥
तीर्थ शिवोम् पिया हे रघुवर, याद पिया संजोए राखूं ।
याद तेरी ही धन बल मोरा, याद रहे हिरदय में निसदिन ॥

(146)

विरह- राग - मिया मल्हार ताल - केहरवा

उमड़ बदरिया नैनन आई, बरसें अक्खियां छिन छिन ।
हिरदय छलकत प्रेम रह्यो है, अंगवा फड़के छिन छिन ॥
याद पिया की आवे निसदिन, तड़पत हूं दिन राती ।
काय करूं मन लागत नाहीं, फफक उठत है छिन छिन ॥
ज्यों सजनी उठ उठ कर देखे, राह पिया आवन का ।
तैसी गति भयी है मोरी, देखत बाट हूं छिन छिन ॥
कब आवेंगे सैयां मोरे, कब उजियाला होगा ।
कब चमके सूरज आकाशे, देखत अवसर छिन छिन ॥
तीर्थ शिवोम् उदासी मन में, सुख भी साथ समाया ।
सुख - दुख संगम हिरदय मोरा, अनुभव करत हूं छिन छिन ॥

(147)

विरह - राग पहाड़ी ताल - दीपचन्दी

रो रो बिताऊं रतियां, पर पी तरस न खाए ।
मै तड़पती हूं रहती, पी को तरस न आए ॥
पी के गले लगी थी, पी संग ही विराजूं ।
अब तो पिया न देखूं, पी को तरस न आए ॥
रस्ता पिया निहारूं, पर पीय नाहीं देखत ।
हारी करत जतन मैं, पी को तरस न आए ॥
है चूक क्या भयी कुछ, इतनी बड़ी सजाएं ।
मांगत क्षमा पिया से, पी को तरस न आए ॥
तीर्थ शिवोम् प्यारे, अब खाओ तरस मो पह ।
तुम तो हो मुक्त साजन, रह मन है थिर न पाए ॥

(148)

विरह - राग - आसावरी ताल - केहरवा

झरी लगी अंसुवन की नयनां, झरना बहत निरन्तर ।
चरण पखारूं प्रीतम तोरे, मन में प्रेम निरन्तर ॥
कसक हृदय में, प्रीत हृदय में, रहत प्रेम ही डूबी ।
बिन प्रीतम हूं भयी बावरी, देखत राह निरन्तर ॥
जाओ बादर प्रेम संदेशा, कहो पीव प्रीतमहिं ।
जोबन जीवन पल पल जाए, घटत है जात निरन्तर ॥
दिया भुलाए काहे मोहे, मैं तो प्रेम पिआसी ।
एक बूंद जल प्रेमहिं पाऊं, मनवा तृप्त निरन्तर ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवंता, मैं पापिन पर अबला ।
दर तेरे मैं आन गिरी हूं, रोवत रहत निरन्तर ॥

(149)

मन - राग दरबारी ताल - दादरा

मैं मनाता रहा, पर मन मेरा माना नहीं ।
जगत का तो हाल जाना, अपना कुछ जाना नहीं ॥
जगत के तो गीत गाए, मैं लुभाता जग रहा ।
अपने गुण न जान पाया, अपना कुछ गाना नहीं ॥
मैं जगत में दोष को ही, खोजता बस रह गया ।
देख पाया दिल न अपना, अपना मन छाना नहीं ॥
जगत तो शेखी बघारे, बात बढ़ चढ़ कर करे ।
जब समय आए करन का, घर में इक दाना नहीं ॥
न कोई जग में किसी को, पूछता कुछ भी कहीं ।
घर में, सड़क पर, या कहीं, दादा नहीं, नाना नहीं ॥
तीर्थ हे शिवओम् अब, जाऊं कहां पूछूं किसे ।
अब किसी के पास भी, जाना नहीं आना नहीं ॥

(150)

मन - राग- भूप ताल - भजनी ठेका

अब काय करूं कित जाऊं, मनवा मानत नाहीं ।
भली बुरी और खोटी साची, वह कछु जानत नाहीं ॥
जग का रंग चढ़ा है ता पर, वा में ही सुख माने ।
धर्म अधर्म कुकर्म न जाने, सीख वह मानत नाहीं ॥
जग की बातें, जग की घातें, जग में ही रस उसका ।
जगत रूप बना मेरा मनवा, प्रभु कौन? वह जानत नाहीं ॥
विषय भोग में ऐसा उलझा, और न कछु सुहावे ।
यह न जाने सुख आतम का, सार विषय, वह जानत नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, अब तो समझ भी जाओ ।
जग में काहे दुख पावत है, मिथ्या जग है, जानत नाहीं ॥

(151)

मन- राग - तिलंग ताल - केहरवा

मनवा क्यों नहीं छोड़त पीछा ।
मैं समझाऊं, तुझे रिझाऊं, प्रेम से तुझे मनाऊं ।
फिर भी लगा तू ऐसा पीछे, हरदम करता पीछा ॥
मुझे सताए मुझे रूलाए, पटकाए भरमाए ।
बार बार भटकाए मोहे, पर न छोड़त पीछा ॥
चार दिनों का यह जग मेला, जिसमें तू भरमाया ।
मुझे लुभावत इन भोगन में, रहत करत है पीछा ॥
राम भजन में क्यों नहीं जाए, अनुपम सुख पाए तू ।
तू भरमाया जग के पाछे, मेरा करत है पीछा ॥
तीर्थ शिवोम् हे चंचल मनवा, हूं समझावत तोहे ।
राम भजन में लग जा मूरख, छोड़ तू मेरा पीछा ॥

(152)

मन -राग - जै जैवन्ती ताल - धुमाली

भ्रमित भ्रमित जग में भरमाया, भूला गंध कमल की ।
अन्तर में तम छाया ऐसा, भूला चरण कमल की ॥
जगत समाया मन में ऐसा, दृढ़ परिपक्व बना है ।
काढे नहीं निकलत मन से, भूला चरण कमल की ॥
मैं समझाऊं उसे मनाऊं, मन है मानत नहीं ।
मनवा ऐसा भ्रमित है जग में, भूला चरण कमल की ॥
चरण कमल के क्या गुण गाऊं, अनुपम अनंद अनूठा ।
मनवा कुछ तो सोच ज़रा तू, भूला चरण कमल की ॥
अब भी कुछ तो बिगड़ा नहीं, चेते तू मन लावे ।
सुख अनन्त तू छोड़े काहे, भूला चरण कमल की ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, अब भी सोच समझ तू ।
डूबत रहा जगत माहीं, भूला चरण कमल की ॥

(153)

उद्धोधन - राग - गौड़ सारंग ताल - केहरवा

राम सिमर तू मूरख मनवा, राम नाम क्यों सिमरत नाहीं ।
राम नाम है सुख अनन्ता, ता ही में क्यों भीगत नाहीं ॥
राम नाम सगले दुख मेटे, राम नाम भव बंधन काटे ।
राम नाम हो निर्मल मनवा, राम चरण क्यों पकड़त नाहीं ॥
भाग रहा तू जग भोगों को, भूल रहा तू राम प्रभु को ।
राम भजन बिन मुक्ति नाहीं, राम गुणन क्यों गावत नाहीं ॥
राम जपे न, दुख पावेगा, पकड़ तुझे यम ले जावेगा ।
हाहाकार सुने न कोई, राम धाम क्यों धावत नाहीं ॥
लम्बी तान रहा तू सोए, छिन छिन यौवन बीता जाए ।
पर है होश तुझे न आए, शरण राम क्यों लागत नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् चेत जा अब भी, नहीं तो जीवन निकला जाए ।
रह जाए पछताए फिर तू, नाम हरि क्यों लेवत नाहीं ॥

(154)

उद्धोधन - राग - पटदीप ताल - केहरवा

ज्ञानी पावत निकट हरि को, मूरख समझत दूर उसे है ।
हरि व्यापक सर्वत्र समाना, पर दिखत भरपूर किसे है ॥
रहत सदा लिव लाई हरि ही, मनवा जा का निर्मल होवे ।
हरि प्रकट हो ताके अन्तर, फिर वह नाहीं दूर उसे है ॥
काम क्रोध में जा मन लागा, लोभी सदा जगत विषयन का ।
रहत मलिन है मनवा ता का, हरि सदा ही दूर उसे है ॥
मनवा निर्मल कर हे भाई, हरि चरण में नेह लगा ले ।
सांस सांस हरि नाम धिआवे, हरदम पास न दूर उसे है ॥
तीर्थ शिवोम् दयालु प्रभुवर, सबके अन्दर सबके पालक ।
हर घट रहे लगाए आसन, जो नहीं देखे दूर उसे है ॥

(155)

उद्धोधन - राग - तिलक कामोद ताल - भजनी ठेका

अन्त वेल जो सुमरे हर को, जाए मिले हर ही के माहीं ।
माया बंधन टूटे सब ही, बूंद मिले सागर के माहीं ॥
आन जान की फेर लगी जो, छूटे जात -यह झगड़ा सारा ।
होत प्रभु परगट है ता पर, फंद कटे पल ही के माहीं ॥
पर यह कठिन बहुत है भाई, जब लौं कृपा प्रभु न होवे ।
चंचल मनवा जगहिं घूमत, जात नहीं वह चरणों माहीं ॥
किरपा अभिमुख मन को राखो, यह ही ज्ञान यही है भगती ।
न जाने कब होत दयालु, होत कृपा किस पल के माहीं ॥
तीर्थ शिवोम् हरि गुण गाओ, मन आनन्द सदा सुख पाओ ।
हरि भगती, हरि सुमिरन लागा, जावत अन्त हरि घर माहीं ॥

(156)

उद्धोधन - राग कल्याण ताल - केहरवा

मन चंचल है, मति है खोटी, कैसे सिमरन होवे ।
पल भर भी मन थिर नहीं रहवे, कैसे भगती होवे ॥
मन निर्मलता सबसे पहले, तो ही मनवा ठहरे ।
तभी राम सिमरन हो पावे, नहीं तो कैसे होवे ॥
घट घट प्यारा राम वसत है, देखत नाहीं जीवा ।
मन चंचलता दूर हटे न, कैसे दर्शन होवे ॥
राम ही मनवा निर्मल करता, राम करावे भगती ।
राम कृपा बिन थिरता नाहीं, कैसे किरपा होवे ॥
अर्पण मनवा राम कृपा के, अर्पण सकल पसारा ।
अर्पण मेरा तेरा सब ही, तो ही किरपा होवे ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, अर्पण राम तू हो जा ।
बेड़ा राम लंघावे नदिया, दूर अविद्या होवे ॥

(157)

उद्धोधन - राग - कलावती ताल - केहरवा

जब भी भीर पड़ी है मो पर, साथ न कोई आयो ।
सब ने उलटी बात कही है, मनवा मोर दुखायो ॥
सब तो लोभी स्वारथमय है, अपना लाभ ही सोचे ।
तू काहे मन दीनों या में, अपना जनम गवायो ॥
भवन बनाए, महल बनाए, ता को खुब सजायो ।
अन्त समय जब वेला आई, पल भर ठहर न पायो ।
जग का नहीं भरोसा कोई, कब यह दूर भगाए ।
जितना लागो इसके पाछे, दूर सदा ही छायो ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, राम ही एक सहारा ।
ताही शरण गहो हे मूरख, साथ सदैव निभायो ॥

(158)

उद्धोधन - राग रामकली ताल - धुमाली

अब क्या सोच करे मन मूरख, दीन दयालु दिया भूलाना ।
घर परिवार सकल संसारा, इनको अपना कर तू माना ॥
तोरा संग कभी न इन सों, यह तो सब ही हैं परदेसी ।
इक दिन छोड़ इन्हें तू जाए, जग में कुछ भी नहीं है पाना ॥
सोचत सोचत गई उमरिया, अब तू क्या है सोचत मनवा ।
बाकी जीवन निकलत जाए, जग में कुछ भी नहीं है पाना ॥
जाग उठो अब जाग उठो रे, वेला तो बीतत ही जाए ।
अवसर मिला अमोलक तोहे, क्यों जग माहीं रहा फसाना ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु किरपालु, बेड़ा सबका पार उतारे ।
जो जग ताकी शरण गहे है, वह नासहीं फिर जग उलझाना ॥

(159)

उद्धोधन - राग- हमीर ताल - धुमाली

शब्द अमीं अस्नान करो, है गंगा बहत रही अन्तर में ।
सुख है रहा समाए तेरे, काहे दुखिया तू अन्तर में ॥
रहे बरसता बादल हरदम, भीगे संत जना ता माहीं ।
तू सूखा क्यों रहत है पगले, सुख न पावे तू अन्तर में ॥
पीव तेरा अन्तर में वासा, तू ही रहा अछूता उससे ।
देख रहा न पी तू अपना रहा, लूभाए तू अन्तर में ॥
तीर्थ शिवोम् है मनवा मोरे, सुख का सागर तेरे अन्दर ।
फिर तू काहे फिरे पिआसा, जल नहीं पीवत तू अन्तर में ॥

(160)

उद्धोधन- राग - भैरवी ताल - केहरवा

मुख सों कहे तू राम नाम है, मनवा तो विषयन दीनों ।
बाहर से तो भगत बने है, अन्तर्मन भोगन दीनों ॥
नाम जपे और जग को मांगे, हरि सिमरन यह नाहीं ।
सिमरन है हरि प्रेम कराए, तन मन सब हरि हिं दीनों ॥
जग जंजाल छोड़ तू मनवा, काहे दुखड़ा पावे ।
हरि के चरन पकड़ तू मूरख, सुख अनुपम मन में लीनों ॥
मनवा क्यों थिर बैठे नाहीं, तू हरि नाम जपे न ।
हरि सिमरन ही सुख घनो है, विषयन मनवा क्यों दीनों ॥
न सुख मिले जगत में कबहूँ, चंचलता दुख कारन है ।
ऊठत बैठत नाम हरि ले, मन में बात समझ लीनो ॥
तीर्थ शिवोम् हे भोले मनवा, कुछ तो मन में सोच जरा ।
मानुष जनम अमोलक पायो, कुछ भी लाभ नहीं लीनों ॥

(161) उद्धोधन

राग - भीमपलास ताल - भजनी ठेका

नौ दरवाजे खोल के बैठा, पंछी कब उड़ जाएगा ।
क्या जाने आकाश उड़े वह, मिल भी फिर वह जाएगा ॥
इसका आना जग में मुश्किल, जाना तो है सरल बड़ा ।
फिर भी कीमत न यह पाए, अन्त समय पछताएगा ॥
जग में आकर जम के बैठा, जैसे घर ही यह तेरा ।
काल की लाठी सिर पर घूमे, वक्त पड़े उठ जाएगा ॥
ऊंचे ऊंचे महल बनाए, पाप ही कर्म कमाए हैं ।
साथ न जाए कुछ भी तेरे, छोड़ यहीं सब जाएगा ॥
फूला फिरे वृथा ही जग में, गर्व करे धन दौलत का ।
धन तो केवल छाया जैसा, जनम अकारथ जाएगा ॥
तीर्थ शिवोम् भजन कर बन्दे, इसमें ही सुख जाएगा ।
बाकी सकल खेल है माया, हाथ ही मलता जाएगा ॥

(162)

उद्धोधन- राग - विलास खानी ताल - धुमाली

मनवा धीर धरत क्यों नाही ।
चंचल होकर, जग में भटके, देखत अंतर नाही ॥
धीर होय, चंचलता जावे, हरि चरणन मन लागे ।
दीखत भोग लुभाने अति ही, पर थिरता है नाही ॥
धीरज धरे, तो ही सुख पावे, आशा तृष्णा त्यागे ।
माया डाकिन छोड़ के मनवा, भजन करत क्यों नाही ॥
तीर्थ शिवोम् रहा समझाए, अब भी समझ पियारे ।
हरि भजन बिन है सुख नाही छोड़त भ्रम क्यों नाही ॥

(163)

उद्धोधन राग - मिश्र भीमपलास ताल - दीपचन्दी

जीव पड़ा करमन के माहीं ।
बिना भोगे छुटकारा नाही, मिलत भी मुक्ति नाही ॥
करमन एक भंवर है ऐसो, जग नदिया में घुमत ।
पाना पार, बिना हरि किरपा, जीव सकत है नाही ॥
हारे करत तपस्या तपसी, पार किसे न पाया ।
करमन गति नियारी ऐसी, देत मिलन हरि नाही ॥
करो कृपा हे हरिहर प्रभुजी, करमन मुक्ति पाऊं ।
तुमरी किरपा, लांघ सकत हूँ, सकत जात है नाही ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, छोड़ जगत, दर तेरे ।
जग में दूजा दीखत मोहे पर न देखत तोही ॥

(164)

उद्धोधन राग - भूपाली तोड़ी ताल - केहरवा

मन चंचलता त्यागे साधो, तभी परम गति पावेगा ।
जग से न्यारा है परमेश्वर, जग में क्योंकर पावेगा ॥
चंचल मन ही जग में खोजे, नाम रूप है प्रकटाता ।
अन्तर्मुखता ही अपनाकर, पार ब्रह्म को पावेगा ॥
ऐसी गति है पार ब्रह्म की, देव जहां है न देवी ।
पैगम्बर अवतार न कोई, धूप छांव नहीं पावेगा ॥
जगत विषय है चंचलता का, ब्रह्म जगत में है नाही ।
जगत विलीन भया है नाही, कैसे ईश्वर पावेगा ॥
विष्णुतीर्थ प्रभु ब्रह्म रूप हो, चंचलता मन में नाही ।
तुमरी दया कृपा से ही तो, तीर्थ शिवोम् भी पावेगा ॥

(165)

उद्धोधन- राग - चन्द्रकोस ताल - त्रिताल

विप्र प्रभु का भक्त है सांचा ।
लागा रहत निरंत भगती, त्यागत जगत विषय सब काचा ॥
आशा द्वेष रहित हो मन में, हित चिन्तन सब जीवों का ।
कर्म भूमि ही जग को मानत, करत कर्म जो केवल साचा ॥
वह अपमान मान नहीं देखत, इन्द्रिन सदा ही वश में।
विद्या संचित, विद्या बाटंत, ज्ञान ध्यान सकल ही साचा ॥
प्रभु प्रकाशित अन्तर माहीं, होय अलोकित अन्तर सारा ।
रहे आनन्दित मनवा हरदम, सन्मुख रहत सदा प्रभु साचा ॥
तीर्थ शिवोम् विप्र जो ऐसा, करत प्रणाम उसे मैं ।
साचा भगत बनाओ प्रभुजी, साचा नाम सदा ही साचा ॥

(166)

उद्धोधन- राग - विभास ताल - त्रिताल

चाहत प्रभु भला जग सारा ।
सगले जीव चले जो मारग, कोई न बाकी दुख का मारा ॥
नाम जपे और नाम अलापे, मस्त रहे मन से मन माहीं ।
निर्मल कर के मनवा अपना, पार होए जग संकट सारा ॥
अन्तर वाणी सुने प्रभु की, नेक कर्म ही केवल करता ।
इच्छा द्वेष राग सब त्यागे, हो जाए भवसागर पारा ॥
प्रभु खोजत है जीव जगत में, मन को निर्मल करने ताई ।
साधन भजन सभी उपजाए, हो जावे जन का निस्तारा ॥
जीव लेत न सीख प्रभु की, न ही आदर करत है चाहत ।
ताही रहत है डूबत जल में, होवत दुखी सहित परिवारा ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, शरण में अपनी लीजो मोहे ।
मारग तुमरे चलूं निरंतर, न छूए जग का विस्तारा ॥

(167)

उद्धोधन- राग - मिश्रदरबारी ताल - केहरवा

प्रभु भगती जीवन में नाहीं, मृत्यु समय करेगा क्या तू ।
अर्ज गुजारे क्या प्रभु आगे, मन हरि नाम भरेगा क्या तू ॥
मन थिर जो भक्ति में नाहीं, अन्त समय हरि याद न आवे ।
जगत विषय ही परगट सन्मुख, अन्तर्द्वन्द लड़ेगा क्या तू ॥
माया बंधन बहुत ही तगड़ा, या ते पिण्ड छुड़ावन मुश्किल ।
जब हरि नाम नहीं है संबल, माया ठगनी हटेगा क्या तू ॥
अब भी सोच जरा तू मन में, जग उलझन में भटक रहा तू ।
जो नहीं तैयारी कीनी, यह सब पार पड़ेगा क्या तू ॥
गुरु शरण ले मूख मनवा, गुरु अनुग्रह साथ तेरे ।
गुरुदेव की नाव पकड़ तू, बिन गुरु नाव तरेगा क्या तू ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, हरदम भगती मुझे कराओ ।
निश्चल भगती, प्रेम निरन्तर, इन बिन कैसे करेगा क्या तू ॥

(168)

उद्धोधन- राग - झिंझोटी ताल - केहरवा

साधन होत है जीवन में ही ।
जीवन में ही लाभ है मुक्ति, मन निर्मलता जीवन में ही ॥
जो समझे मोए पर मुक्ति, वह तो भूल करत है भारी ।
मरे उन्नति संभव नाहीं, वह तो संभव जीवन में ही ॥
जीवन श्रद्धा, जीवित शंका, जीवित साधन देत गुरु है ।
जीवित ही सब कर्म कमावे, पाप पुण्य सब जीवन में ही है ॥
कर्म भोग, सब कर्म जो संचित, जीवन में ही करत सभी ।
मुक्ति लाभ भला फिर कैसे, क्यों फिर न हो जीवन में ही ॥
तीर्थ शिवोम् जतन कर मनवा, जीवन तेरा सफल बने जो ।
किरपा मिले प्रभु की तोहे, होत है किरपा जीवन में ही ॥

(169)

उद्धोधन- राग - धानी ताल - केहरवा

निन्दक ! भला करे भगवान, तुम्हारा भला करे भगवान ।
मेरे हितकारी सच्चे, भला करे भगवान ॥
तुम करते रखवाली मेरी, कहीं भटक न जाऊं ।
पैनी दृष्टि बनी तुम्हारी, भला करे भगवान ॥
अंतर मैल भरी जो मेरे, साफ उसे हो करते ।
मेरा मैल हो लेते आपुन, भला करे भगवान ॥
तुम सम नहीं कोई उपकारी, हर दम सेवा करते ।
नाहीं थकते नहीं अघाते, भला करे भगवान ॥
मैं तेरा उपकार हूँ मानत, करत प्रणाम तुम्हें हूँ ।
रक्षा मेरी करते रहता, भला करे भगवान ॥
तीर्थ शिवोम् हे प्यारे निन्दक, तुम सम दूजा नाहीं ।
अपना अहित करत हित जग का, भला करे भगवान ॥

(170)

उद्धोधन- राग - भैरवी ताल - केहरवा

मन में छुपा जो कुछ भी, भगवान जानता है ।
है जीव को पता न, मन की ही मानता है ॥
जाना कहां कहां किधर को, न जीव जाने इसको ।
प्रारब्ध जो लिखा है, भगवान जानता है ॥
आया कहां किधर से, क्या जीव जाने इसको ।
इस बात को तो केवल, भगवान जानता है, ॥
क्यों आया किसलिए है, नादान जीव इससे ।
यह भेद तो सभी ही, भगवान जानता है ॥
अच्छा है क्या बुरा है, न अक्ल काम देती ।
अच्छा बुरा सभी कुछ, भगवान जानता है ॥
शिवओम् है शरण में, मालिक मेरे प्रभुजी ।
क्या हाल होगा मेरा, भगवान जानता है ॥

(171)

उद्धोधन राग - भैरवी ताल - केहरवा

गाड़ियां ही गाड़ियां है, गाड़ियां चहुं ओर है ।
जिधर देखो गाड़ियां बस, गाड़ियों का शोर है ॥
आदमी कोई न दीखे, दीखती बस गाड़ियां ।
यह है युग विज्ञान का, बस गाड़ियों का जोर है ॥
जीव है आधीन इनके, चल तनिक पाता नहीं ।
उस को चाहिए गाड़ियां ! बस गाड़ियां हर ओर है ॥
इस शोर में है आत्मा की, दब गई आवाज भी ।
बस एक ही तो शोर है, बस गाड़ियों का शोर है ॥
गाड़ियों के साथ ही है, मन भी चंचल हो गया ।
मन में भी है गाड़ियां, बस गाड़ियों का शोर है ॥
नीली पीली गाड़ियां है, छोटी मोटी गाड़ियां ।
लम्बी ऊंची गाड़ियां, बस गाड़ियों का जोर है ॥
अब खड़ा शिवओम् आकर, है किनारे सड़क के ।
देख के हैरान है वह, गाड़ियों का जोर है ॥

(172)

उद्धोधन- राग - भीम पलास ताल - केहरवा

जा की मरी वासना अन्तर, भक्ति का अधिकारी ।
मनवा मेरा जंजाल कटा सब, गई कल्पना सारी ॥
जब तक अन्तर्मुखता नाहीं, भक्ति कबहूँ न होवे ।
मनवा चंचल रहे जगत में, बनी रहे लाचारी ॥
जा की प्रबल वासना अन्तर, करत उपद्रव मनवा ।
करत वासना प्रेरित मन को, होत है अत्याचारी ॥
मरे वासना मरे है मनवा, जीव तभी सुख पावे ।
भक्ति करे राम सुख भोगे, होत नहीं खवारी ॥
तीर्थ शिवोम् राम ही राखा, राम करे प्रतिपाला ।
राम नाम संग मनवा जोड़े, कट जाए विपदा सारी ॥

(173)

उद्धोधन - राग - जोगिया ताल - धुमाली

नंगा होत नहीं क्यों भाई, घूमत कपड़े क्यों पहने ।
मन में संचित कर्म लपेटे, चला जगत में क्यों रहने ॥
लिया सजाए तन है अपना, कर्म विकार विचार सभी ।
जेवर कर्म के हैं क्यों पहने, देत उतार नहीं गहने ॥
मनवा तो चंचल है तेरा, रहत भटकता यहां वहां ।
चंचलता क्यों रोकत नाहीं, देत है नदिया क्यों बहने ॥
दुख है देवत कपड़े तोहे, जिन्हें लपेटे फिरता है ।
यह तो रूप तेरा न अपना, कष्ट पड़त तोहे सहने ॥
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, काहे जग में उलझा तू ।
मनवा निर्मल कर ले अपना, आए संत तुझे कहने ॥

(174)

उद्धोधन- राग - आसावरी ताल - धुमाली

गंग द्वार पर आकर मनवा, जइयो नहीं पिआसा रे ।
कुण्ड भरे अमृत के सन्मुख, तू क्यों रहत उदासा रे ॥
अमृत चखे तो मनवा शीतल, लोभ क्रोध जाए मन सों ।
अन्तर में आनन्द समाए, भागे भूख पिपासा रे ॥
या अमृत को लेवन ताई, कीमत लागे कुछ नाहीं ।
भर भर पी लो, जितना चाहो, पूरण मन की आशा रे ॥
हिरदय निर्मल बने पिए या, टूटे चक्र - करम तेरा ।
जनम मरन से पिण्ड भी छूटे, जाय जग की त्रासा रे ॥
तीर्थ शिवोम् करत संकोचा, काहे पीवत रस नाहीं ।
बहिर अंधेरा छूटे जग का, अन्तर में परकाशा रे ॥

(175)

उद्धोधन- राग - मुलतानी ताल - केहरवा

जिसकी जली वासनाएं सब, मन में जितनी जो भी ।
सदा रहे संतुष्ट हृदय में, बुद्धि थिर है उसकी ही ॥
होत नहीं उद्वेग हृदय में, सुख चाहे दुख हो उसको ।
वीत राग भय क्रोध सभी ही, बुद्धि थिर है उसकी ही ॥
शुभाशुभ जो प्राप्त उसे हो, हर्ष करे न शोक सहे ।
द्वेष बुद्धि से रहे नयारा, बुद्धि थिर है उसकी ही ॥
जैसे कल्लुआ अंग समेटे, तैसे वह भी इन्द्रिन को ।
लेत हटाए विषयन से है, बुद्धि थिर है उसकी ही ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, शरण तिहारी पड़ा हुआ ।
जा पर तुमरी किरपा होवे, बुद्धि थिर है उसकी ही ॥

(176)

उद्धोधन- राग - आसावरी ताल - केहरवा

काहे करत दिखावा रे, जानन योग है दूजा ।
क्यों विरथा समय गवावें, लग जानन जग से दूजा ॥
तेरा लक्ष न पूजा पतरी, नाहीं है देह जलाना ।
केवल यह साधन उसका, खोजत क्यों नाहीं दूजा ॥
माया भ्रम होन न देवे, है दूर करन मजबूरी ।
तेरा लक्ष तो एक प्रभु है, वह ही है जग से दूजा ॥
माया बीच पड़ा है जब लौ, उलझा तू जग माहीं ।
माया दूर, हटे मन परदा, पा जाए तू दूजा ॥
अन्तर ही में प्रभु विराजे, तू बाहर खोजत फिरता ।
अन्तर माहीं झांक जरा तू, मिलत नहीं क्यों दूजा ॥
शिवओम् समझ ले भाई, साधन का रस्ता टेढ़ा ।
हुशियार रहे न जब तक, पा जाए नाहीं दूजा ॥

(177)

उद्धोधन-राग- माण्ड ताल - त्रिताल

मनवा सुन तू मोरी बात ।
सुख दुख अपयश सहन करे तू, सहवे सब ही बात ॥
मन को काबू करके राखो, चंचल जग न होवे ।
ढीले बंधन हों सब तेरे, निर्मल मन हो जात ॥
राम शरण सुख का है दाता, ताही मन को दीजो ।
राम शरण सगले दुःख नाठे, कर्म करत न घात ॥
संत चरण की सेवा जावे राखो, संत बड़े किरपालू ।
बेड़ी संग लोहा तिर जावे, पाप सकल कट जात ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, काहे दुख भोगत है ।
जग तो दुख का देवनहारा, पाप ही कर्म कमात ॥

(178)

उद्धोधन -राग - धानी ताल - केहरवा

जागो पंथी जागो जागो, अब तो जागो जागो ।
रैन बिहानी सोते सोते, सुध न कोई तन की ।
जाना दूर बटोही तूने, अब तो जागो जागो ॥
राम भजन में लागो अब तो, होत वही कल्याना ।
राम भजन बिन विरथा जीवन, अब तो जागो जागो ॥
निद्रा मोह पड़ा तू काहे, होत मोह जग बंधन ।
राग द्वेष को दूर करो तुम, अब तो जागो जागो ॥
तीर्थ शिवोम् हे भोले पंथी, काहे सोय रहा है ।
सोवत सोवत जीवन बीता, अब तो जागो जागो ॥

(179)

उद्धोधन - राग छायानट ताल - केहरवा

पाया देह भजन न कीना, विरथा जीवन बीता ।
विषय वासना ही लिपटाना, भोगन जीवन बीता ॥
भोग लोभ में ऐसा रम्या, बिसरी सुध बुध सारी ।
कारज का तो होश न आया, जग ही जीवन बीता ॥
अन्तर मैला, बाहर मैला, मैल ही किए विचारा ।
मैल ही खाना, मैल ही रहना, मैल ही जीवन बीता ॥
भजन नहीं, कैसे हो निर्मल, धोवो मन कितना भी ।
टूटे माया राम भजन से, राम बिना ही बीता ॥
तीर्थ शिवोम उमरिया बीती, न कुछ कर्म कमाया ।
अवसर एक प्रभु ने दीना, वह भी विरथा बीता ॥

(180)

उद्धोधन-राग - देसकार ताल - केहरवा

भाग भाग मैं भागत हारी, पर जग हाथ न आया ।
दो अंगुल वह दूर सदा ही, मैं विश्राम न पाया ॥
दौड़ लगाती जगत मिलन को, जगत समीपे जाती ।
जगत हेत श्रम बहुत उठाया, पर कछु हाथ न आया ॥
कैसी मूरख अबला हूं मैं, जो जग माहीं लागी ।
जगत सदा ही दिखत सुहाना, पर वो किसे न पाया ॥
यह जग छोड़त जीव विलखता, जात जगत को त्यागे ।
एक यही परिणाम है पाया, नहीं जगत है पाया ॥
तीर्थ शिवोम् हे मूरख नारी, अब भी संभल जरा तू ।
जग के पाछे भटकत काहे, यह तो छाया माया ॥

(181)

उद्धोधन -राग - मिश्र पीलू काफी ताल - धुमाली

खोजत फिरा शिवोम् जगत में, पता न तेरा पाया ।
मिला तो मिला तू अंतर माहीं, विरथा समय गवाया ॥
जग के कण कण में तू व्यापक, आवे नजर कहीं न ।
जब तक देखे अन्तर नाहीं, बाहर किसे न पाया ॥
जब तक कृपा है सद्गुरु नाहीं, दीखत कहीं भी नाहीं ।
अंदर बाहर दीखे तब ही, सद्गुरु शरणीं आया ॥
माया डूबा है जग सारा, अंधा बना बेचारा ।
अपना आप न सूझे उसको, तम में ही दुख पाया ॥
नयनन हैं पर देखत नाहीं, बन्द किए जग बैठा ।
जब तक नयनां खोले नाहीं, अंत किसे न पाया ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे मन मूरख, काहे नयन न खोले ।
अंदर बाहर पीय बसत है, जिन खोजा तिन पाया ॥

(182)

उद्धोधन-राग - भूपाली तोड़ी ताल - रूपक

कर तो मैं कुछ भी न पाऊं, मानता मन है नाहीं ।
दे ही जाता झांसा मुझको, जग से हटता है नाहीं ॥
गोशाये दुनिया में रहता, है वह हरदम घूमता ।
चैन से बैठे नहीं वह, बात सुनता है नहीं ॥
कोशिशें कर कर मैं हारी, पर मना पायी नहीं ।
अब निडर वह हो गया है, काबू आता है नहीं ॥
क्या करें जो मान जाए, किस को पूछे जा के हम ।
कौन यह रस्ता बताए, वह समझता है नहीं ॥
तीर्थ ऐ शिवओम् मुर्शिद ही बताए रास्ता ।
दूसरा दुनिया में कोई, नजर आता है नहीं ॥

(183)

उद्धोधन - राग - मिश्र काफी ताल-धुमाली

राम भजन कर भोले मनवा, नाम परम हितकारी राम ।
नीका केवल एक राम है, दूजा नहीं कोई काम ॥
घट घट वासी सकल नियन्ता, अजर अमर अविनाशी ।
दीन दयाला, परम कृपालु, नाम जपन एको काम ॥
जा जन चख्या राम नाम है, मन आनन्द मनावे ।
छोड़ जगत सब माया काया, बैठत राम के ही धाम ॥
राम नाम जा रंग चढ़े है, रता रहे दिन राती ।
अंग अंग मनवा है रंग्या, रंग्या वा का सगला चाम ॥
तीर्थ शिवोम् अनोखा रस यह, जिन चाखा तिन जाना ।
मन वाणी इन्द्रिन हों मीठी, मीठा लागे प्यारा राम ॥

(184)

उद्धोधन-राग- नन्द ताल - केहरवा

लागत लागत है रंग लागत ।
धीरे धीरे मेरे भाई, प्रभु प्रेम मन में है पागत ।
सोया मन है जग भोगों में, बना दिवाना विषयन का वह ।
धीरे धीरे करवट लेता, सोया मनवा फिर है जागत ॥
धीरज राखो मन अपने में, प्रभु प्रेम का लम्बा मारग ।
कठिन चढ़ाई ऊंचा घर है, जाना नहीं कहीं तुम थाकत ॥
प्रभु है दीन दयाल अनन्ता, पारावार नहीं है कुछ भी ।
ता का प्रेम अनोखा देखा, भक्तन की पत वह है राखत ॥
मन को राखो वश अपने में, चंचल न बन जाए जग में ।
हरदम आस प्रभु की मन में, प्रभु तुम्हारा रस्ता ताकत ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा हो मो पर लगा रहे तुमरे ताई ।
ध्यान तुम्हारा रहे हृदय में, और नहीं मैं तुमसे मांगत ॥

(185)

उद्धोधन-राग - देस ताल - भजनी ठेका

झूठम झूठ सकल संसारा, झूठा घर परिवारा ।
झूठे विषयन काहे लागा, फूलत काय गंवारा ॥
काया झूठी, माया झूठी, झूठा खेल सभी यह ।
झूठा मनवा नृत्य करत है, झूठ सभी व्यवहारा ॥
झूठे जल आकाश यह पृथ्वी, झूठे दृश्य बने हैं ।
झूठे मात, पिता सुत भगिनी, झूठा यह परिवारा ॥
झूठे क्यों उलझे है भाई, फल भी मिलत है झूठा ।
सत्य नाम का सिमरन कर तू, करत है जो निस्तारा ॥
तीर्थ शिवोम् हे झूठे मनवा, साचा काहे बनत है ।
साचा करे तो साचा होए, पा जाए सचियारा ॥

(186)

उद्धोधन-राग - रागेश्री ताल - केहरवा

जब तक जिये, सदा दुख भोगा, मर के चैन न पाया ।
कैसा खेल रचाया प्रभुजी, जीव रहा भरमाया ॥
कैसी अजब बनाई कुदरत, समझ किसे न आवे ।
समझन जावे इसको जो भी, वह उलटे भरमाया ॥
पुस्तक पढे कमावे जोगा, तीरथ जाये नहावे ।
अंतर का मल दूर किए बिन, जान नहीं कुछ पाया ॥
तेरी कृपा न होवे जब तक, अंतर मैल न जावे ।
जिस पर कृपा करे तू प्रियतम, अंत तेरा उस पाया ॥
जीव बेचारा है अंजाना, फिरता भ्रम में डोले ।
पुरुषारथ की डोर पकड़कर, घर न तेरे आया ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा प्रभु मोरे, मैं पापी अंजाना ।
अपनी मेहर करो करपालु, द्वारे तुमरे आया ॥

(187)

उद्धोधन राग - पहाड़ी ताल - केहरवा

भूली फिरे जगत के माहीं, नहीं आतम का ज्ञान ।
पावे दुख घनेरा जग में, पी घर से अन्जान ॥
क्यों तू सोई भोग विषय में, मिथ्या सकल पसारा ।
क्यों ढूँढे न प्रियतम को तू, बना है क्यों बे भान ॥
जग है धोका रहा लुभाय, माया खेल है सब ही ।
क्यों उलझी तू इसमें मूरख, इसको साचा जान ॥
मैं समझाए रहत हूं तोये, काहे जनम गवावे ।
माया काया मन भरमाया, क्यों डूबे नादान ॥
अब भी कुछ है बिगड़ा नाहीं, प्रभु की शरण गहे तू ।
छूटे बंधन सकल जगत के, कर अपना कल्याण ॥
तीर्थ शिवोम् सुनो हे सजनी, प्रभु ही सुख का दाता ।
जो तू लेवे मारग उसका, दूर होत अज्ञान ॥

(188)

उद्धोधन-राग - देवगिरी बिलावल ताल - केहरवा

प्रेम प्रकट जा हिरदय नाहीं ।
ता हिरदय है शिला समाना, वा में है सुख नाहीं ॥
जा हिरदय में प्रेम बसत है, वहीं आनन्द विराजे ।
राग द्वेष न, समता ता में, आशा तृष्णा नाहीं ॥
प्रेम की महिमा प्रेमी जाने, जग तो है अनजाना ।
प्रेमी मस्त सदा मन अंदर, वह विषयन में नाहीं ॥
प्रेमी भक्त पियारे प्रभु को, ता पर करत कृपा वह ।
अंग संग हरदम वह रहता, छोड़त पलभर नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् प्रेम रंग राता, हिरदय प्रेम रंगीला ।
प्रेम बिना सूझे न कुछ भी, प्रेम बिना धन नाहीं ॥

(189)

उद्धोधन-राग - भीम पलास ताल - केहरवा

सजनी पिया मिलन का तेरे, चाव भरा मन माहीं ।
फिर क्यों चादर ओढ़ के सोई, करत भजन क्यों नाहीं ॥
पी तो बैठा राह निहारे, करे प्रतीक्षा तेरी ।
फिर क्यों बनी उदास पिया सों, जावत क्यों तू नाहीं ॥
तुझ बिन सूनी सेज पिया की, जाए तू श्रृंगारे ।
बन्द किवाड़ किए तू सोई, क्या सोचें मन माहीं ॥
सजनी पिया उदास तेरे बिन, तू उदास बिन पी के ।
फिर क्यों मिलन होत है नाहीं, बाधक कोई नाहीं ॥
रही उठाए तोहे सखियां, हार श्रृंगार तू कर ले ।
गले लगाए तोहे सजना, जहां है दूसर नाहीं ॥
तीर्थ शिवोम् सुहाग है तेरा, जागा तुझे बुलाए ।
हाथ फैलाए आगे बढ़कर, आदर करत क्यों नाहीं ॥

(190)

उद्धोधन-राग- पीलू ताल - केहरवा

प्रभु देखत जगत तमाशा ।
माया रचकर अपनी अनुपम, सबको करत हताशा ॥
नाम दयामय जग में उसका, ता में कृपा न कोई ।
जैसा कर्म करेगा प्राणी, वैसी करत है आशा ॥
अच्छे कर्म यदि वह करता, गति है उत्तम पाता ।
मेवा दान मिठाई देवे, पावे वही बताशा ॥
माया का यह खेल रचाया, देखत प्रभु निरन्तर ।
ताका मन हो नहीं प्रभावित, आशा नहीं निराशा ॥
क्यों माया है प्रभु रचाई, करे दुःखी जीवों को ।
अपनी अपनी करनी का फल, मन में सुख की आशा ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, बंधन माया टूटे ।
हो उपराम जगत भोगों से, छूटे जग की आशा ।

(191)

उद्धोधन- राग - शुद्ध कल्याण ताल केहरवा

सूरज उगता धूप निकलती, शाम को सब छुप जाता ।
ऐसे जग का सपन सुहाना, दिखता और छुप जाता ॥
रात अन्धेरी होत भयानक, ता में सभी समाए ।
हुआ उजाला भग तम जाए, ता में सब दिख जाता ॥
काल चक्र का खेल है सारा, उपजे कुछ मुरझाए ।
जग परिवर्तित होता रहता, जीव उलझ है जाता ॥
जैसे मन में भाव प्रकट हो, वैसे जग है दीखता ।
अच्छा बुरा भाव सब अपना, जग वैसा बन जाता ॥
अपना मन जो निर्मल होवे, दीखे चेतन सगला ।
नाम रूप जड़ गौण होत है, दूर है बंधन जाता ॥
तीर्थ शिवोम् यह माया नगरी, कौतुक करे कराए ।
निर्मल मनवा माया टूटे, बंधन मुक्त कहाता ॥

(192)

उद्धोधन-राग - भटियार ताल - धुमाली

आशा करत जगत से फिर फिर, होत निराश है भारी ।
फिर भी आशा नाहीं छोड़त, काहे बुद्धि मारी ॥
तृष्णा कभी न पूरण होती, लोभ करे भोगन का ।
जीव न सुख को पाता कबहूँ, हारी सष्टि सारी ॥
प्रभु बनाया ऐसा जग है, आशा तृष्णा सबको ।
हर कोई इस ही में उलझा, हर कोई दुखियारी ॥
क्षीण होत है जग यह क्षण में, बदले रूप निरन्तर ।
पर है चंचल करता रहता, सबको है अतिभारी ॥
चंचल जग है चंचल मनवा, थिरता कैसे पाये ।
गुरूकृपा से हटे है मनवा बच जाए विपदा सारी ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा मो कीजो, थिरत पाऊँ मै भी ।
जगत किया है बहुत दुखी ही, होन न देत सुखारी ॥

(193)

उद्धोधन-राग - भैरवी ताल - केहरवा

अभिमान में फूला फिरे, पर कर तो कुछ सकता नहीं ।
सब कुछ प्रभु के हाथ है, कुछ भी बना सकता नहीं ॥
इच्छा करे जग भोग की, मिलता जो किस्मत में लिखा ।
फिर क्यों वृथा भागे फिरे, किसमत बिना मिलता नहीं ॥
जिसने बनाया जगत यह, वह ही करे प्रतिपाल है ।
चिन्ता तुझे किस बात की, चिन्ता से कुछ बनता नहीं ॥
तू है बना चंचल जगत में, भागता फिरता वृथा ।
कुछ राम भज ले बैठकर, तू बैठता क्यों है नहीं ॥
है सुख मिले भोगों में क्या, वह तो बना जंजाल है ।
सुख को दिखाय, देत दुख, सच्चा तो सुख वह है नहीं ॥
अब भी समझ जा समझ जा, जग यह तो माया खेल है ।
शिवओम् है समझा रहा, पर समझता तू है नहीं ॥

(194)

उद्धोधन-राग - कोमल आसावरी ताल - केहरवा

सब जग सोय रह्या माया में ।
आतम ज्ञान न चीन्हे कोई, भटक रह्या काया में ॥
यह जग सपने लटक रह्या, है दीखे और भरमावे ।
सपना तो है केवल सपना, उलझा वह छाया में ॥
काया छाया मन भरमाया, जागन किसे न देवे ।
या सोये या सपने देखे, बना मस्त माया में ॥
सद्गुरु देव कृपा जो होवे, तो ही सोना टूटे ।
छिन में आतम ज्ञान प्रकाशित, नहीं डूबत माया में ॥
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, सोना मेरा छूटे ।
सोय सोय कर उमर गुजारी, डूब रहा माया में ॥

(195)

उद्धोधन- राग यमन कल्याण ताल - केहरवा

सुमिरन नहीं जो कीना तूने, फिर तूने क्या कीना रे ।
लगा रहे विषयन के माहीं, बीता जाय है जीना रे ॥
चोरी करे पहाड़ की नाई, तिल भर दान में दीना रे ।
कर्म कुकर्म करे बिन सोचे, बुद्धि साथ न दीना रे ॥
भवन बनाए बाग लगाए, कंकर माटी चूना रे ।
परमारथ का ध्यान न कीना, हाय तू क्या कीना रे ॥
अंत समय जब सिर पर आवे, सिमरन में मन दीना रे ।
फिर तो सिमरन होवे नाहीं, मन चंचलता लीना रे ॥
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, माया घर क्यों कीना रे ।
जग मे थिरता है को नाही, भोगो में रस लीना रे ॥

(196)

उद्धोधन-राग - मिश्र तोड़ी तालं कैहरवा

मनवा अब तू क्यों पछताए ।
जनम अकारथ बीत गयो है, ता ते है दुख पाए ॥
तू भोगों में ऐसा उलझा, भला बुरा न देखे ।
अब जब समय जान का आया, सिर धुन धुन पछताए ॥
नजर बचाकर जग की तूने, कर्म बुरे ही कीने ।
पर तू सका न छुपा प्रभु से, बिन देखे, दिख जाए ॥
दुखियों को दुख तूने दीना, जग का हित न सोचा ।
चाहत सुख की तू लिपटाए, विषयों में भरमाए ॥
गुरु सेवा कुछ हो पाई न, जीवन व्यर्थ गवाया ।
अब तू क्यों पछताय रहा है, हाथ कछु नहीं आए ॥
तीर्थ शिवोम् समझ ले मनवा, कर्मों की गति न्यारी ।
जा तू करे, ताही फल पावे, राम ही तुझे बचाए ॥

(197)

उद्धोधन - राग - खमाज ताल - धुमाली

अहंकार और जगत पिपासा, दोनों दुख का कारन हैं ।
रहत घुमावत माया माहीं, यह ही कारन जारन हैं ॥
त्यागत जीव जभी यह दोनों, सुख पाता वह मन में है ।
अनंद मनाए, चैन से सोए, न यह कारन मारन हैं ॥
काम क्रोध हंकार उपाए, जगत पिपासा आसक्ति ।
जब यह दोनों नाहीं मन में, वह मन कारन तारन है ॥
तीर्थ शिवोम् हे भोले मनवा, गर्व छोड़ और तृष्णा को ।
जब मनवा हो निर्मल तेरा, तो मन बंधन काढ़न है ॥

(198)

उद्धोधन - राग मिश्रपीलू ताल - भजनी ठेका

जगत भोग में लाग रहा तू, संग्रह करत ही जात रहा ।
यह न सोचे भोगन मिथ्या, पर भागा ही जात रहा ॥
धन जोड़न की इच्छा जागी, कैसे मिले कहीं कुछ भी ।
पर धन, तो यह छाया जैसा, समझ नहीं तू पात रहा ॥
मन को मोड़े जगत विषय से, तब अन्तर सुख पाएगा ।
पर तू लागा बहिर विषय में, अन्तर क्यों न जात रहा ॥
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, भेद तू जाने क्यों नाहीं ।
भोगन विषयन बाधा भारी, ता ते सुख न पात रहा ॥

(199)

उद्धोधन - राग - गौड़ सारंग ताल - केहरवा

मनवा गगन में उड़ता जाए, तन भी साथ ही जाए ।
मन तन ऐसा साथ बना है, साथ निभे है जाए ॥
जब मनवा चंचल है होता, चंचल तन भी साथे ।
मन थिर है, तो थिर है तन भी, थिरता सुख है पाए ॥
जो चाहे तू तन की थिरता, मन की थिरता पहिले ।
मन थिर तो कठिनाई कछु न, न ही जग भरमाए ॥
चंचल मनवा बैठत नाहीं, जग को नाच नचाए ।
दसों दिशाएं घूमत फिरता, न ही वह सुख पाए ॥
तीर्थ शिवोम् हे चंचल मनवा, थिरता धारे क्यों न ।
राम मिलन थिरता से होता, मन आनन्द मनाए ॥

(200)

उद्धोधन - राग भूप कल्याण ताल- दीपचन्दी

आदमी तो न बना मैं, पर कबूतर बन गया ।
आदमी बनना है मुश्किल, क्या से क्या मैं बन गया ॥
आदमी ऐसे जहां में, पूंछ ही बस है नहीं ।
आदमी के रूप में मैं, जानवर ही बन गया ॥
खाना पीना ऐश करना, यह ही मेरा काम है ।
ढोर पंछी सब करें यह, फर्क क्या है रह गया ॥
तुम भी सोचो ढोर हो, या आदमी हो, क्या हो तुम ।
अपनी हालत मैं ही जानूं, मैं कबूतर बन गया ॥
ढोर पंछी आदमी से भी, तो बेहतर हैं बने ।
आदमी स्वारथ का पुतला, जानवर ही बन गया ॥
तीर्थ हे शिवओम् अब मैं, क्या कहूं मेरे प्रभु ।
तू बनाया आदमी, मैं तो कबूतर बन गया ॥

(201)

उद्धोधन - राग - भीम पलास ताल - केहरवा

होत दीवाली अन्तर माहीं, रही भगाए तम है ।
जीव रहा तम ही फैलाए, छोड़त नाहीं गम है ॥
प्रतिबिम्ब बाहर दीवाली, अन्तर दीवाली का ।
करे प्रकाशित तन मन सारा, यही दीवाली बम है ॥
बाहर दीप जलाओ कितने, अन्तर नहीं उजाला ।
अन्तर दीप जले न जब तक, हुई दीवाली कम है ॥
अन्तर्जोत जगाओ प्रभुजी, अन्तर करो उजाला ।
अन्तर हो दीवाली मेरे, कृपा यही क्या कम है ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, शरणी आन पड़ी मैं ।
रहे दीवाली नित्य निरन्तर, प्रेम चरण हरदम है ॥

(202)

गजल-राग - छायानट ताल - दीपचन्दी

दिल का जाला साफ हो, मुश्किल प्रभु मिलना नहीं ।
तम हो कीचड़ घर में हो, फिर पुष्प का खिलना नहीं ॥
मन में न हो प्रेम तेरे, आश क्यों भगवान की ।
प्रेम जो मन में नहीं, भगवान का मिलना नहीं ॥
मन में तेरे जो हैं यादें, जम के बैठी खूब रही।
प्रेम जो मन में नहीं, फिर उनका भी हिलना नहीं ॥
बर्फ तो अन्दर पड़ी है, कब की जाने कब की है ।
प्रेम पिघलाए है उसको, प्रेम बिन गलना नहीं ॥
तू जला दे वासनाएं, मन में तेरे जो भी हो ।
प्रेम तेरे मन नहीं, तो उनका भी जलना नहीं ॥
तीर्थ हे शिवओम् सुन, तू मन में पैदा प्रेम कर ।
प्रेम ही से प्रेम बढ़ता, प्रेम न फलना नहीं ॥

(203)

उद्धोधन - राग - धनाश्री ताल - दादरा

देखि देखि भावना बड़प्पन, राग द्वेष मैं जग का ।
उब गया मैं रहा निहारत, यही तमाशा जग का ॥
द्रोह क्रोध मद लोभ ग्रसित मैं, शिथिल इन्द्रियन मोरी ।
थक हारा मैं घूमत घूमत, अन्त न पाया जग का ॥
मैं न भक्त, नहीं मैं ज्ञानी, न सेवक ही प्रभु का ।
जो जो कर्म किये हैं मैंने, कसा है बंधन जग का ॥
अब तो पड़ा रहूं गुमनामी, सिमरन करूं निरन्तर ।
या में ही सुख दीखत मोहे, छोड़ बखेड़ा जग का ॥
क्या लेना, क्या देना मोहे, चंचलता सब कारन ।
एक सहारा राम रहे बस, छूटत बंधन है जग का ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, कृपा यही हो मो पर ।
पड़ा रहूं बस एक जगह पर, सोचूं न कुछ जग का ॥

(204)

उद्धोधन - राग - दरबारी कानड़ा ताल - दादरा

प्रभु ही सारा जगत बना है, कहां चढ़ाऊं पूजा ।
और न कोई दीखत मोहे, कहीं मिलत न दूजा ॥
मन ही रूप धरे यह सारे, मन के खेल निराले ।
मन ही बने पुजारी फिरता, मन ही करता पूजा ॥
जीव बेचारा अधर में लटका, समझ नहीं कछु पावे ।
किसकी भगती, कैसा साधन, कहां चढ़ाए पूजा ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, तुम ही राह दिखाओ ।
मैं न जान सकूं क्या करना, काय करूं मैं पूजा ॥

(205)

उद्धोधन - राग - खमाज ताल - केहरवा

नाचत गावत मन बहलावत, पूजा बहुत कराए ।
यह तो काम न आए कुछ भी, हरि दर्शन न पाए ॥
राम न रीझे, जप तप कीजे, न ही ध्यान जमाए ।
जब लौं प्रेम हृदय में नाहीं, वह तो रीझ न पाए ॥
जब लगि गर्व धरो है मन में, मन निर्मलता नाहीं ।
निकले गर्व प्रेम प्रगटावे, राह प्रियतम का पाए ॥
साधन एक हरि किरपा ही, बाकी सकल पसारा ।
बिन किरपा के मिलता नाहीं, मन में प्रेम जगाए ॥
तीर्थ शिवोम् भजन कर मनवा, प्रियतम तेरा रीझे ।
प्रभु किरपा से कारज सिद्धि, दूविधा दूर भगाए ॥

(206)

उद्धोधन - राग बिलावल ताल - केहरवा

काहे माल गले में डाले, काहे तिलक लगावे रे ।
जो मन प्रीत नहीं है तेरे, काहे जग दिखलावे रे ॥
वांचत फिरे तू पोथी पन्ने, तीरथ चक्कर लावे रे ।
भगतन का तो वेष धरे तू, रहया जगत भरमावे रे ॥
नाक पकड़कर सांस चढ़ावे, ज्ञानी पुरुष कहावे रे ।
मरते काशी वास करे तू, मन से अकड़ न जावे रे ॥
करता जगत प्रपंच तू काहे, लाभ न कोई पावे रे ।
मन मलीन अपना है करता, कर्म कुकर्म कमावे रे ॥
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, भक्ति रंग चढ़ा रे तू ।
मन में प्रेम नहीं हो जब लौं, रंग कहां यह पावे रे ॥

(207)

उद्धोधन - राग - मुलतानी ताल - केहरवा

यह तो भगती नहीं कहावे ।
नाम त्याग जग में मन लागा, यह तो भ्रम फैलावे ॥
अन्नदान हरि कथा सुनावे, धोती तिलक लगावे ।
इतने में जो भक्त कहावे, यह तो मन बहलावे ॥
न होवे यह सीस मुंडाए, न यह प्राण चढ़ाए ।
हिरदय प्रेम नहीं जो तेरे, भगती हाट लगावे ॥
मन में गर्व नहीं कछु होई, आशा तृष्णा जारे ।
तड़पत हिरदय प्रभु मिलन को, भगती यही कहावे ॥
पर निन्दा में रस हो नाहीं, हानि लाभ समाना ।
ऐसा हो जब हिरदय पासा, सो ही भक्त लखावे ॥
तीर्थ शिवोम् हे साचे गिरधर, मैं तो नीच अजाना ।
मोहे साची भगती देयो, जो भव पार करावे ॥

(208)

उद्धोधन - राग शुद्ध कल्याण ताल - केहरवा

राम नाम पल भर जो छूटे, मनवा व्याकुल हो जावे ।
ऐसी हालत हो या मन की, ता पर किरपा हो जावे ॥
राम नाम ही लगा रहे जो, मस्त उसी में जो रहता ।
पद निर्वाना पावे वह ही, जगत तमाशा छूट जावे ॥
न मन चंचल, न ही सुख दुख, राम नाम थिर होय रहे ।
ता को मन विकार भी नाहीं, धाम प्रभु के वह जावे ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, मन चरणों में लगा रहे ।
राम नाम हो प्यारा मुझको, मन ताही थिर हो जावे ॥

(209)

उद्धोधन - राग - मिश्र चारूकेशी ताल - केहरवा

विषयन हेतु जनम गवाया, लाभ कमाया कुछ न ।
अब तो जीवन बीत चला है, मन भी निर्मल कुछ न ॥
बीत गए तीनों पन ऐसे, तनवा शिथिल भया है ।
केस सफेदी सिर पर आई, मिला मुझे तो कुछ न ॥
दृष्टी भी अब मन्द हुई है, कमर झुकी सी लागे ।
कंपन गात, पकड़ ली लकड़ी, कानन सुनत भी कुछ न ॥
हरि चरण तज विषयन लागी, कुण्ठित बुद्धि मेरी ।
जग का सार समझ न पाई, जग में सार ही कुछ न ॥
तीर्थ शिवोम् भजन बिन मनवा, क्यों कर छूटे जग से ।
मिथ्या जग ही रही लिपटती, परमारथ तो कुछ न ॥

(210)

पश्चाताप -राग - शिवरंजनी, ताल रूपक

जिन्दगी बेकार में बेकार ही है जा रही ।
जो है गुजरी, सो तो गुजरी, अब क्यों जाया जा रही ॥
नफ्स के पीछे लगा मैं, भागता दुनिया में ही ।
मन की दौलत पर मिली न, क्या कमाया जा रही ॥
जैसे प्रभु के वासते ही, मैं बिताता जिन्दगी ।
चैन अपने मन का पाता, अब तो यूं ही जा रही ॥
वक्ते आखिर सामने जो, अब रहा पछताए मैं ।
मिलने वाला कुछ नहीं अब, क्या करूं अब जा रही ॥
तीर्थ ए शिव ओम् तू बाकी बची कर बन्दगी ।
सुन प्रभु ले अर्ज तेरी, जिन्दगी तो जा रही ॥

(211)

उद्धोधन - राग - भूप ताल - केहरवा

मिलन नहीं प्रीत बिना होई ।
प्रेम संवारे, प्रेम सजाए, मल मल कर धोई ॥
मतवाला न जग में उलझे, चंचलता भी नाही ।
डूबा रहत प्रीत में हरदम, जागे निर्मोही ॥
रहत सदा ही अर्पण उसके, जो होवे सो होवे ।
न कुछ लेना देना जग से, प्रभु मौज होई ॥
पिया बिना नाहीं कुछ सूझत, खावत धावत सोवत ।
लाखों लाख जतन कर हारे, मिला प्रभु न कोई ॥
प्रीत करावे सद्गुरु पी से, दीपक प्रेम जलावे ।
नहीं तो पटक पटक सिर रहता, प्रेम जगा न कोई ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, मैं हूं शरण तिहारी ।
प्रेम की लौ लगाओ अन्दर, तभी चरण रति होई ॥

(212)

उद्धोधन - राग - राग - यमन ताल - केहरवा

जीव भी मानत हार है नाहीं ।
आवागमन रहत है घूमत, थकत तनिक है नाहीं ।
मन की फांस गले नित डारे, समझत मार है नाहीं ।
जन्म मिला अनमोल कृपा से, जानत कीमत नाहीं ।
बना बावरा ऐसा मूर्ख, समझाए वह समझत नाहीं ।
तीर्थ शिवोम् संत समझाए, वो न समझत नाहीं ।

(213)

उद्धोधन - राग - दरबारी कान्हड़ा ताल - केहरवा

तीरथ हैं सब अन्तर माहीं, बाहर क्यों भटकत है ।
मन को तीरथ कर ले भाई, जग में क्यों घूमत है ॥
मन है तेरा बाहर चंचल, तो तू बाहर घूमत है ।
अन्तर्मुख हो मनवा तेरा, अन्तर ही तीरथ है ॥
अन्तर ज्ञान है, अन्तर्चेतन, अन्तर्मन निर्मल हो ।
अन्तर गंगा, जमुना अन्तर, अन्तर परमारथ है ॥
अन्तर साधन, ध्यान है अन्तर, अन्तर मल मल न्हाए ।
अन्तर ही सब मैल उतारे, अन्तर राम बसत है ॥
क्यों न अन्तर्मुख तू होवे, क्यों न जग को छोड़े ।
मन चेतन जब अन्तर होवे, अन्तर आनन्दित है ॥ .
तीर्थ शिवोम् सुनो हे भाई, अन्तर्मुखता पाओ ।
राम श्याम गोविन्द विराजे, अन्तर प्रेम उठत है ॥

(214)

उद्धोधन - राग - गौड़ सारंग ताल- दादर

मैं कहाँ जाऊँ किधर को, सोचत ही यह रहा ।
कौन सा मेरा ठिकाना, खोजता ही यह रहा ॥
जीव यह बेघर बना है, घर को न पहचानता ।
घर में रहता जानता न, डोलता ही यह रहा ॥
क्या अजब यह है तमाशा, खबर घर की ही नहीं ।
सामने ही घर है उसके, देखता ही यह रहा ॥
जब तलक जग में हैं भटके, पा वह घर सकता नहीं ।
घर को आए तो मिले, घर भटकता ही यह रहा ॥
छोड़ दे अब यह भटकना, घर को मुंह को मोड़ ले ।
घर में ही आराम है सब, ढूँढता घर यह रहा ॥
तीर्थ ए शिव ओम् अब तू, चल वतन अपने को ही ।
घर भी मिल जाए वहीं पर, खोजता अब तक रहा ॥

(215)

उद्धोधन - राग- नन्दकेदार ताल - त्रिताल

मुक्त होन की रीत बताऊं ।
शील छमा हो मन में धारन, दूजे मैं संतोख बताऊं ॥
पल पल सिमरो नाम प्रभु का, फिरते सोते खाते गाते ।
मनवा अपना कर लो निर्मल, प्रभु पावन का भेद बताऊं ॥
है प्रभु पहले ही अन्तर में, सर्व निवासा, घट घट वासी ।
मन मलीन ही एक है बाधा, बात तुम्हें मैं यह समझाऊं ॥
प्रभु सखा है, प्रभु ही प्रीतम, वह ही सबका है हितकारी ।
इक पग बढ़ो, बढ़त सौ आगे, रीत प्रभु की मैं बतलाऊं ॥
तीर्थ शिवोम् मेरे हे भाई, मार्ग प्रभु का सुखद अनूठा ।
जग से काढे, बंधन काटे, पल पल सिमरन नाम धिआऊं ॥

(216)

उद्धोधन - राग- बिलावल ताल - धुमाली

चढ़या प्रेम दा रंग है गहरा, भावे मन न जग दा ।
मैं ते दासी होई पिया दी, लैना की भोगां दा ॥
प्रेम प्याला पी मतवाली, हरदम पी ही तक्कां ।
संग पिया का छुटदा नहीं, ऐसा रंग प्रभु दा ॥
जगत फसांदा, पया डरांदा एह जग रूप बखांदा ।
पी दा रंग ते नहीं उतरदा, डर बी न कुझ जग दा ॥
रीझया पी है उप्पर मेरे, मैतू गले लगाया ।
समने अंग होए आनन्दा, शोक गया सब जग दा ॥
हुन ते नाम प्रभुदा ही, जस मेरे मन विच भाय ।
ममता जगदी, आशा जगदी, संग है छुटया जग दा ॥
तीर्थ शिवोम् नही ऐ काचा, चढ़या रंग पिया दा ॥
हुन्दा गहरा पल पल छिन छिन, रंग नहीं ए जग दा ॥

(217)

गज़ल - राग मिश्र शिवरंजनी ताल – दादरा

कहां भटकता फिर रहा हूं प्रभुजी ।

तुझे खोजता ही रहा हूं प्रभुजी ॥

न पाया कहीं पर, न मैं थक ही हारा ।

कहां छुप के बैठे हो, मेरे प्रभुजी ॥

प्रभु, जिसने भेजा तुम्हें इस जहां में ।

वह तेरे ही अन्दर, नहीं इस जहां में ॥

तू भटके है बाहर रहा इस जहां में ।

कहां पर मिलेगा तुम्हारा प्रभुजी ॥

मिलेगा नहीं वह तुझे मन्दिरों में ।

तू खोजे रहा क्यों उसे खण्डरों में ॥

वह मन में है बैठा तुझे वह बुलाए ।

तू अन्दर जो झांके, मिलेगा प्रभुजी ॥

है मन की गुफा में ही आसन प्रभु का ।

कि तन में ही रहना है होता प्रभु का ॥

कि बाहर तो केवल नजारा प्रभु का ।

कि तन में ही मन में ही पाए प्रभुजी ॥

कि दर्शन भगत को वह मन में ही देता ।

कि साधक के तन में क्रियाशील होता ॥

कि अनुभव भी अपना है अन्दर ही देता ।

कृपाशील जब भी है होता प्रभुजी ॥

यह शिवओम करता विनय है प्रभु से ।

वह मांगे दुआ जोड़कर उस प्रभु से ॥

प्रभु की कृपा मांगता है प्रभु से ।

कि देता कृपाशील हो के प्रभु जी ॥

(218)

उद्धोधन -राग - मिश्र सांरग ताल - केहरवा

में चलते चलते चलते, इस जग में आके ठहरा ।
इस जग ने ऐसा घेरा, उतरत हूं गहरा गहरा ॥

दलदल में इसमें फंसा, फंसता चला गया ही ।
हूं निकल मै न पाता, है कड़ा यह जग का पहरा ॥

मैं यत्न करूं कितना भी, पर निकल नहीं हूं पाता ।
हूं करत पुकार बेचारा, जग बन जाता है बहरा ॥

कुछ मारग सुझ न पाए, जग बंधन कैसे टूटे ।
गुरुदेव ही एक सहारा, बाकी सब अंधा बहरा ॥

गुरुदेव निकालो मोहे, है सफर बहुत ही लंबा ।
मैं पड़ा हूं दलदल माही, दलदल है बहुत ही गहरा ॥

अपनी शक्ति कुछ नाहीं, अपने बल निकल न पाता ।
तुम हाथ प्रभु दो अपना, फिर चाहे दलदल गहरा ॥

मैं रहा पुकारत तुमको, प्रभु टेरे सुनो अब मेरी ।
तुम कृपा करो अब ऐसी, उठ जाए जग का पहरा ॥

जग बना है चाहे बहरा, पर विनय सुनो तुम मेरी ।
अब सुनो पुकार दुखी की, जो दलदल माही ठहरा ॥

है करत शिवोम् विनय यह, आया तेरे चरणों में ।
जग बंधन हो छुटकारा, मैं पड़ा हूं जिसमें गहरा ॥

(219)

उद्धोधन-गज़ल - राग - देसी

साकी ने बनाया कैसा है, पुरजोर असर मयखाना यह ।
पीता, जो पीता रह जाए, मुंह लग जाए पैमाना यह ॥
जिसको देखो वह झूम रहा, इक वहदत में, इक मस्ती में ।
यह मय तो चढ़ करके बोले, और कर देती मस्ताना यह ॥
जग जाता छूट तभी ही है, जब दाखिल अन्दर हो जाए ।
पयमाना पकड़ा, दे देती, छुटकारे का परवाना यह ॥
रहता न इल्म कोई बाकी, जो फूट पड़े न अन्दर से ।
सब यादे - खुदा दिखला देती, निर्गुन भी यह बुतखाना यह ॥
शिवओम् हूं हाजिर ऐ साकी, है तलब मुझे भी पीने की ।
तन मन, जग जाए छूट सभी, और खेल खत्म अफसाना यह ॥

(220)

उद्धोधन-गज़ल - राग सिन्धु भैरवी

सम्भलना तो दूर है, मैं तो गिरता ही गया ।
क्या करूं ? मजबूर हूं, मैं फिसलता ही गया ॥
जिसको भी मैंने है थामा, वह भी गिरता ही गया ।
और नीचे ! और नीचे, मैं उतरता ही गया ॥
अब तो आशा भी टूटी, है सहारा कुछ नहीं ।
जिस पह था तकिए को रखा, वो भी हिलता ही गया ॥
यह भी कोई जिन्दगी है, काबू अपने पह नहीं ।
ऊंचा उठने को जो चाहा, मैं तो गड़ता ही गया ॥
तीर्थ ऐ शिवओम् अब तो, संभल जा तू, संभल भी ॥
क्यों बिगाड़े जिंदगानी, क्यों उजड़ता ही गया ॥

गज़ल - राग भीमपलास ताल दादरा

किनारे किनारे चला जा रहा हूं,
 प्रभु को नहीं पर तो मैं पा रहा हूं ।
 नहीं ताब है तो नहीं कोई ताकत,
 इसी से उलझता चला जा रहा हूं ॥

गुजारी उमर मैंने चलते किनारे,
 न साहिल मिला न समंदर में उतरा ।
 रहा चलता मैं इस तरह बेसहारे,
 तड़पता मचलता चला जा रहा हूं ॥

है दुनियां बुलाती रिझाती है मुझको,
 किनारे से मुझको हटाती है दुनियां ।
 हूं दुनियां की जानिब सरकता सरकता,
 मैं गिरता फिसलता चला जा रहा हूँ ॥

यह छाया अंधेरा है ऊपर किनारे,
 कि रस्ता नहीं मुझको है कोई सूझे ।
 सहमता सहमता अंधेरे अंधेरे,
 मैं बढ़ता लुढ़कता चला जा रहा हूं ॥

है मुर्शिद ही कामिल बताए है रस्ता,
 कि कैसे है जाना, किधर को है जाना ।
 तभी छूटे दुनियां, खुदा तब मिले है,
 प्रभु के लिए ही बढ़ जा रहा हूं ॥

न है दूर मंजिल रही सामने ही,
 फरेबे नज़र है बहुत दूर दीखे ।
 हटाने शिवोम् इस फरेबे नज़र को,
 खरामां खरामां बढ़ा जा रहा हूं ॥

प्रकीर्ण – राग- गौड़ सारंग

उमंगों भावनाओं में कभी मैं भी उछलता था ।

बना था चूर यौवन में, सभी आगे अकड़ता था ॥

गई है बीत सब बातें, नहीं अंगो में अब दम है ।

नहीं तो जगत भोगों को, मेरा तो मन उछलता था ॥

मैं देखूँ जब जवानों को, लिए है आश वह जग की ।

बनाए योजनाएं जगत में, भोगों के संचय की ॥

इन्हीं सब ही जवानों को, मेरी हालत में आना है।

नहीं तो मैं भी कम न था, मेरा मन भी मचलता था ॥

हजारों वासनाएं ले के, दुल्हन पी के घर जाती ।

मगर बहुए न सुख पाती, न सुख ही दे भी कुछ पाती ॥

रहा मैं डूबता पल भर, इन्हीं झूठे ख्यालों में ।

जगत की भोग तृप्ति को ही, मैं सब कुछ समझता था ॥

न देखा जगत में कोई, जो पाता सुख ही सुख रहता ।

है लेता शोक चिन्ता को, है रहता दुख ही दुख सहता ॥

मगर फिर भी जगत है छूटता, कोई किसी से न ।

जगत मे मन लगाकर मैं, रहा सपने संजोता था ॥

मेरे जीवन के अनुभव हैं, मेरे जीवन की यादें हैं ।

हजारों कामनाएं हैं, गई बीती मुरादें हैं ॥

इसी खण्डहर को अब जब देखता, मन में ख्याल आता ।

इसी के वास्ते बिगाड़ा, मैं तरसता था ॥

न सिमरन ही प्रभु कीना, न परमारथ सुधारा है ।

गया है बीत जीवन अब, नहीं कुछ भी संवारा है ॥

रहा दुनियां की झंझट में, मैं कुछ भी कर नहीं पाया ।

न ही शिवोम् कुछ समझा, समय यूं ही गंवाता था ॥

(223)

विरह -राग- जोगिआ ताल – धुमाली

मन की भोरी, भ्रमित हुई मैं, अटक गई जग माहीं ।
बिसर गई मैं प्रीतम प्यारा, अब सूझत कछु नाहीं ॥
जग पसारा मिथ्या सब ही, माया खेल रचाया ।
कौन बचाए आकर मोहे, भटकी तम के माहीं ॥
पग पग खाय रही ठोकर हूं, मारग दीखत नाहीं ।
चारो ओर अंधेरा छाया, बहिर, हृदय के माहीं ॥
दीनदयाल हे प्रभु मोरे, अब हूं शरण तिहारी ।
एक सहारा केवल तुमरा, करत पार छिन माहीं ॥
तीर्थ शिवोम् हूं भूली भटकी, करत विनय प्रभु आगे ।
मुझे निकालो, मुझे सम्भालो, अंधकूप तम माहीं ॥

(224)

विरह – राग- श्याम कल्याण ताल- धुमाली

निकलत बात है मुंह से नाहीं ।
हिरदय की हिरदय में राखूं, प्रेम की पीड़ा अन्तर माहीं ।
नयनों से अश्रु बहते हैं, होंठ सिले मुंह खुलत है नाहीं ।
रही सम्भाले प्रभु विरह को, मन के माही अन्तर माहीं ॥
जगत सतावत रहा रुलावत, पीर प्रेम पर समझ न पावत ।
मैं भी कुछ भी नहीं बतावत, राखूं पीड़ा, अन्तर माहीं ॥
अन्तर पीड़ा बढ़त निरंतर, पल पल छिन छिन फलत निरंतर ।
निकलत बाहर घटत निरन्तर, ता राखूं मैं अन्तर माहीं ॥
तीर्थ शिवोम् विरह की पीड़ा, पावन मधुर सुहानी सुन्दर ।
रहत जलत पर होत सुखी मन, निर्मल हिरदय अन्तर माहीं ॥